Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन ज्ञान

[मासिक]

सम्पादक
राकेशरानी

दूरभाष : ५६६६३६
८०१२२१
८०१२११

पता :
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१-नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-५

वार्षिक शुल्क २०)

विदेश में ६ पौंड (विमान से)

४ पौंड : समुद्री डाक से

आजीवन ३०१ रु.

एक प्रति : २ रुपये

सितम्बर—अक्तूबर
सम्वत् २०३६

सम्पादकीय

देव बनने का संकल्प

दीपमाला के दिन दीप जलाओ पर ध्यान रहे जब तक धरती के किसी भी घर में अंधेरा हैं तब तक आप का आंगन ज्योतिर्मय नहीं हो सकता।

आप यदि अपने जीवन से दुःखों को भगाना चाहते हैं तो आप को अपने आसपास से भी दुःखों के मूल कारण को नष्ट करना होगा, अन्यथा आप उस के प्रभाव से बच कर नहीं रह सकते।

प्रकाश को बाहर खोजना बुद्धिमत्ता नहीं वह तो आप के भीतर विद्यमान है अपने अंतर का कूड़ा करकट साफ़ कीजिए। हृदय मंदिर को स्वच्छ कीजिए, फिर आप अपने को ज्योतिर्मय अनुभव कर सकेंगे।

आज अमावस की रात है। गहरा अंधकार चहुं-ओर छाया है। किन्तु यह तम-रात्रि कल के प्रकाश का प्रतीक है। आने वाला कल चन्द्रमा के दर्शन कराएगा-यह विश्वास प्रेरणा बनकर हमें शक्ति प्रदान करता है। सारी चिन्ताएं छोड़ दो। आने वाला दिन आपके लिए स्वागत की मालाएं लिए खड़ा है। तुम किस की प्रतीक्षा कर रहे हो मेरे बन्धु !

उठो और आगे बढ़ो एक-एक पल मूल्यवान है···अपने को उठाने और सजाने का अवसर मत चूको ! तुम देव हो देव बनो। मनुष्य देव बने यही धर्म मार्ग की सबसे बड़ी देन है।

पवित्र दिन-पर्व के उल्लास हास में इसे बांटने का प्रयत्न करो। यह दिन धन संपत्ति ऐश्वर्य के पाने का है। इसलिए संकल्प लो इनके संग्रह का, ऐसा धन कमाओ, जो तुम्हारे काम आ सके। जन्म जन्मान्तर तक तुम्हारे पास आ सके।

शून्य गगन की छाया में सपने देखना तो बहुत आसान है पर उन सपनों में रंग भरना उतना ही कठिन है। तुम इस कठिन काम को करने कासंकल्प लेकर यह प्रकाश पर्व मनाओ।

हमारी मंगल कामनाएं, आशीर्वाद आपके साथ है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडिता राकेशरानी

नई दिल्ली क्षेत्र से

संसद् का चुनाव लड़ेंगी

धर्म निरपेक्षता समाजवाद-सांप्रदायिकता और देश-द्रोही शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष का संकल्प

नई दिल्ली दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेश रानी ने नई दिल्ली क्षेत्र से संसद् का निर्वाचन लड़ने का संकल्प लिया है।

निर्वाचन के लिए दयानन्द संस्थान के सभी पदों से आप ने त्याग पत्र देकर धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सांप्रदायिकता और देशद्रोही शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए धर्म राज्य की स्थापना का संकल्प लिया है।

आप ने अपने एक वक्तव्य में आशा व्यक्त की है कि जब देशभक्ति अपराध बन चुकी हो और देशद्रोहियों को सम्मानित किया जा रहा हो तब मूल दर्शक बनकर बैठना कायरता होगी। अतः बिना धन और साधनों के भी प्रभु के भरोसे हमने जन-जन तक अपनी बात पहुंचाने के लिए चुनाव लड़ने का निश्चय किया है।

सत्य हमारे साथ है,
इसलिए सत्य की निश्चय ही
विजय होगी !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—वेदभिक्षु

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ—

धनुष उठा लो राम !

गांधी ने राम राज्य का नारा लगाया था, किन्तु उस के अनुयायी सैक्यूलर-समाजवाद की लहर में बहकर कहर बरसा कर रावण राज्य बना चुके हैं। दल कोई भी हो गीत गांधी के गाता है पर बात समाजवाद की ही करता है।

ग़रीबी, भूख, बेकारी, रिश्वत, भ्रष्टाचार व्यभिचार और गुंडागर्दी का नंगा नाच रावण राज्य के चिन्ह हैं। किसी की भी लाज सुरक्षित नहीं। अराजकता के कीटाणु, विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूप धारण कर सबको त्रस्त कर रहे हैं।

वस्तुतः गत ३० वर्षों में जो दर्शन उभरा है उसमें तन की सुविधा जुटाने की होड़ में पाप-पुण्य को सर्वथा विस्मृत कर दिया है। राजनेता का लिबास पहन कर लुटेरे जनता को लूट भी रहे हैं और बहका भी रहे हैं जनता की चिन्ता का नारा है पर चिन्ता है सभी को केवल कुर्सी की—धन बटोरने की

इस भटकन ने जिस पीढ़ी को जन्म दिया है उसे सुधारना शायद वर्तमान नेता—व शासकों के बस की बात नहीं। इस के लिए नए दर्शन की, नए मार्ग की आवश्यकता है और यह मार्ग मनु का मार्ग ही हो सकता है। भारत की जनता के प्राणों में जो अमरत्व है उसे जगाने की आवश्यकता है। जन मानस में स्वतंत्रता के लिए जो बलिदान की भावना है उसे उभारने का अवसर है।

कायरों की टोलियां जो बोलियां बोल रही हैं उन से सावधान रहकर भगवान् कृष्ण का उद्बोधन जन मानस में फिर से शक्ति स्त्रोत बन कर भारत को बचा सकता है।

श्री राम···राम-राम···की गूंजती ध्वनि एक ओर से दूसरे छोर तक व्याप्त हैं। तो क्या राम की अनुयायिनी जनता फिर से रावण दल के संहार के लिए धनुष की टंकार नहीं गुंजा सकती।

भारत मां का आर्तनाद सुन कर भी स्वार्थ में लिप्त जनों को मरने दो। पर देशभक्तों से कहता हूं मां के वीर पुत्रों से कहता हूं शिवा, प्रताप, दयानन्द, सुभाष, भगतसिंह, बिस्मिल के वीर वंशजों को पुकारता हूं। इस विश्वास पर कि भारत-मां अभी बांझ नहीं हुयी। ऋषि मुनियों का नाम लेने वाले करोड़ों वीर अभी यहां जीवित हैं।

संगठित हो जाओ, और शत्रु का सामना करो। डर-भय हृदय से निकाल दो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और एक "ओ३म" पताका हाथ में लेकर भारत के गौरव धर्म-संस्कृति और स्वतंत्रता को बचाने का संकल्प लो।

समस्याएं बहुत हैं, धारा भी प्रतिकूल है पर हिम्मत न हारो। विजय सत्य की होगी, हमारी होगी। हम भारत को संसार का सबसे सबल वैभव संपन्न, महान् राष्ट्र बनाना चाहते हैं। हम भारत राष्ट्र में धर्म का राज्य स्थापित करता चाहते हैं। इस धर्म राज्य की घोषणा तो भारत की वर्तमान संसद भी कर रही है जिस पर लिखा है :—

धर्मो रक्षति रक्षितः

यह धर्म राज्य मनु द्वारा निर्दिष्ट मानव मात्र के लिए कल्याणकारी राज्य होगा। इसमें मत-संप्रदाय अपनी कुटिलता से मां के चीर हरण का कुत्सित प्रयास नहीं कर पाएंगे। इसमें सेवा की आड़ में देशद्रोह का पाठ पढ़ाने की अनुमति नहीं होगी। इसमें अल्प संख्यक व बहुसंख्यक का विवाद नहीं होगा, अपितु सभी भारत के नागरिक एक होंगे। उनके नियम, आचरण, व्यवहार एक होंगे। अपनी-अपनी रुचि अनुसार सब को पूजा पाठ की स्वतंत्रता होगी पर किसी को भी अधर्म आचरण नहीं करने दिया जाएगा।

भाइयो और बहनो !

१९४७ तक हमने देश को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष किया था और आज १९७९ में हम भारत को स्वतंत्र, सब भांति संपन्न संसार का सब से शक्तिशाली, महान/धर्म राज्य गणतंत्र बनाने का व्रत लें।

हम ऐयाश, सुरा-सुन्दरी में व्यस्त राष्ट्र का रक्त चूसने वाले नेताओं को शासन तंत्र के पास भी न आने दें। त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, ईश्वर भक्त, बलिदानी भावना रखने वाले व्यक्तियों के हाथ में देश की बागडोर सौंपने के लिए संघर्ष का बिगुल हमने बजा दिया है।

हम अपने जीवन की अंतिम सांसतक इस धर्म युद्ध में लगे रहेंगे। आप को निमंत्रण दे रहा हूं। हमें जीवन दीजिए ताकि देश को जीवन मिल सके।

राम-कृष्ण-ऋषि मुनियों की पवित्र परंपरा मिटाने के लिए असुरों ने सेना सजा ली है। मैं राम-भक्तों से कहता हूं, धनुष बाण उठाओ। कृष्ण के अनुयायियों से कहता हूं, सुदर्शन चक्र संभालो, !

अभी तो चुनाव में आप अपने वोट का प्रयोग करें, पर यह पर्याप्त नहीं होगा। हमें एक लंबा निर्णायक युद्ध लड़ना है। मोर्चे हजारों है, बलिदान लाखों चाहिएं तभी विजय मिलेगी।

देश का भविष्य वीरों के रक्त से लिखा जाता है जिन का लहू अभी पानी नहीं बना, जिन्होंने मां के दूध में धर्म की दीक्षा ली हो वे वीर पुत्र अपना शीश मां के चरणों में चढ़ाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करें।

अन्यथा महानाश की वेगवान आंधी ४०० करोड़ वर्ष पुरानी पंरपरा को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाप्त कर देगी। पर क्या सभी मर चुके हैं या जीवित हैं कहीं भी कोई भी—जो इस आंधी को रोकने के लिए प्राणों की आहुति मुस्करा कर दे सकें।

आप के जीवन की भिक्षा चाहता हूँ—मांगता हूँ।

प्रत्येक प्रान्त की राजधानी से एक प्रतिनिधि संसद के लिए चुनाव लड़े।

यह चुनाव प्रतीकात्मक और आदर्श हो

मुख्य लक्ष्य—

१. समाजवाद-सैक्यूलर वाद का विरोध करना।

२. धर्मराज्य की स्थापना का संकल्प

३. निर्वाचित होने पर कोई वेतन-भत्ता या विशेष सुविधा न लेने की घोषणा

४. नागरिकों तक अपनी बात पहुंचायी जाए। वोट के लिए खुशामद या आग्रह न किया जाए अपितु यह घोषणा की जाए कि—यदि आप हमारे उद्देश्यों से सहमत हों तो हमें वोट दीजिए अन्यथा नहीं।

५. चुनाव घोषणा पत्र शीघ्र ही तैयार किया जा रहा है......मुख्य बातों में परिवर्तन न कर गौण रूप से स्थानीय महत्त्व की बातें बढ़ा सकते हैं।

जो सज्जन आदर्श रूप में अपने-अपने क्षेत्रों से चुनाव लड़ना चाहें वे हमसे संपर्क करें—

कल्पना सत्य होगी

अकेला, बीच सागर के, उठा हुआ तूफान, डगमग नौका, चप्पू भी साथ नहीं, भाग्य के भरोसे खड़ा भगवान् का आशीर्वाद-प्रकाश मांग रहा हूं। निराशा पास नहीं है; लहरें उठ रही हैं, झंझावात बढ़ रहा है, नौका कांप रही है पर फिर भी मैं सबल स्वर में स्वर्णिम भविष्य की योजनाएं बना रहा हूं।

कल्पना को साकार करने का विश्वास मेरी पूंजी है। विजय साकार आएगी ......यह ध्रुव सत्य मेरी शक्ति है......और सच यह है कि कभी एक पल के लिए भी पराजय से मेरा परिचय नहीं हुआ, इसे अपने पूर्व जन्म के पुण्य का फल समझें या कुछ और किन्तु यह तथ्य है कि समय को बदलने का मेरा विश्वास आज पूरे बल से साकार हो उठा है।

आप कुछ भी सोच लें अपने मन में किन्तु मैं सत्य का संबल और ओ३म् की पताका लेकर भंवर में डूबती नैया पर बैठा उस पार पहुंचने के लिए कृत संकल्प हूं।

माया-मोह की छलकती गगरी टूट चुकी है। निराशा निशा को चीर प्रभात की किरण स्वागत में पलक पांवड़े बिछा कर मेरा स्वागत करने को ललक रही है।

उद्दाम कामनाएं लेकर वर्तमान को रौंदता मैं विश्व को नया रूप देने की रेखाएं खींच रहा हूँ। स्वार्थ-द्वेष-घृणा और छलकती वासना मदिरा के घट तोड़ने के लिए हमारे हाथ उठ चुके हैं। पहुंचेंगे उस पार, जहां जीवन स्वर्ग बनेगा......यह कल्पना अब स्वप्न नहीं रहेगी—ऐसा हमारा विश्वास है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंदिरों को स्वच्छ रखें

हमारे सभी मंदिरों का वातावरण शांत, सुखद, और आध्यात्मिक होना चाहिए। उनमें प्रवेश करते हुए मनुष्य को एक ऐसी अनुभूति हो जैसे हम किसी पवित्र स्थल पर आ गए हैं।

गंदगी, दूकानें, कोलाहल, और अशुद्ध वातावरण मन्दिर के नाम पर कलंक हैं। स्कूलों को मंदिरों से विदा कर देना चाहिए। अन्यथा उनके भवनों से भी हमें हाथ धोने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मन्दिरों के अधिकारी अपनी गद्दी बनाए रखने के लिए भले ही उनका स्वार्थहित प्रयोग करें किन्तु वे यह न भूलें कि एक दिन उन्हें सब कुछ छोड़ धरती से विदा होना होगा। फिर किस लिए किए जा रहे हैं यह स्वार्थ पूर्ति के साधन। मन्दिरों को पवित्र बनाओ। पार्टीबाज़ी स्कूल-गन्दगी सब को दूर करो अन्यथा मंदिर शब्द का प्रयोग न करो।

उत्सव ही लक्ष्य है क्या ?

प्रतिवर्ष हम उत्सव करते हैं, कुछ न करने से कुछ भी करना अच्छा है किन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या यह ही हमारा लक्ष्य है क्या ?

प्रतिवर्ष वही घिसे पिटे भाषण, वही वक्ता, वही श्रोता, तालियां और आचरण का अभाव, इस लहर का अन्त आखिर कहां होगा ?

जन मानस का अंधेरा दूर करने की चाह हम ने भुला दी, पाखंडों पर प्रहार का अधिकार हम विस्मृत कर बैठे, क्रांति की अग्नि को बुझा कर क्रांति के गीत गाने में हम लग गए। समय को बदलने के स्थान पर समय से समझौता करना हमने स्वीकार किया, आखिर यह पलायनवाद हमें कैसे विजयश्री के दर्शन कराएगा।

लक्ष्य मिट रहा है, हम अपने में सिमट रहे हैं, जिन्हें मिटाना था वे चहक रहे हैं और हम बहक कर अपनी सनक में कनक के मोह चक्कर में चक्कर खा रहे हैं।

जीवन का दर्शन, प्राणों को गति देने का सामर्थ्य भुला चुका है। पशुता का तांडव वीभत्स स्वरों में अपनी छवि मुखरित कर रहा है और हमारा संकल्प कायरों की भांति मुख छिपा कर अपनी हार को जीत बताना छलना का प्रतीक बन गया है।

क्या कोई उपाय है जो उत्सवों को क्रांति की मशाल का प्रतीक बना यज्ञाग्नि धधका सके। ऐसी अग्नि जिस में आहुति प्राणों की देकर हम नए युग का सौरभ फिर से भूमंडल में फैलाने में समर्थ हों। क्या आप एक क्षण के लिए रुक कर सोचेंगे ?...... ? ? ? □

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरती पर भारत का साम्राज्य स्थापित करें

—अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

१. भारत सरकार के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्री प्रतापचन्द्र चन्द्र ने घोषणा की थी कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का १९५१ से पहले का स्वरूप लाने के लिए संसद् में एक बिल पेश किया जायेगा।

२. कशमीर के मुख्य मन्त्री शेख अब्दुल्ला का कहना है कि अनुच्छेद ३७० हटाया जाये।

३. जब श्री मीनू मसानी अल्प संख्यक आयोग के अध्यक्ष थे, तब जामा मस्जिद के तथाकथित शाही इमाम का कहना था कि अल्पसंख्यक आयोग का अध्यक्ष कोई (सुन्नी) मुसलमान बनाया जाये।

४. मुस्लिम मजलिस (लखनऊ) ने अविभक्त जनता पार्टी को चुनौती दी थी कि चुनाव के समय का वादा पूरा करो, नहीं तो हम सहयोग नहीं करेंगे। वादे ये हैं—(क) उर्दू को दूसरी भाषा घोषित किया जाए। (ख) सरकारी नौकरियों में मुसलमानों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में स्थान दिये जायें।

५. मुस्लिम अंजुमन की मांग है कि पुलिस में मुसलमानों की संख्या बढ़ाई जाये।

६. आजमगढ़ में जॉर्ज फ़र्नांडीस से प्रश्न किया गया था कि वाराणासी में दंगा हुआ, तब तो हिन्दू अधिकारी को नहीं बदला गया। फिर सम्भल में दंगा होने पर मुस्लिम अधिकारी को क्यों हटा दिया गया?

ये और इस प्रकार के अनेक अन्य प्रश्न किए जाते हैं। इन्हें लेकर आन्दोलन किये जाते हैं। प्रदर्शन किये जाते हैं। यह क्यों? इसके लिए कौन उत्तरादायी है?

एक बात तो स्पष्ट है—ऐसी बातें वही लोग करते हैं, जो भारत विभाजक हैं, भारत विभाजन के समर्थक हैं और उसे पुष्ट करना चाहते हैं। ये लोग यह नहीं चाहते कि प्राचीन इतिहास की पुनरावृत्ति हो। अतीत भविष्य में बदले। पराजित भारत पुनः विश्वविजयी हो और कह सके—मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः।

आर्य जाति की इस भावना को ब्राह्मण धर्म (बौद्धों और जैनों ने इसे यही नाम दिया है—ऋषि दयानन्द ने इसे पौराणिक मत का नाम दिया) ने नष्ट किया। अपनी प्रभुता को अक्षुण्ण रखने के लिए इस्लाम को बढ़ावा दिया। ब्राह्मण धर्म उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक ब्राह्मणों को संस्कृत पढ़ाने से इन्कार करता रहा। (देखिए डॉ० जयकर की आत्म कथा—पहला भाग)

वैद्य लोग आंख की ज्योति बढ़ाने के लिए पांवों में तेल लगाने की सलाह देते हैं। लेकिन ब्राह्मण धर्म ने प्रतियोगिता के भय से कहा कि "स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजों ने सबसे पहले इसी वर्ग को अंग्रेजी की मुफ्त शिक्षा दी। मिशनरियों के कारण शेष सब के लिए भी इसका प्रवेश द्वार खोल दिया गया। (भारत में विदेशी मिशनरी सन् १८६० में आये।) राजा राममोहन राय ने लॉर्ड मेकाले की पूरी सहायता की। लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने कहा "क्या अंग्रेजी आवश्यक है" इस विषय पर विचार करने के लिए आदम कमेटी नियुक्त की थी। इस कमेटी की रिपोर्ट रद्दी की टोकरी में फेंक दी गई। पंडित मदनमोहन मालवीय ने हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए एक करोड़ रुपया जमा किया—हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने के लिए। यह एक अपूर्व पुरुषार्थ था। इस विश्वविद्यालय को स्थापित हुए ६३ वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक वहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी नहीं बन पाया। यह है ब्राह्मण धर्म! इस तथा कथित ब्राह्मण धर्म ने भारत भूमि के प्रति भक्ति नष्ट करने में कुछ भी उठा नहीं रखा।

क्या कोई यह पढ़ता है—

शिला भूमि रश्मा पासु भूमिः संधृता धृता।
तस्य हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः॥ (अथर्व १२।१।२६)
यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्या मर्त्या व्यैलबाः।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः।
सा नो भूमिः प्रणुदता सपत्नान्
असपत्नं मा पृथिवी कृणोतु।

लेकिन तथाकथित ब्राह्मण वर्ग ने कहा—दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा।

भारत के महान् पूर्वजों की पवित्र वाणी का महत्त्व इस बात से आंका जा सकता है कि शिला, भूमि, पृथिवी, नृत्य, युद्ध और दुन्दुभि—ये भारत की ७०% निरक्षर जनता के दैनिक व्यवहार और बोली के शब्द हैं। भारतीय जनता एक है, इस बात को भारत विभाजकों—आंग्ल-मुस्लिम-रूसी युति के एजेंटों ने नहीं माना। भारत एक राष्ट्र है। भारत प्रायद्वीप एक देश है। इस रूप को नष्ट करने के लिए भारत विखंडित किया गया। खुशी-खुशी नहीं किया गया, लेकिन किया गया। विभक्त जर्मनी के चांसलर श्मिडिट का कहना है कि जर्मनी की एक होने—संयुक्त होने—की इच्छा कायम है। लेकिन भारत में क्या है? न भारतीय-अभारतीय की परिभाषा में सोचा जाता है और न इस परिभाषा में बात की जाती है। इस देश का नाम तक भारत नहीं। यहां व्यक्ति की जान-पहचान पन्थ और मजहब से होती है। क्रान्ति की बात सब कहते हैं। लेकिन यह कोई नहीं कहता कि ब्रिटिश कानूनों और ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को हिन्द महासागर में डूबो दो। कानून और शिक्षा—दोनों क्षेत्रों में अनुवाद के सहारे काम चलाया जा रहा है। क्या भारत की प्राचीन स्मृतियों के आधार पर तीन महीने में नया दंड विधान तैयार नहीं हो सकता? हो सकता है। क्या शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं हो सकता? हो सकता है। लेकिन यह सब तभी हो सकता है, जब भारतभूमि के प्रति भक्ति हो। चिन्तन सामान्य जन के हित के लिए हो। रूस के भाग्यविधाता मार्शल स्टालिन ने श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिचयपत्र लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि "यह न मेरी भाषा है और न आप की।" परिणाम यह हुआ कि संस्कृत में परिचयपत्र बनाकर भेजा गया।

जब मार्शल बुलगानिन और निकिता ख्रुश्चेव भारत आने को हुए, तब किंग्स्वे राजपथ हो गया और क्वींस्वे जनपथ हो गया। कारण यह कि इन सड़कों से उनकी सवारी आने वाली थी। हवाई अड्डे के मार्ग तक सर्वत्र हिन्दी या रूसी थी। अंग्रेज़-भक्त कितने चापलूस होते हैं, उसका यह नमूना है। इन्हीं लोगों के मस्तिष्क से भारत विभाजन की योजना निकली। नेहरू जी के शब्दों में—"हम लोग बूढ़े हो गये थे, जेल जाना नहीं चाहते थे, इसलिए पाकिस्तान की स्थापना स्वीकृत कर ली। हमें सत्ता चाहिए थी।" (देखिए नेशनल हू इज़ हू—चौथा भाग)

फ़्रांसीसी क्रांति के रक्षक युवा नेपोलियन ने रोमन लॉ को समाप्त किया। उस ने फ़्रांसीसी विधिज्ञों को बुलाया और उनसे कहा कि तीन मास में नया फ्रांसीसी विधान बनाओ। तब नेपोलियन कोड के नाम से प्रसिद्ध नया कोड बना, अंग्रेज़ों ने उसके आधार पर अपना कानून बनाया। भारत का दंड विधान ब्रिटिश दंड विधान की नकल है। कम्युनिस्ट नेता ज्योति बसु बैरिस्टर हैं। उन्होंने अपने पुत्र को भी बैरिस्टर बनाया है। ये स्वायत्त शासन की तो मांग करते हैं, लेकिन ब्रिटिश कानूनों के गंगा प्रवाह की बात कभी नहीं करते, इस पर भी ये लोग अपने आपको प्रगतिशील कहते है। हिन्दी के प्रबल विरोधियों और उर्दू के कट्टर समर्थकों—उर्दू का परचम लहराने वालों—को क्या वस्तुतः अपनी मातृभाषा और बोली से प्रेम है? उस्मानिया यूनिवर्सिटी में शिक्षा का माध्यम उर्दू थी। निजाम हैदराबाद ने सब पाठ्य पुस्तकों का अनुवाद उर्दू में करवा दिया था। निजाम पराजित हुआ। गद्दी बचाने के लिए वह भारतीय संघ में शामिल हुआ। उस्मानिया यूनिवर्सिटी में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी हो गया। १९१७ से १९४८ तक राजभाषा रहने के बाद उर्दू चुपचाप खिसक गई। क्या इस पर अंजुमने तरक्की-ए-उर्दू ने कोई आंसू बहाया नहीं।

त्रिपुरा रियासत की भाषा बंगाली थी। त्रिपुरा नरेश ने शाम के समय संघ के प्रवेश पत्र हस्ताक्षर किये। रात बीती। अगले दिन सवेरे अंग्रेज़ी आ गई। क्या इस पर किसी बंगाली की जबान खुली? नहीं।

राजस्थान की रियासतों में उच्च न्यायालय तक हिन्दी चलती थी। मध्य भारत में भी यही स्थिति थी। सरदार पटेल ने हिन्दी को हटा दिया और अंग्रेज़ी को प्रतिष्ठित किया। क्या टंडन जी का हिन्दी साहित्य सम्मेलन बोला? नहीं।

सन् १९६५ में ग्वालियर के एक वकील ने पुरस्कार ग्रहण करने पर आभार व्यक्त करते हुए अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा था कि १९४८ तक वह कचहरी में अंग्रेज़ी का एक शब्द नहीं बोलता था और अब न्यायालय में एक शब्द हिन्दी का नहीं बोलता।

यह क्या बताता है? यही न कि इस बात का सतत प्रयत्न किया जाता है कि भारत भूमि के प्रति भक्ति न उपजे। आंग्ल-मुस्लिम-रूसी युति का यही लक्ष्य है। यदि यह मनोवृत्ति न हो, तो क्या भारत को विश्व शक्ति होने से रोका जा सकता है? उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में जिस देश के चार युवकों और एक युवती ने तीन विमान बनाये और उड़ाये, उस देश की बुद्धि को जंग लगने का क्या कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है ? सन् १८६१ में बम्बई के नारायण राव ने विमान बनाकर उड़ाया । अमेरिका के राइट बन्धुओं ने इसके दो वर्ष बाद सन् १८६३ में गुब्बारा उड़ाया । भारत की इस अजेय बुद्धि को नहीं चमकने दिया गया । बड़ौदा के मराठा दम्पती द्वारा निर्मित विमान में एक अन्य विशेषता थी । पुष्पक विमान की तरह उसे आकाश के मध्य में ठहराया जा सकता था । इसके लिए दौड़पट्टी—रनवे—की भी आवश्यकता न थी । इन सब को प्लेग खा गया । ब्रिटिश रेज़ीडेंट ने मैसूर के युवकों के हाथ कटवा दिये ।

एक ब्रिटिश अधिकारी ने घोषणा की है कि ब्रिटेन भारत को ट्रालर-मछली पकड़ने का जहाज—बनाने में सहायता देने को तैयार है । तो क्या भारत से नौ निर्माण ज्ञान लुप्त हो गया है ?

सन् १८१७ में बाजीराव पेशवा की पराजय और आत्म समर्पण से एक वर्ष पूर्व वाडिया के नौप्रांगण (शिपयार्ड) में ब्रिटिश नौसेना के लिए फ्रिग्रेट टाइप का जंगी जहाज त्रिणकोमल्ली नाम से बनाया गया । ब्रिटिश नौसेना ने इसका नाम बदल दिया । १६२ वर्ष पुराना यह युद्धपोत आज भी पोर्ट्समाउथ में ब्रिटिश नौसेना के मध्य खड़ा है और ब्रिटिश युवकों को शिक्षा दे रहा है । अंग्रेज़ों ने इस भारतीय बुद्धि को नष्ट किया । भारत को यन्त्र-मन्त्र ज्ञान (टैकनॉलॉजी) उधार लेने की आवश्यकता नहीं । आवश्यकता है भारत भूमि के प्रति निष्ठा जगाने की और यह विश्वास करने की कि—

भूमे मातर्निधेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम् ।
संविदाना दिवा कवे श्रिया मा धेहि भूत्याम् ॥ अथर्व. १२।१।६३१

प्रतिष्ठा का कारण भूमि भक्ति है । इसके अभाव में विश्व में देश की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती । यही कारण है कि भारत की बात का कोई महत्त्व नहीं । इस प्रसंग में अमेरिका के वचन भंग का उदाहरण दिया जा सकता है । अब तक यूरेनियम के दो खेप भारत पहुंच जाने चाहिए थे । ऐसा नहीं हुआ । क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि भारत को नपुंसक समझा जाता है ।

भारत में इस्लाम पृथक्तावादी है । विदेशी है । कारण यह कि उसे प्रतिक्षण अपना अस्तित्व खतरे में महसूस होता है । पहली बात यह कि हाजी काबा को चूमता है । वह जिस वेश में दक्षिण भारत के मन्दिरों में पुजारी पूजा के लिए जाता है, उसी वेश में मक्का जाता है । (देखिए नूरानी द्वारा लिखित जाकिर हुसैन की जीवनी में दिया गया चित्र । ब्रिटिश एनसाइक्लोपीडिया (दसवां संस्करण) के अनुसार शिवलिंग कुरेशी कबीले का देवता है । मक्का-मदीना में बने मन्दिर बाद में ढहा दिए गए । दीवारों पर बनी तसवीरें मिटा दी गईं । ज्ञाना लोक रश्मियां पाने पर क्या इस्लाम भारत में पनप सकता है ? कुरैशियों के देवता को मानने के बाद ही पैगम्बर को मक्का में आने दिया गया था । रेशम के काले कपड़े से सत्य कब तक छिपा रहेगा ? दूसरी बात यह कि ब्लडइज थिकर दैन वाटर—खून पानी की अपेक्षा अधिक गाढ़ा होता है । क्या इस सत्य को भुलाया जा सकता है ? अप्रैल १६१६ को याद कीजिए । दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की जामा मस्जिद की मिम्बर पर वर्त्तमान इमाम के पिता के निमन्त्रण पर एक महान् भारतीय आर्य संन्यासी खड़ा है। वह रौलट एक्ट के सत्याग्रह में मृत युवक की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर रहा है—त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। जामा मस्जिद के सामने वाला विशाल मैदान दिल्ली के मुसलमानों से भरा पड़ा है। लाउड स्पीकर नहीं, लेकिन शांति इतनी है कि सूई के गिरने की भी आवाज सुनी जा सकती है। बृजकृष्ण चांदीवाला ने लिखा है कि मुसलमानों का जैसा मजमा उस दिन वहां देखा गया वैसा फिर कभी देखने को न मिला। यदि जामामस्जिद से वेदमन्त्रों का पाठ किया जा सकता है—भारत के महान् पूर्वजों की पवित्र वाणी मुसलमानों की हृत्तन्त्री को झंकृत कर सकती है, तो फिर भारत में इस्लाम की आवश्यकता ही क्या है? दिसम्बर १९१६ में उस महान् संन्यासी को पिस्तौल की गोली का निशाना बना दिया गया। यदि बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में तिरवा के राजा छतारी के नवाब को अपनी कन्या देना मान जाते, तो सन् १९२५ में मलकाने राजपूतों की शुद्धि का प्रश्न ही नहीं उठता। सन् १९४७-४८ में कराची से लौटे मेव इस्लाम छोड़ने को तैयार थे, लेकिन आचार्य विनोबा भावे, डॉ० सुशीला नय्यर, पंडित सुन्दर लाल सदृश लोग भेजे गये, ताकि वे मेवों की शुद्धि न होने दें। मौलाना आजाद के लिए एक चुनावक्षेत्र चाहिए था। मेवों से कहा गया कि तुम मुसलमान हो, मुसलमान बने रहो। इन महानुभावों ने यह नहीं कहा कि तुम भारत माता की सन्तान हो—भारतीय बनो! यह गांधी और नेहरू की कल्पना से बाहर की बात थी। ये दोनों बैरिस्टर थे। लाला हरदयाल ने बैरिस्टर का लक्षण किया है—वह गधा, जो सारे ब्रिटिश साम्राज्य में बे रोक-टोक चर सकता है। उनकी ब्रिटिश भक्ति में कैसे सन्देह किया जा सकता है?

भारत के विभाजन को स्थायी रूप देने के लिए अंग्रेजों के संकेत पर स्थापित पाकिस्तान की तलवार अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी को भारत भक्ति के विनाश का गढ़ बनाया गया। यदि मुसलमानों को वस्तु स्थिति समझाई जाये, तो वे अपने आप को हिन्दू मानने में गौरव का अनुभव करेंगे—करते रहे हैं।

सन् १९२८ में लाहौरी गेट के बाहर नेहरू रिपोर्ट के समर्थन में एक सभा का आयोजन किया गया। तब "ज़मींदार" के सम्पादक मौलाना ज़फ़र अली कांग्रेस में थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि "पंजाबियो, आपके पंजाब की पांच नदियों के तट पर ही वेदों की ऋचाएं रची गईं। इन्हीं नदियों के किनारे उपनिषदें रची गईं। वक्ता ने यह भी कहा कि वह मक्कड़ राजपूत है। हुआ यह कि उनके पूर्वज मुसलमानों से लड़ने गये। लड़ाई में हार गये। पराजित सेना मुलतान लौट रही थी। गर्मी के दिन थे—प्यास लगी। पानी का कहीं नाम नहीं था। अचानक एक माशकी दिखाई दिया। सबने मशक का पानी पिया। दुर्भाग्य की बात कि इन सैनिकों के गांव पहुंचने से पूर्व ही उनके पानी पीने का समाचार वहां पहुंच गया। फलस्वरूप वे सब जाति से बहिष्कृत कर दिये गये। उनकी विवशता की बात नहीं मानी गई। परिमाण यह निकला कि सब मक्कड़ राजपूत मुसलमान हो गये।

"कर्जन से नेहरू" के लेखक श्री दुर्गादास ने फ़जल हुसैन से हुई अपनी भेंट का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्णन किया है। श्री दुर्गादास ने कहा—"आप पंजाब के मन्त्री हैं, लेकिन मुसलमानों का पक्षपात करते हैं।" फ़ज़ल हुसैन ने हंसते हुए कहा कि "मैं आज का मुसलमान नहीं हूं। सैंकड़ों वर्षों से हूं। मेरे घर में जाकर देखो। मेरी मां ने ब्राह्मण पुरोहित को बुलाया हुआ है। हमारे घर के विवाहों में काज़ी बाद में आता है, कुल पुरोहित पहले आता है।" भारत विभाजन के बाद मियांमीर के एक मुसलमान परिवार में विवाह हुआ। पहले कुल पुरोहित आया, बाद में काज़ी आया। स्वर्गीय जुल्फ़िकार अली भुट्टो जैसलमेर के राजपूत थे उनका खून ठंडा नहीं हुआ था। एक शाम लाहौर की एक विराट् सभा में भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि "जब भारत एक होगा—और होगा अवश्य—तब मैं उसका प्रधान मंत्री नहीं, तो परराष्ट्र मन्त्री अवश्य बनूंगा। तब मैं दुनिया को बता दूंगा कि भारत का परराष्ट्रमन्त्री क्या कर सकता है ?

ये क्षणिक चिनगारियां हैं। लेकिन फ्लैश हैं। सत्य राख के नीचे छिपा नहीं रह सकता। काल बलवान् है। भीष्म पितामह ने कहा था—

कालो वा कारणं राज्ञः राजा वा कालकारणम्।
इति ते संशयो माऽभूद्राजा कालस्य कारणम्॥

भारत की जनता की मान्यता है कि यथा राजा तथा प्रजा। भारत विभाजक शासक वर्ग (अंग्रेज़ी पंडित वर्ग) अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी को जीवित रखना चाहता है। सभ्यता-संस्कृति का आधार भूमि है—मज़हबपन्थ नहीं। लेकिन शासक इस सत्य को कैसे मानें ?

हिन्दी का विरोधी राजा, मन्त्री, सभा, समिति, संसद्, दूरी, ज्योति नहीं कहेगा—बादशाह, वज़ीर, मीटिंग, कमेटी, पार्लमेंट, फ़ासिला, नूर कहेगा। कारण यह कि वह इस देश के महान् पूर्वजों की वाणी वेद से अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ना चाहता। वह भारत के इतिहास को अपना इतिहास मानने को तैयार नहीं। फलस्वरूप उसने भारत भूमि के प्रति अपनी अभक्ति—भारत विरोध पर पर्दा डालने के लिए उर्दू-अंग्रेज़ी का बुर्का ओढ़ा है। उर्दू को छोड़कर भारत को शेष सब भाषाओं की वर्णमाला एक है। यही नहीं, आग्नेय एशिया की भी यही वर्णनमाला है। लेकिन उर्दू को देवनागरी लिपि स्वीकार्य नहीं।

तीसरी शताब्दी तक तमिल ब्राह्मी लिपि में लिखी जाती थी। मदुरै के समीप मिला शिला लेख इसका प्रमाण है। मैक्सिको में तीन हजार वर्ष पुराना एक शिला लेख मिला है। यह ब्राह्मी लिपि में है। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में एक तेलगू नाटकार ने देवनागरी लिपि में राधाकृष्ण नाटक लिखा। यह नाटक तमिल युवकों ने मद्रास में खेला। विजयनगरम् साम्राज्य के ताम्रपत्र देवनागरी में हैं। इनकी भाषा कन्नड़ या तेलगू है। विजयनगरम् साम्राज्य के रहते एक लिपि का प्रयत्न चालू रहा। लोकमान्य तिलक ने मराठी को देवनागरी में लिखकर इस प्रयत्न को आगे बढ़ाया। महात्मा गांधी ने दो लिपियां चलाने का प्रयत्न कर भारत भक्ति को समाप्त करने का कार्य किया। स्वतन्त्र भाषा की अपनी क्रिया होती है। अपने सर्वनाम होते हैं। क्या उर्दू की कोई अपनी क्रिया है ? तुर्किस्तान इस्लामी देश है। उसने अरबी लिपि को दासता की लिपि मानकर त्याग दिया। वहां इस्लाम यथापूर्व कायम है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन भारत में विदेशी लिपि को चलाने का दुराग्रह है, क्योंकि भारत भूमि के प्रति भक्ति नहीं। खेर कमीशन में डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी ने प्रस्ताव रखा था कि सब भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जायें। इसके विरोध में कमीशन के सिख और मुसलमान सदस्यों ने लिखा कि यह प्रस्ताव इसलिए रखा गया है, ताकि उर्दू और गुरुमुखी लिपि समाप्त हो जायें। राष्ट्रभक्ति के अभाव में सद्बुद्धि भी नष्ट हो जाती है।

फ्रांस का साम्राज्य समाप्त हो गया। लेकिन उन देशों के मुसलमान रोटी-रोजी की खोज में फ़्रांस आते हैं और वहीं बस जाते है। सन् १६१६ में फ़्रांसीसी सरकार ने पेरिस में एक सुन्दर मस्जिद बनाई थी। पिछले दो दशकों में उत्तरी अफ़्रीका से मुसलमान बड़ी संख्या में फ्रांस आये। वहां के विभिन्न भागों में बस गये। इनकी संख्या २० लाख तक पहुंच गई है। धर्मवार फ्रांस की जनसंख्या यह है—प्रोटैस्टैंट २० लाख, यहूदी ६० लाख, मुसलमान २० लाख और बैप्टाइज्ड कैथॉलिक ४,५०,००,०००। लेकिन फ्रांस के मुसलमान भयभीत नहीं। वे अल्पसंख्यक आयोग की भी मांग नहीं करते। इस्लामी क्रियाकलाप भी दिखाई नहीं देता। वे फ्रांसीसी हो गये हैं। वे नये युग के हैं। भारत का मुसलमान अभी मध्य युग का है। तथाकथित ब्राह्मण भी मध्य युग का है। वह भूला हुआ है। दसवीं शताब्दी तक भारत की परम्परा यह थी—

अथ धर्मार्थफलाय राज्याय नमः। नेमि वाक्यामृत

जैनाचार्य सोमदेव सूरि ने तीर्थंकरों को नमस्कार न कर राज्य को नमस्कार किया। इस बात से उनकी रचना का टीकाकार भी विस्मित हुआ। टीकाकार बल्लोल खां लोदी के काल का है। फिर उसकी दृष्टि उशनस् स्मृति पर गई। तब उसने लिखा कि जैनाचार्य उशनस् की परम्परा पालन कर रहा है। आइए, हम प्राचीन भारत की विस्मृत परम्परा का अनुसरण करें और पुनः बृहत्तर भारत का निर्माण करें। अमेजन घाटी को पुनः बसाकर मथुरा की दयानन्द शताब्दी पर गाये गये गीतों को सत्य सिद्ध करें—उजाड़ेंगे शहरों को जंगल बसाकर। दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे। सरकार दिशाहीन है। उसे चाहिये कि वह भारत को सही दिशा दे। सब समस्याएं हल हो जायेंगी। बदली छंट जायेगी। आशा है कि हम भारत माता का आह्वान सुनेंगे और प्रण पूर्ण करने से कतरायेंगे नहीं। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत मां को नया रूप दो !

मृत्यु को मैंने निमन्त्रण दे दिया है,
इस लिए कि जिन्दगी मुस्करा सके।
मेरे बाद आने वाली पीढ़ी
नारों में न उलझी रहे—
योजनाएं ही न बनाए
अपितु आज़ादी को जीवन में पा सके।

लाखों करोड़ों भूखे पेट
नंगे शरीर, सिसकते चेहरे,
जिन के पास न सिर छुपाने की
जगह है, न तन ढकने को कपड़ा
क्या वे भी इसी मां के बेटे नहीं हैं ?
या उनका इस मिट्टी पर
कोई अधिकार नहीं है ?

पिछले ३० वर्षों में नेताओं ने
जनता के कपड़े उतार कर
अपने महल बनाए हैं।
राजनीति धन कमाने का
एक आसान धंधा बन गयी है।
जनता मरती है तो मरे,
उसकी चिन्ता करने वाले भी मर चुके हैं
दम तोड़ चुके हैं।

लाशों पर से कफ़न उतार कर,
ग़रीबों के घर उजाड़ कर,
खून पीने की राजनीति,
कुर्सी पर बैठकर रौब झाड़ने की नीति
अब और अधिक नहीं चलेगी।

समाजवाद का नारा एक ढोंग है,
सैक्यूलरवाद एक रोग है,
ऐसा रोग जैसा कैंसर या
ला इलाज मर्ज़- जिस में
डाक्टर का घर भरता है।
और मरीज़ तड़प-तड़प कर मरता है।

इसलिए इन सड़े गले नेताओं को
गद्दी से दूर कहीं गहरे में फेंक दो।
नया सूरज उगाओ,
नयी दुनियां बनाओ।
त्याग-तप-बलिदान की धरती
पर चाणक्य की राह पर चलने वाले
सेवकों को आगे लाओ।
कोठी महलों में रह कर
ग़रीबी पर मगरमच्छी आंसू बहाने वाले,
नेताओं को हाथ जोड़ दो।

भारत मां को नया रूप दो,
उसके मस्तक पर सूरज उगे,
उस का हर लाल हंसे,
आज़ादी का तभी कुछ अर्थ है,
अन्यथा सभी कुछ व्यर्थ है।

राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब भारत ने सिकन्दर को पराजित किया

—"कमल"

द्वितीय महायुद्ध में रूस के मार्शल जुकोव सबसे बड़े जनरल प्रमाणित हुए। लगभग बीस वर्ष पूर्व वह भारत आये थे। देहरादून की भारतीय सैन्य अकादमी के प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सिकन्दर पोरस के हाथों पराजित हुआ था।

मुझे अपने कानों पर बहुत मुश्किल से विश्वास हुआ। अपने देश में हमें पाश्चात्य लेखकों द्वारा लिखित इतिहास पढ़ाया जाता है, ताकि हम में हीन भावना पैदा हो और हमारी यह धारणा बने कि पश्चिम सदा पूर्व पर हावी रहा है। जुकोव के मुंह से उपरिलिखित तथ्य सुनकर मैंने महसूस किया कि भारतीय इतिहास लेखक भारत की सबसे अच्छी सेवा यही कर सकते हैं कि भारत का भारतीय इतिहास तैयार किया जाये।

सिकन्दर न केवल भारत में पराजित हुआ, अपितु उसके माथे पर कलंक का टीका लग गया। रूस में नैपोलियन की पराजय सर्वविदित है। लेकिन भारत में तो सिकन्दर की पराजय निर्णायक थी। मास्को से वापसी के बाद नैपोलियन कम से कम इस योग्य तो था कि वह लड़ाई जारी रख सके, लेकिन सिकन्दर तो भारत में पराजित होने के बाद लड़ने की क्षमता ही खो बैठा। वापसी के कुछ समय बाद ही उसका देहान्त हो गया। मज़े की बात यह है कि सिकन्दर को यह अपमानजनक पराजय सीमा के एक अकेले राजा के हाथों मिली। वस्तुतः भारत ने सिकन्दर को सीमा पर आक्रमण करने वाला एक मामूली हमलावर माना और उसे इतना भी महत्त्व न दिया कि भारत के ऐतिहासिक रिकार्ड में उसकी चर्चा भी करे। परिणाम यह है कि केवल पाश्चात्य लेखकों के रिकार्ड मिलते हैं—और इन सबमें सिकन्दर के प्रति पक्षपात है। इसके बावजूद यदि हम इन रिकार्डों को ध्यान से पढ़ें, तो इस बात में कोई सन्देह नहीं रहता कि जेहलम नदी के तट पर सिकन्दर की वैसी ही पराजय हुई, जैसी वाटरलू में नैपोलियन की हुई थी।

एक अमरीकन पत्रकार ने भी पाकिस्तान—और सिकन्दर—को इसी रूप में चित्रित किया, जब उसने भारत-पाक युद्ध के दौरान कहा कि भारत से निकलने का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक ही मार्ग है और वह वही है, जिससे सिकन्दर गया। ईसवी सन् से ३०० वर्ष पूर्व सिकन्दर की भी वैसी ही दुर्दशा हुई थी, जैसी सन् १६७१ में याह्या खां की हुई।

दावा किया जाता है कि सिकन्दर ने पोरस को पराजित किया और जब सिकन्दर ने पोरस से पूछा कि "तुम्हारे साथ क्या सलूक किया जाये", तब उसने कहा कि "जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है।" सिकन्दर इस उत्तर से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उसका राज्य उसे वापस कर दिया। सचाई यह कि पोरस ने न केवल अपने क्षेत्र पर अधिकार जमाये रखा, अपितु सिकन्दर ने उसे विभिन्न स्वतन्त्र कबीलों का अतिरिक्त क्षेत्र भी दिया, जिस पर उसने अधिकार कर लिया था—एक ज़िला, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें पन्द्रह विभिन्न जातियां थीं और ५,००० बड़े-बड़े कस्बे थे। इसके अतिरिक्त अनेक ग्राम थे।" (प्लूटार्क : "लाइव्स")

इससे पूर्व सिकन्दर को पोरस से खुली लड़ाई करने का साहस न हुआ। पहले उसने जेहलम नदी के पश्चिमी किनारे पर बड़ी मात्रा में अपनी सेना को जमा किया, ताकि पोरस धोखे में आ जाये और समझे कि सिकन्दर की शीघ्र नदी पार करने की योजना नहीं। लेकिन पोरस इस धोखे में न आया और उसने चौकसी जारी रखी। फलस्वरूप पोरस को अपना यह सिद्धान्त छोड़ना पड़ा कि शत्रु पर रात के समय अचानक हमला न करना चाहिए। ईरान के सम्राट् डारियस से लड़ते समय सिकन्दर ने अपने साथियों की यह सलाह मानने से इनकार कर दिया था कि रात के समय हमला किया जाये। उसने कहा था कि "मैं चोरी से विजय प्राप्त नहीं करना चाहता।" लेकिन पंजाब में नदी पार करने के लिए उसने न केवल रात का समय चुना, अपितु बरसाती रात का। फिर भी उसे मामूली सफलता ही मिल पाई।

एक अन्य अवसर पर सिकन्दर भारतीय प्रतिरोध से इतना विचलित हुआ कि उसने वचन भंग किया और उन सब की हत्या करवा दी, जिन्होंने सकुशल चले जाने की शर्त्त पर आत्मसमर्पण किया था। प्लूटार्क ने लिखा है कि "यह अकेला वचन भंग युद्ध में उसकी सललता के नाम पर कलंक है।"

सच तो यह है कि मौखिक साम्मुख्य में भी पोरस सिकन्दर से बेहतर साबित हुआ। पोरस ने सिकन्दर से साफ़-साफ़ कहा कि "क्या तुम हमारा पानी और भोजन छीनने आये हो? यही दो चीजें हैं, जिनके लिए बुद्धिमान् लड़ते हैं।" सिकन्दर ने अपने आप को बहुत छोटा अनुभव किया, जब पोरस ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि "जहां तक अन्य वस्तुओं का सम्बन्ध है (जिस रूप में दुनिया उन्हें लेती है) यदि मेरी स्थिति आपसे बेहतर है, तो मैं अपनी समृद्धि में आपको भागीदार बना सकता हूं और यदि आप मेरी अपेक्षा अधिक सौभाग्य शाली हैं, तो मुझे आपका ऋणी होने में कोई आपत्ति नहीं।"

इसी मुलाकात के दौरान सिकन्दर ने पोरस को बहुमूल्य उपहार भेंट किये। बदले में पोरस ने भी सिकन्दर को उपहार दिये, लेकिन कम मूल्य के।

बताया जाता है कि पोरस की बुद्धिमत्तापूर्ण बातचीत के लिए सिकन्दर ने उसका आलिंगन किया, लेकिन साथ ही आग्रह किया कि "आओ, हम एक-दूसरे का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुकाबला करें, ताकि कहीं तुम अपने आपको बेहतर न समझने लग जाओ।" लेकिन जब दोनों में मुकाबला हुआ, तब सैनिक और राजनैतिक दोनों दृष्टियों से पोरस बेहतर निकला।

सच तो यह है कि भारतीय प्रतिरोध के फलस्वरूप यूनानियों के दिल इतने बुझ गये कि उन्होंने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। "अपने सैनिकों की उदासीनता से एक बार तो सिकन्दर इतना दुःखित और क्रोधित हुआ कि वह एक तम्बू में अलग-थलग जा बैठा—बल्कि ज़मीन पर लेट गया और कहने लगा कि इस समय लौटने का साफ़ मतलब यह मान लेना होगा कि वह पराजित हो गया है।" लेकिन उसके सैनिकों की चीख-चिल्लाहट ने उसे लाचार कर दिया। उसके साथियों ने उसके समक्ष यह बात स्पष्ट कर दी कि जब उसके एक लाख बीस हज़ार पदातियों और १५ हज़ार घोड़ों को पोरस के बीस हज़ार पदातियों और २,००० घोड़ों के मुकाबले में हार माननी पड़ी है, तब इस बात की तो कोई सम्भावना ही नहीं कि वह और उसकी सेना मगध के दो लाख पदातियों, अस्सी हज़ार घोड़ों, आठ हज़ार सशस्त्र रथों और छह हज़ार लड़ाकू हाथियों के सम्मुख जीत सके।

इस सबके बावजूद विश्वविजय और भगवान् का अवतार होने का झूठा दम्भ भरने वाले इस व्यक्ति में इतना साहस न था कि वह तथ्यों का सामना कर सके। इसकी बजाय उसने शकुनों की शरण ली। उसने अपने ज्योतिषी की सलाह से कुछ पशु कटवाये और तब कहा कि इन पशुओं की आंतें पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि "भगवान् का यह आदेश है कि आगे मत बढ़ो।" यह बात महत्त्वपूर्ण है कि तीन वर्ष पूर्व उसने इस आशय के वास्तविक लक्षणों की अवहेलना की थी कि वह आक्सस को पार न करे।

उसकी पराजय का एक प्रमाण यह भी है कि उसके घनिष्ठतम सहयोगी कोयनस का रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में देहान्त हो गया। उसने किसी भी रूप में पेश कदमी का विरोध किया था। सन्देह है कि सिकन्दर ने उसका सफ़ाया करवा दिया—जैसा वर्ताव तानाशाह अक्सर अपने असुविधाजनक सहयोगियों के साथ करते हैं।

अब स्थिति यह हो गई थी कि सिकन्दर न आगे बढ़ सकता था और न पीछे हट सकता था। वह खैबर के मार्ग से वापस न जा सकता था, जहां स्वातियों ने उसके दांत खट्टे किये थे। फलस्वरूप उसने सिन्धु नदी के मार्ग से जाने की सोची। उसका विचार था कि वह सिन्धु नदी के मार्ग से नील नदी तक जा पहुंचेगा। उस बेचारे को अरब सागर के अस्तित्व का तो ज्ञान ही न था। सिन्धु नदी के सभी समीपवर्ती देशभक्त मल्लों और मुलतानियों ने वहां भी उसे चैन न लेने दिया। बाणों की वर्षा और डंडों की मार से वह बार-बार बेहोश हो जाता। यद्यपि वह सख्त बीमार हो गया, तथापि वह घोड़े पर चढ़ा रहा, ताकि उसके सैनिक आश्वस्त रहें कि वह मरा नहीं!

सिन्धु नदी के मार्ग से वह मिस्र की बजाय अरब सागर पहुंच गया। अब वह बेचारा गहरी मुसीबत में फंस गया। उसने कुछ लोगों को तटवर्ती नावों और कुछ को बलूचिस्तान के समानान्तर मकरान तट से भेजा—इस विचार से कि यदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनमें से आधे मर गये, तो भी आधे तो बच जायेंगे। इस स्थिति में सैनिकों की दुर्दशा की कल्पना की जा सकती है। पानी इतना कम था कि जब सैनिकों को कोई ताल-तलैया मिल जाती, तब वे पानी पी-पीकर अपना पेट फुला लेते और मर जाते। उनके शव पानी में तैरने लगते और पानी को दूषित कर डालते। इस सब के बावजूद जो मर गये, वे आगे जाकर तिल-तिलकर मरने वालों से अच्छे रहे। जब सिकन्दर भारत में प्रविष्ट हुआ था, तब उसके साथ एक लाख पैंतीस हजार पदाति और घुड़सवार थे। जब वे किरमान पहुंचे, तब उनमें से केवल १५,००० बचे। भारत में सिकन्दर की पराजय रूस में नेपोलियन की पराजय से भी बदतर थी।

इस सब के बावजूद वापसी पर लोगों को भारत पर आक्रमण में मिली 'सफलता' से प्रभावित करने के लिए उसने कहा कि सम्राट् सायरस और साम्राज्ञी सेमिरामिस तो भारत पर आक्रमण के बाद क्रमशः केवल ७ और २० सैनिकों के साथ लौटे थे। सच तो यह है कि सायरस या सामिरामिस कभी भारत आये ही नहीं।

पोरस के आक्रमण का मुक़ाबला करने वाले लोगों के नेता बुद्धिजीवियों, दार्शनिकों और लेखकों का आचरण तो और भी शानदार था।

वे न केवल सिकन्दर के दल में शामिल होने वाले राजाओं के विरुद्ध बोले, अपितु उन्होंने उसका विरोध करने वाली स्वतन्त्र भारतीय जातियों से भी सहयोग लिया। उन्हों ने सम्राट् सबास को आक्रान्ता के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। सिकन्दर उन से नाराज हो गया और उसने उनमें से बहुतों को फांसी पर चढ़ा दिया।

लेकिन अन्तिम विजय भारतीय बुद्धिजीवियों की ही हुई। उनमें से दस को, जिन्होंने सबास को उत्तेजित किया था, बन्दी बना लिया गया।

प्रथम बुद्धिजीवी से पूछा गया कि मृतकों की संख्या अधिक है या जीवितों की? उसने उत्तर दिया कि "जीवितों की, क्योंकि मृतकों का तो अस्तित्व ही नहीं।"

द्वितीय बुद्धिजीवी से पूछा गया कि 'अधिकतर हिंस्र जन्तु कहां पैदा होते हैं—पृथ्वी पर या समुद्र में ?" उसने उत्तर दिया कि "पृथ्वी पर, क्योंकि समुद्र भी तो पृथ्वी का ही भाग है।"

तृतीय बुद्धिजीवी से पूछा गया कि "हिंस्र जन्तुओं में सबसे अधिक मक्कार कौन है ?" उत्तर मिला कि "वह, जिसका अभी तक मनुष्य पता नहीं लगा पाये।"

चतुर्थ बुद्धिजीवी से पूछा गया कि "उसने सबास को विद्रोह हेतु प्रेरित करने के लिए कौन-सी युक्ति अपनाई ?" उत्तर था कि "एक ही युक्ति—मरो या जियो, लेकिन ईमानदारी से।"

पंचम (दार्शनिक) से पूछा गया कि "रात और दिन, इन दोनों में से बड़ा कौन है ? उत्तर मिला कि "दिन" कम-से-कम एक दिन बड़ा है। इस पर जब सिकन्दर सन्तुष्ट दिखाई न दिया, तब दार्शनिक ने कहा कि यदि विचित्र प्रश्नों के विचित्र उत्तर दिये जायें, तो किसी को आश्चर्य न करना चाहिये।

अगले से पूछा गया कि "अत्यन्त प्रिय होने के लिए क्या करना चाहिए।" उत्तर मिला कि "अत्यन्त शक्तिशाली होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं कि लोग उससे डरने लगें।"

[शेष पृष्ठ २२ पर]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनु की प्रासंगिकता

—"सिन्धु"

किसी सामान्य व्यक्ति से पूछिए कि मनु कौन था—अधिक सम्भावना यही है कि उसका उत्तर यह होगा कि उसने तो मनु का नाम ही नहीं सुना। यदि उसने मनु का नाम सुना भी है, तो उसे मनु के बारे में इतना ही पता है कि वह स्त्रियों और शूद्रों के विरोधी थे। उसे इस बात का लेश मात्र ज्ञान नहीं कि मनुस्मृति में ज्ञान के अनमोल रत्न भरे पड़े हैं। यह उसका क़सूर नहीं—क़सूर है "नेताओं" का, जिन्होंने हर प्राचीन और भारतीय बात की निन्दा करना और उसे ग़लत रूप में पेश करना अपना पेशा बना लिया है। महात्मा गान्धी के शब्दों में वे नालियों के इंस्पैक्टर हैं—उन्हें गन्दगी के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता। यह एक तथ्य है कि दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देश मनु को प्रथम और प्रमुख विधिनिर्माता मानते हैं। सुदूरवर्त्ती फ़िलिपीन्स के असैम्बली हॉल फ़ॉयर में मनु की प्रतिमा लगी हुई है।

वस्तुतः संसार में कहीं भी उस समय के सब वर्णों और आश्रमों के दीवानी और फ़ौजदारी क़ानूनों पर ऐसा कोई संग्रह नहीं मिलता, जो मनुस्मृति का मुक़ाबला कर सके।

मैंने सुना है कि मनु की यह मान्यता थी कि यदि कोई शूद्र वेद पढ़ ले, तो उसके कान में सीसा पिघलाकर डाल दिया जाये। यद्यपि मनुस्मृति में शूद्रों के बारे में बहुत-सी कठोर बातें लिखी गई हैं, लेकिन सीसा पिघलाकर कान में डालने वाली बात तो मुझे मनुस्मृति में कहीं नहीं मिली। स्पष्ट है कि यह कथन भी उतना ही असत्य है, जितना यह कि डॉ० रघुवीर ने नैकटाई का अनुवाद कंठलंगोट किया है—उन्होंने ऐसा अनुवाद कभी नहीं किया। यह बात उन्हें बदनाम करने के लिए घड़ी गई है।

सच यह है कि मनु वेदनिन्दक को वेद पढ़ाने के विरुद्ध थे—उस व्यक्ति को वेद पढ़ाने के विरुद्ध थे, जो केवल इसलिए वेद पढ़ना चाहे कि उसमें दोष ढूंढ़े जा सकें। मनु ने लिखा है कि विपत्तिग्रस्त होने पर भी वेदों का उपाध्याय अपने ज्ञान को अपने साथ लेकर मर भले ही जाये, लेकिन ऊसर भूमि में वेद ज्ञान के बीज न बोये। (११-११३) यह भी लिखा है कि विद्या ब्राह्मण के पास गई और बोली कि "मैं तुम्हारा खज़ाना हूं, मेरी रक्षा करो। मुझे निन्दक को मत दो, ताकि मैं वीर्यवती बनी रहूं।"

संसार के सब देशों में पवित्र ग्रन्थों के प्राचीन शिक्षकों का यही रुख था।

मनु का कहना है कि आवश्यकता पड़ने पर ब्राह्मण को अब्राह्मण से भी वेद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़ लेने चाहिए और उसका वैसा ही सम्मान करना चाहिए, जैसा गुरु का किया जाता है। उनका यह भी कहना है कि "निष्ठावान् व्यक्ति निम्न वर्ण वाले व्यक्ति से भी शुद्ध ज्ञान प्राप्त कर ले।" इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि न केवल ऐसा हुआ है कि शूद्रों ने वेद पढ़ हों, अपितु ऐसा भी हुआ है कि शूद्रों ने ब्राह्मणों को वेद पढ़ाये हों। फिर प्रत्येक ब्राह्मण भी आदरणीय नहीं। मनु ने लिखा है कि "मूर्ख ब्राह्मण नपुंसक से बेहतर नहीं।" (११-१५८)

विभिन्न वर्णों के कर्त्तव्यों और अधिकारों के अतिरिक्त मनु ने सब वर्णों के लिए सामान्य कर्त्तव्य भी निर्धारित किये हैं। मनु ने चारों वर्णों के लिए यह धर्म बताया है कि हिंसा न करो, सत्य बोलो, चोरी न करो, शुद्ध पवित्र रहो और इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखो। (१०-६३) यीशू मसीह ने पर्वत पर दिये गये अपने प्रवचन में भी तो यही बात कही थी।

अपने गुणों से शूद्र ब्रह्मण बन जाता है और ब्राह्मण शूद्र बन जाता है।

मनु पर वह आरोप लगाना कि उन्होंने स्त्रियों को हीन दृष्टि से देखा, मनु का अपमान है। यह ठीक है कि मनु ने व्यभिचारिणी स्त्री को पीटने की बात लिखी है, लेकिन उन्होंने इसी दंड का विधान पुत्र, शिष्य और सगे भाई के लिए भी किया है।" (८-२९९) स्पष्ट है कि मनु इन सबके विरुद्ध न थे।

वह तो इस तत्कालीन नियम का प्रतिपादन कर रहे थे कि "लालनाश्रयिणो दोषास्ताड़नाश्रयिणो गुणाः" अर्थात् अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं और डांट-डपट से गुणी बनते हैं। इसके साथ ही मनु ने यह भी लिख दिया है कि शरीर के कोमल भाग पर प्रहार न करना चाहिए—मुंह भी तो कोमल भाग है। केवल पीठ पर प्रहार किया जा सकता है।

मनु का यह भी कहना है कि बचपन में लड़की को पिता की देखरेख में रहना चाहिए, जवानी में पति की देखरेख में और पति की मृत्यु हो जाने पर पुत्रों की देख-रेख में। (५-१४८) स्त्री स्वातन्त्र्य के समर्थकों को यह पढ़कर धक्का लगेगा, लेकिन मनोवैज्ञानिकों को इससे आश्चर्य न होगा, क्योंकि वे इस बात से सहमत हैं कि स्त्री को समर्थन और रक्षा की आवश्यकता है और वह इसका स्वागत भी करती है। स्त्री स्वातन्त्र्य के समर्थक इस मत की पुष्टि में टामस हार्डी का साहित्य पढ़ लें।

इस विषय पर परम्परागत बातें लिखने के बाद मनु ने यह भी लिखा है कि पुत्री पुत्र के समान है। (९-१३०)

मनु इस पक्ष में हैं कि रजस्वला होने के तीन वर्ष के अन्दर-अन्दर लड़की का विवाह कर दिया जाये। इसके साथ ही मनु लड़की को यह अधिकार देते हैं कि यदि माता-पिता उसके लिए उपयुक्त वर न ढूंढ सकें, तो वह स्वयं अपने जीवन साथी का चुनाव कर ले। (९-९०) सबसे बढ़कर वह लड़कियों से कहते हैं कि वे सारी उम्र विवाह न करें, लेकिन उनके माता-पिता उनका विवाह गुणहीनों से न करें। (९-८९)

नारी जाति के प्रति उनका रुख पूजा का था। वह लिखते हैं कि दस उपाध्यायों से एक आचार्य बड़ा है, सौ आचार्यों से एक पिता बड़ा है और सौ पिताओं से एक माता बड़ी है। (११-१४५) वह यह भी लिखते हैं कि "जहां स्त्रियों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
पूजा होती है, वहां देवताओं का निवास होता है, जहां उनकी पूजा नहीं होती, वहां सब क्रियाएं निष्फल हैं। (३-५६)

यदि राजनैतिक नेता राजधर्म सम्बन्धी अध्याय पढ़ें, तो उन्हें बहुत लाभ होगा। मनु ने लिखा है कि सरकारी नौकरी में अधिकतम आय निम्नतम आय से छह गुना अधिक न होनी चाहिए। (७-१२६) हमारे वामपन्थी भाई तो आय के एक और दस व एक और बीस के अनुपात पर ही ज़ोर दे रहे हैं। मनु के विचार में वयस्कता की उम्र १६ वर्ष है—अर्थात् यदि १६ वर्ष के युवा को नहीं, तो १८ वर्ष के युवा को तो मतदान का अधिकार मिलना ही चाहिए।

मनु ने जल, मरुस्थल, जंगल और पहाड़ की चोटी से रक्षित क़िलों की तुलनात्मक उपयोगिता की चर्चा की है। उन्होंने सैन्य नेताओं को सलाह दी है कि वे डंडे, गाड़ी, सूअर, मगरमच्छ, सूई अथवा गरुड़ की तरह अपनी सेनाओं को विभाजित करें और तब बिजली की तरह आक्रमण कर दें। (७-१८७-१९१) शत्रु को जीत लेने के बाद राजा को विजित जनता के प्रधान पुरुषों का सत्कार करना चाहिए। (७-२०१) धार्मिक अत्याचार नहीं करना चाहिए। राजा को प्रजा से उसी मृदुता से कर लेना चाहिए, जैसे सूर्य समुद्र से जल लेकर उसे वर्षा के रूप में लौटा देता है। (९-३०५) जिस अपराध के लिए सामान्य व्यक्ति को एक पैसा दंड मिले, उसके लिए राजा को एक हज़ार पैसे दंड मिलना चाहिए। (८-३३६)

व्यापारियों को अपने धर्म का पालन करना चाहिए और राजा को समय-समय पर वस्तुओं के मूल्य निर्धारित करने चाहिएं। खरीदा गया सामान दस दिन के अन्दर वापस किया जा सकता है। ब्याज सामान्यतः १५ प्रतिशत से अधिक न होना चाहिए। (आज कल तो २५ प्रतिशत ब्याज ले लेना आम बात है।) गम्भीर अपराधी को जेल में बन्द न करके उसकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जानी चाहिए और उसे जंगल में भेज देना चाहिए।

सड़क पर उत्पात करने वाले पर जुर्माना होना चाहिए, लेकिन बच्चे और गर्भवती स्त्रियां इस दंड से मुक्त होनी चाहिएं। (९-२८२-२८३) ग़लत इलाज करने वाले डाक्टरों को दंड मिलना चाहिए। (९-२८४) किसी भी व्यक्ति के बारे में फैसला करते समय उसका पद देखा जाना चाहिए।

घोड़े के सम्बन्ध में झूठ बोलना गौ के सम्बन्ध में झूठ बोलने से भी अधिक गम्भीर बात है। (८-९८) गधे के प्राण लेना भी उतना ही बुरा है, जितना वर्ण-संकरता। (११-६९) चारे अथवा ईंधन के लिए काटे गये वृक्षों को छोड़कर वृक्ष काटने पर दंड मिलना चाहिए। (८-२८५) धोबियों को चाहिए कि वे शालमलि के समतल तख्ते पर पीटकर वस्त्र साफ़ करें—पत्थर पर पीटकर नहीं। इसके साथ ही वे लोगों के वस्त्रों को न तो एक-दूसरे में गड्डमड्ड होने दें और न स्वयं पहनें।

शूद्रों को छोड़कर सबके लिए शराब पीने का निषेध है। नशा न करने वाला सोमरस भी केवल वही लोग पियें, जिनके पास तीन वर्ष के लिए पर्याप्त अन्न हो। (११-७ और ९४)

सामान्य व्यक्ति को सज्जन बनाने के लिए अनेक विधि-निषेध हैं। उसे दांतों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से अपने नाखून नहीं काटने चाहिएं। (४-६६) यदि किसी को रात में स्वप्नदोष हो जाये, तो उसे स्नान करना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए—पुनर्मामैत्विन्द्रियम् (मेरी शक्ति पुनः मेरे पास लौट आये)। भोजन के बाद, आधी रात के समय, वस्त्र पहनकर अथवा अज्ञात तालाब में स्नान नहीं करना चाहिए। (४-६५) गाड़ियों, वृद्धों, स्त्रियों, राजा, वर और सबसे बढ़ कर वेदाध्ययन समाप्त कर आश्रम से आये ब्रह्मचारी के लिए मार्ग छोड़ देना चाहिए। (२-१३८) नौकरों को भोजन करा लेने से पूर्व भोजन नहीं करना चाहिए। (३-११६) नवजात शिशु को सोने के चम्मच से शहद चटाना चाहिए। (२-२९) जाति बहिष्कृतों और कुत्तों पर भी भोजन फेंकना नहीं चाहिए—उन्हें भद्रतापूर्वक भोजन परोसना चाहिए। (३-९२)

मैथ्यू आर्नल्ड ने संस्कृति की परिभाषा करते हुए कहा था कि "माधुर्य और प्रकाश का ही नाम संस्कृति है।" मनु ने यह बात युगों पूर्व कह दी थी, जब उन्होंने कहा कि "सत्य बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय सत्य मत बोलो। प्रिय असत्य भी मत बोलो, यही सनातन धर्म है।" (४-१३८) मौन प्रार्थना से बढ़कर कुछ नहीं। नियमित रूप से यज्ञ करने की अपेक्षा ओम् का जप करना दस गुना श्रेष्ठ है। यदि जप सुनाई भी न पड़े, तो सौ गुना श्रेष्ठ है और यदि जप मानसिक हो, तो हजार गुना श्रेष्ठ है। (११-८५)

मनुस्मृति में ऐसे-ऐसे अनमोल रत्न भरे पड़े हैं। बुद्धिमान् लोग रत्नों को गोबर से अलग कर लेते हैं—मूर्खों को केवल गोबर दिखाई देता है, रत्न दिखाई ही नहीं देते।

□ □ □

[पृष्ठ १८ का शेष]

सातवें से पूछा गया कि "मनुष्य देवता कैसे बन सकता है?" उत्तर मिला कि "ऐसे काम करने से, जो मनुष्य न कर सकें।"

आठवें ने कहा कि "मृत्यु जीवन से भी विचित्र है, क्योंकि इसमें इतनी अधिक तकलीफें हैं।"

अन्तिम प्रश्न था कि "मनुष्य के लिए कब तक जीना मुनासिब है?" उत्तर मिला कि "तब तक, जब मृत्यु जीवन की अपेक्षा अधिक वांछनीय न लगने लगे।"

एक भारतीय साधु था, जिसे यूनानियों ने "स्फ़ाइन्स कोलानस" का नाम दिया है। उसने बहुत घमंड और कठोरता के साथ कहा कि वह वस्त्र उतार दे और नग्न होकर मेरी बात सुने, अन्यथा मैं उसे सम्बोधित करते हुए एक शब्द भी न बोलूंगा।

यह है वास्तविकता, जिसे झुठलाकर भारत में सिकन्दर की "विजय" की गाथाएं घड़ी गई हैं। इस प्रकार की मनघड़न्त गाथाओं से भारतीयों में अत्यन्त हीन भावना भरने का प्रयत्न किया गया है। जब तक ऐसी मनघड़न्त बातों की पोल न खोली जाये, हम एक स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में जीने की आशा नहीं कर सकते।

□ □ □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाइयों का भ्रामक प्रचार

दिसम्बर १९७८ में श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने छठी लोकसभा में जो धर्म-स्वातन्त्र्य विधेयक प्रस्तुत किया था, वह २२ अगस्त को राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा भंग कर दिये जाने से स्वत: ही प्रभावहीन हो गया है—इस अर्थ में कि अब सातवीं लोकसभा में उस पर तभी विचार किया जा सकेगा, जब त्यागी जी अथवा कोई अन्य सदस्य उसे नये सिरे से पेश करें। गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों के लिए लॉटरी डाली जाती है। यदि लॉटरी में इस विधेयक का नम्बर आ भी गया, तो भी इसके स्वीकृत किये जाने की कोई आशा नहीं, क्योंकि प्राय: सभी दल और गुट इस विधेयक का विरोध कर चुके हैं फलस्वरूप ईसाइयत के प्रसार की समस्या पर विचार करते समय इस विधेयक को बीच में लाना निरर्थक है। लेकिन इस वस्तुस्थिति को नकारा नहीं जा सकता कि यह विधेयक प्रस्तुत हुआ और ईसाइयों ने इस का प्रबल विरोध किया, यद्यपि यह न्याय की कसौटी पर खरा उतरता था। राज्यों में इस आशय के विधेयक स्वीकृत भी हुए हैं। आइए, ज़रा उन कानूनों पर एक दृष्टि डालें और यह भी देखें कि जब उन कानूनों को न्यायालयों में चुनौती दी गई, तब न्यायालयों ने क्या फैसले दिये।

हाल ही में अरुणाचल प्रदेश सरकार ने धर्मस्वातन्त्र्य कानून बनाया। इस कानून द्वारा बल प्रयोग, धोखे और लालच से धर्मान्तरण को हस्तक्षेप योग्य अपराध ठहराया गया है।

ईसाई मिशनरी गतिविधि जांच समिति (जिसके अध्यक्ष नागपुर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति भवानी शंकर नियोगी थे) की सिफ़ारिशों के आधार पर मध्य प्रदेश सरकार ने धर्मस्वातन्त्र्य कानून, १९६८ के नाम से एक कानून लागू किया, ताकि बलपूर्वक किये जाने वाले धर्मान्तरण को रोका जा सके। उड़ीसा विधानमंडल ने भी ऐसा ही कानून लागू किया। जनवरी १९७७ में मिशनरियों ने उच्चतम न्यायालय में इन कानूनों को चुनौती दी। न्यायालय ने दोनों कानूनों को वैध ठहराया। राजस्थान, गुजरात और बिहार की सरकारों ने भी इसी प्रकार के कानून बनाने चाहे, लेकिन कुछ हिन्दू विरोधी तत्त्वों के साथ मिलकर मिशनरियों ने इसका विरोध किया, जिस पर इन राज्यों की सरकारों ने अपना विचार छोड़ दिया।

मतलब यह है कि जब-जब इस आशय के कानून बने मिशनरियों की ओर से उनका विरोध हुआ। आखिर क्यों? यह एक तथ्य है कि मिशनरियों ने अपनी हल-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चलें मुख्यतः उन गांवों, वनों और पर्वतीय प्रदेशों में केन्द्रित कर रखी हैं, जिन में अधिकतः भोले-भोले हरिजन और देहाती रहते हैं, जो अपनी दरिद्रता, अज्ञान और निरक्षरता के कारण मक्कार मिशनरियों के जाल में फंस जाते है। ईसाइयों की संख्या बढ़ने के जो दुष्परिणाम निकलते हैं, उन्हें देखते हुए अनुचित, अवैध और बलप्रयोग के साधनों से किये जाने वाले धर्मान्तिरण पर तुरन्त रोक लगा दी जानी चाहिए।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने जो विधेयक पेश किया था, वह ऐसे अवांछनीय धर्मान्तरण को रोकने के लिए ही था। इस विधेयक में निहित व्यवस्थाओं के पालन से राष्ट्रीय अखंडता, सौहार्द और शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता। यदि यह विधेयक संसदीय कानून का रूप धारण कर लेता, तो सारे भारत पर लागू होता। मिशनरी इस विधेयक के विरुद्ध गला फाड़-फाड़ कर इसलिए चिल्ला रहे थे, क्योंकि इससे उनके धर्मान्तरण सम्बन्धी नापाक इरादों का खात्मा हो जाता। यही कारण है कि भारत के कैथॉलिक समाचारपत्रों और ईसाई सम्प्रदाय के अनेक वर्गों ने इस विधेयक के विरुद्ध इतनी उग्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। जहां ईसाइयों की संख्या पर्याप्त थी, वहां जलूस निकाले गये और सभाएं की गईं।

ईसाइयों ने जनता पार्टी की सरकार को (जो अब सत्ता त्याग चुकी है) झुकाने के लिए सब ओर से दबाव डाला। पादरियों ने सब निष्ठावान् ईसाईयों से अपील की कि वे इस विधेयक के विरुद्ध प्रोटैस्ट करें। प्रोटैस्ट करने के लिए प्रधान मंत्री को पत्र लिखे गये। दूसरी ओर हिन्दू लम्बी चादर तानकर सोये रहे।

हमें तो इस बात की आशंका है कि धर्मप्रचार की जाड़ में निर्धन और भोले भाले हरिजनों और आदिवासियों का बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण किया जायेगा। नागालेंड, मेघालय और मिज़ोरम के उदाहरण इस बात के द्योतक कि मिशनरियों ने इस विधयक का विरोध क्यों किया? इस प्रकार के अवांछनीय धर्मान्तरण से हमारे देश की सुरक्षा के लिए वास्तविक खतरा पैदा हो सकता है।

रोमन कैथॉलिक चर्च के विदेशी मिशनरी पादरी एस० फ़ुक्स का प्रस्ताव है कि भारत में कैथॉलिक जनसंख्या को दो प्रतिशत से बढ़ाकर बीस प्रतिशत करने के लिए हरिजनों का बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण किया जाये। उन्होंने लिखा कि "भारत में कैथॉलिक चर्च अपने अस्तित्व की रक्षा और ईसा की प्रभावशाली साक्षी बनने के लिए चाहती है कि कैथॉलिकों की संख्या में तुरन्त पर्याप्त वृद्धि हो।" उन्होंने यह भी लिखा कि "यदि उत्तर भारत में हरिजनों को बड़े पैमाने पर ईसाई बनाना है, तो हमें संगठित रूप में और बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण का लक्ष्य निर्धारित करके उसके लिए योजना बनानी चाहिए। हमें कम-से-कम दस लाख व्यक्तियों को ईसाई बनाने का लक्ष्य लेकर चलना चाहिए।"

बहुसंख्यक वर्ग इस प्रस्तावित धर्मान्तरण से आशंकित है, क्योंकि यह देश की सुरक्षा के लिए खतरा है। समझ में नहीं आता कि केवल हरिजनों और आदिवासियों को शिकार क्यों बनाया जाता है? शिक्षित और समृद्ध लोगों को ईसाई बनाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया जाता? इसका मतलब तो यह हुआ कि ईसाइयत केवल उन लोगों के लिए है जिन्हें सरलता से ठगा जा सके—सबके लिए नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आरोप लगाया गया कि यदि यह विधेयक स्वीकृत कर लिया गया, तो देश-भर में वैध धर्मान्तरण भी अवैध हो जाएगा। विधेयक के विरोधी मानते थे कि वे विधेयक के उद्देश्य के विरुद्ध नहीं। विधेयक का उद्देश्य तो यह था कि "बलप्रयोग, लालच, छल अथवा धोखे द्वारा किया जाने वाला धर्मान्तरण रोका जाए।" इस पर किसी विरोधी को आपत्ति न हो सकती थी। उन्हें आपत्ति थी बलप्रयोग, लालच, छल, धोखा—इन शब्दों की व्याख्या पर।

ईसाइयत के ये दीवाने भूल जाते हैं कि धर्मान्तरण का मतलब है एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को ग्रहण करना। यदि कोई हिन्दू ईसाई बनता है, तो यह धर्मान्तिरण कहलाएगा। इसी प्रकार यदि कोई ईसाई हिन्दू बनता है, तो यह भी धर्मान्तरण कहलाएगा। दोनों प्रसंगों में यदि कोई व्यक्ति बलप्रयोग, लालच, धोखे अथवा छल द्वारा धर्मान्तरण करता है, तो वह कानूनन अपराधी और दंडनीय होगा। कानून सबके लिए है। ऐसे ही लोगों ने अरुणाचल प्रदेश की सरकार पर आरोप लगाया कि "ईसाइयों से कहा जा रहा है कि सरकारी नौकरियां और ठेके प्राप्त करने से पूर्व उन्हें लिखकर देना होगा कि वे ईसाइयत छोड़ रहे हैं।" अरुणाचल प्रदेश का विधेयक कानून का रूप धारण कर चुका है और यदि वहां के किसी अधिकारी ने किसी ईसाई को धर्मान्तरण पर विवश किया है, तो उस पर मुकद्दमा चलाया जा सकता है। ऐसी बचकाना बातों से उन्हीं लोगों को बहकाया जा सकता है, जिन्हें वास्तविकता का ज्ञान नहीं।

आइए, अब कुछ अन्य शब्दों की व्याख्या पर दृष्टि डालें, जिससे आशंकित होकर इन लोगों ने विधेयक का विरोध किया। बलप्रयोग में दैवी अप्रसन्नता की धमकी भी शामिल है। लालच में आर्थिक व अन्य किसी प्रकार का लाभ पहुंचाना भी शामिल है। इन लोगों के विचार में दो व्याख्याएं हैं जो वैध धर्मान्तरण को भी अवैध बना देती हैं और फलस्वरूप इनके विचार में पूरे ईसाई सम्प्रदाय को इन व्यवस्थाओं का विरोध करना चाहिए।

किसी भी निष्पक्ष व्यक्ति को यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देगी कि ये व्याख्याएं सावधानी की खातिर की गई हैं। हमारे देश में ऐसा कोई कानून नहीं बन सकता, जो संविधान के विरुद्ध हो और संविधान में धर्म प्रचार के अधिकार की स्पष्ट रूप से गारंटी दी गई है। धर्म परिवर्त्तन न करने पर किसी को दैवी अप्रसन्नता की धमकी देना निश्चित रूप से अनुचित उपाय है। कोई भी धर्मशास्त्री अथवा सुशिक्षित व्यक्ति इस कथन का समर्थन न करेगा कि इस प्रकार की धमकियां उचित हैं, क्योंकि इस प्रकार की धमकियां देना ईसाइयत की शिक्षाओं के विरुद्ध है।

दूसरा शब्द है "अन्य प्रकार से", जिसकी व्याख्या पर उन्हें आपत्ति है। यहां भी वे इस शब्द का ऐसा अर्थ निकाल रहे हैं, जो सन्दर्भ में फ़िट नहीं बैठता। विधेयक में कहा गया था कि "लालच में आर्थिक अथवा अन्य प्रकार से लाभ पहुंचाना शामिल है।" जैसा कि स्पष्ट है, लाभ पहुंचाने में नकद अथवा वस्तु देना, सामाजिक लाभ, पदोन्नति और इस प्रकार के अन्य लाभ शामिल हैं, जो सांसरिक लाभ हैं, भगवान् द्वारा दिए जाने वाले आध्यात्मिक लाभ नहीं। भगवान् मानवीय नियमों से बाध्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं। लेकिन विधेयक का विरोध करने के लिए ईसाइयों ने कहना शुरू कर दिया कि इस विधेयक के कानून बनने पर तो आध्यात्मिक लाभों की बात करना भी लालच देना माना जायेगा। उन्हीं के शब्दों में "यह कहना भी लालच देना माना जायेगा कि ईसाई बनने से आध्यात्मिक लाभ होंगे और प्रभु की कृपा होगी।"

हमारे देश के समझदार नागरिकों को ऐसे भ्रामक प्रचार से गुमराह नहीं होना चाहिए जो इन तथाकथित ईसाई धर्म निरपेक्षतावादियों ने प्रारम्भ कर रखा था।

भारत में ईसाइयों की जन संख्या

राज्य	ईसाइयों की जनसंख्या	कुल जनसंख्या
भारत	१,४२,३३,३८२	५४,७६,४६,०८६
आन्ध्र प्रदेश	१८,२३,४३६	४,३५,०२,७०८
असम	६,६७,१५१	१,४६,५७,५४२
बिहार	६,५८,७१७	५,६३,५३,३६६
गुजरात	१,०६,३४१	२,६६,६७,५७५
हरयाणा	६,८०२	१,००,३६,८०८
हिमाचल प्रदेश	३,५५६	३४,६६,४३४
जम्मू व कश्मीर	७,१८२	४६,१६,६३२
कर्नाटक	६,१३,०२६	२,६२,६६,०१४
केरल	४४,६४,०८६	२,१३,४७,३७५
मध्य प्रदेश	२,८६,०७२	४,१६,५४,११६
महाराष्ट्र	७,१७,१७४	५,०४,१२,२३५
मणिपुर	२,७६,२४३	१०,७२,७५३
मेघालय	४,७५,२६७	१०,११,६६६
नागालैंड	३,४४,७६८	५,१६,४४६
ओड़िसा	३,७८,८८८	२,१६,४४,६१५
पंजाब	१,६२,२०२	१,३५,५१,०६४
राजस्थान	३०,२०२	२,५७,६५,८०६
तमिलनाडु	२३,६७,७५६	४,११,६६,१६८
त्रिपुरा	१५,७१३	१५,५६,३४२
उत्तरप्रदेश	१,३१,८१०	८,८३,४१,४४४
पश्चिम बंगाल	२,५१,७५२	४,४३,१२,०११
अंडमान व निकोबार द्वीप	३०,३४२	१,१५,१३३
अरुणाचल प्रदेश	३,६८४	४,६७,५११
चंडीगढ़	२,५०४	२,५७,२५१
दादरा व नगर हवेली	१,१६८	७४,१७०
दिल्ली	४२,७२०	४०,६५,६६८
गोआ, दमन और दीप	२,७२,५०६	८,५७,७७१
लक्ष द्वीप	२३६	३१,८१०
पांडिचेरी	४१,२६६	४,७१,७०७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घटती हुई हिन्दू बहुसंख्या वाले जिले

राज्य	जिले का नाम	मुसलमानों और ईसाइयों की कुल मिलाकर प्रतिशत जनसंख्या (लगभग)	
		१९७१	१९७९
जम्मू	पांच जिले	९१.८०	९६
कश्मीर	लद्दाख	४६.१४	४९.६८
उत्तर प्रदेश	रामपुर	४६.३४	५०.७४
	मुरादाबाद	३८.४६	४३.५६
तमिलनाडु	कन्याकुमारी	४३.१८	४७.५२
केरल	इड्किकी	६०	६५.४१
	मल्लपुरम्	६५.९२	७१.९४
	कोट्टायम्	५१.३६	५६.६८
	एर्णाकुलम्	५३.८७	५८.३२
मिनिकाय द्वीप		९२	९९
गोआ	दमन	४५.२१	४८.६०
उत्तर-पूर्वी सीमा प्रदेश			
मणिपुर	मणिपुर उत्तर	८१	८६.४३
	मणिपुर दक्षिण	८२	८८.५६
	मणिपुर पश्चिम	८२	८७.४८
	मणिपुर पूर्व	८४	९०.७२
मिजोरम	पूरे राज्य में ईसाई बहुसंख्यक हैं।		
नागालैंड	कोहिमा	५६.८८	६१.५६
	मोकोकचुंग	८९	९६.१२
	त्वेनसांग	५६.७६	६१.५६
मेघालय	खासिया जयन्ती हिल्स	५१.८९	५६.१६
	गारो हिल्स	४६.१४	४९.६८
अरुणाचल प्रदेश	लोहित जिला	सुबांसिरी जिला	पूरा राज्य
१९५१	शून्य	शून्य	शून्य
१९६१	२८७	१८७	१४३८
१९७१	१५०४	७८३	२५९३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१. १. १९७३ तक रजिस्टर्ड विदेशी मिशनरियों की राज्य वार संख्या—

राज्य का नाम	विदेशी मिशनरियों की संख्या
आन्ध्र प्रदेश	३७१
असम	७२
बिहार	३७६
गुजरात	१५७
हरयाणा	१०
हिमाचल प्रदेश	३३
जम्मू-कशमीर	४०
केरल	१४९
मध्य प्रदेश	२१३
महाराष्ट्र	६६६
कर्नाटक	४६३
मेघालय	८१
नागालैंड	९
ओड़िसा	१०९
पंजाब	८५
राजस्थान	१५
तमिलनाडु	८१६
उत्तर प्रदेश	४०३
पश्चिम बंगाल	४१५
मणिपुर	६
दिल्ली	१४५
गोआ-दमन-दीव	२
पांडिचेरी	२०

नोट—जम्मू-कशमीर, बिहार और पंजाब के आंकड़े १. १. १९७२ तक के हैं।

विदेशी पादरियों के षडयन्त्र विफल करने के लिए सर्वत्र भारत रक्षा समिति बनाएं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जमशेदपुर में दंगा किसने कराया ?

—सत्यपाल शास्त्री

पिछले २८ अगस्त को जमशेदपुर में फिर दंगा हो गया। पाठकों को याद होगा कि इससे पूर्व भी ११ और १२ अप्रैल को जमशेदपुर में दंगा हुआ था, जिसमें सौ से अधिक व्यक्ति मारे गये थे। इस बार के दंगे में भी २५ व्यक्तियों के प्राण गये हैं। प्रश्न यह है कि साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं ? कुछ नेताओं का तो यह पेशा ही है कि जब कहीं दंगा होता है, वे अगले ही दिन वक्तव्य दे देते हैं कि यह दंगा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने करवाया। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही होती है। जमशेदपुर के ताज़ा दंगे को ही लें। दो सितम्बर १९७९ के "हिन्दुस्तान टाइम्स" में उसके पटना स्थित संवाददाता एन०के० ठाकुर लिखते हैं कि "हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनी "गुंडा शक्ति" के साथ मुठभेड़ के लिए तैयारियां कर रहे थे। दोनों सम्प्रदायों के "दादाओं" में हथियारों और पैसे के लिए होड़ लगी हुई थी। कुछ विदेशी दूतावासों से भी वित्तीय सहायता ली गई।

सरकार का गुप्तचर विभाग प्रत्यक्षतः उन गुप्त एजेन्सियों का पता लगाने अथवा उन की शिनाख्त करने में असफल रहा, जो "धर्म पिताओं" को आर्थिक सहायता दे रहे थे अथवा बड़े पैमाने पर बम बनाने के लिए उन्हें विस्फोटक पदार्थ सप्लाई कर रहे थे। विस्फोटक पदार्थों के चोरी-छिपे लाने के जिन दो-चार मामलों का पता भी चला, उनकी गहरी छानबीन न की गई। यहां यह लिख देना प्रासंगिक होगा कि हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड और यूरेनियम कार्पोरेशन ऑफ़ इंडिया (दो प्रमुख केन्द्रीय अंडरटेकिंग) से हाल ही में डायनामाइट की दो हज़ार छड़ों और ११० किलोग्राम विस्फोटक पदार्थों की चोरी हुई।

पिछले कुछ दिनों से जमशेदपुर सब किस्म के समाज-विरोधी और अनैतिक तत्त्वों के आश्रय स्थल के रूप में कुख्यात है। बताया जाता है कि ये तत्त्व बड़े पैमाने पर दंगे कराने के लिए बड़ी संख्या में बमों और अवैध हथियारों के निर्माण में लगे रहे। आश्चर्य की बात है कि स्थानीय प्रशासन इन तत्त्वों के विरुद्ध कार्रवाई करने में असफल रहा।

इन तत्त्वों के अतिरिक्त समाज के अन्य वर्गों के नेताओं का स्वार्थ भी इस बात में निहित था कि साम्प्रदायिक तनाव का वातावरण बना रहे। मध्यावधि

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुनाव को दृष्टि में रखकर कुछ ट्रेड यूनियन नेता जीतोड़ कोशिश कर रहे हैं कि उत्तेजक भाषण देकर लगभग एक लाख मुस्लिम मतदाताओं को अपने पक्ष में कर लें। सच तो यह है कि टाटा वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष श्री गोपाल ने हाल ही में मुसलमानों की एक मज़हबी सभा में घोषणा की वह जमशेदपुर से इन्दिरा कांग्रेस के उम्मीदवार हैं। बताया जाता है कि बिहार सरकार ने उक्त सभा में दिये गये इस "उत्तेजक भाषण" पर गम्भीर आपत्ति की।

इस बीच साम्प्रदायिक समस्या को सदा के लिए सुलझाने की खातिर टाटाओं ने एक विचित्र प्रस्ताव रखा है। योजना यह है कि सब हिन्दुओं और मुसलमानों को उन क्षेत्रों में स्थानान्तरित कर दिया जाये, जहां उन की बहुसंख्या है। लेकिन यह योजना राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार दोनों में से किसी को भी पसन्द नहीं आई। सच तो यह है कि केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री धनिक लाल मंडल ने, जो ३० अगस्त को दंगापीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर थे, इस प्रस्ताव को इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया कि इससे समस्या का समाधान तो क्या होगा, उलटे समस्या अधिक जटिल हो जायेगी।

टाटा आयरन ऐंड स्टील कम्पनी के प्रबन्ध व्यवस्थापक रूसी मोदी ने इस प्रस्ताव पर मुख्यमन्त्री रामसुन्दर दास से विचार विमर्श किया। अभी मुख्यमन्त्री की प्रतिक्रिया ज्ञात नहीं हुई, लेकिन राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने इस संवाददाता से कहा कि इस योजना की स्वीकृति का मतलब होगा उस द्विराष्ट्र सिद्धान्त का पुनरुज्जीवन, जिसने १९४७ में देश का विभाजन कराया। इतना ही नहीं, इस योजना से ऐसी बू आती है कि राज्य सरकार के टाटा ज़मींदारी उन्मूलन (संशोधन) क़ानून को रद्द करने के लिए शहर में "छोटे पाकिस्तान" की लालसा भड़काई जाये।

पिछले अप्रैल से ही अल्पसंख्यक वर्ग के मज़हबी नेता युद्ध के नगाड़े बजा रहे हैं। वे न केवल अपने सम्प्रदाय के लोगों को संगठित कर रहे हैं, अपितु उन्हें भड़का भी रहे हैं कि वे स्वाधीनता दिवस और ईद के अवसर पर अपने घरों पर काले झंडे लहरायें और इस प्रकार अप्रैल में हुए दंगों पर अपना रोष प्रकट करें। धातकीडीह, क़दमा और शास्त्रीनगर में वे अपने अनुयायियों को इस "फ़तवे" पर अमल के लिए राज़ी करने में सफल हो गये। यही हैं वे क्षेत्र, जिनमें इस बार दंगों का ज़ोर सबसे अधिक रहा।

इन में से एक नेता मौलाना अर्शदुल क़ादरी ने नेशनल डैमोक्रेटिक फ़ोरम नामक एक संगठन बनाने की घोषणा की। इस संगठन ने मांग की कि पुलिस और अर्ध-सैनिक संस्थानों में अल्पसंख्यक वर्ग को आनुपातिक प्रतिनिधित्व दिया जाये और नगर की हिन्दू व मुस्लिम आबादी को उन-उन क्षेत्रों में स्थानान्तरित कर दिया जाये, जो इनके गढ़ हैं। १५ अगस्त से १७ अगस्त तक तीन दिन फ़ोरम की ओर से अत्यन्त उत्तेजक पर्चे बाँटे गये।

२६ अगस्त की शाम को मौलाना क़ादरी ने एक मज़हबी सभा में अत्यन्त उत्तेजक भाषण दिया। उन्होंने कहा कि "वह दिन दूर नहीं, जब हम पुनः इस देश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
पर शासन करेंगे। स्वाधीनता के बाद से बहुसंख्यक सम्प्रदाय ने हमें नेस्तोनाबूद करने के सब प्रयत्न किये। इस के बावजूद अल्लाह की मेहरबानी से हमारी आबादी, जो स्वाधीनता मिलने के समय साढ़े आठ करोड़ थी, अब बढ़कर सत्रह करोड़ हो गई है। यदि सरकार को इसमें कोई सन्देह है, तो वह नई मर्दुमशुमारी करवा कर देखले।"

दो दिन पूर्व दो मुसलमान बम निर्माता अपने गुलमुरी टिस्को (टाटा आयरन ऐंड स्टील कम्पनी के फ़्लैटों में हुए विस्फोट में सख्त घायल हुए। उन में से एक नसीम बाद में मर गया नसीम अल्पसंख्यकों में राबिनहुड के नाम से मशहूर अनवर का साथी था। अनवर फ़रवरी में पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया था। इन फ्लैटों से बड़ी संख्या में बमों के खोल मिले। तब भी अनेक लोगों को सन्देह हुआ था कि इस नगर में पुन: दंगे करवाने के लिए टिस्को में बम बनाये जा रहे थे। लेकिन शरारत को तभी दबा देने के लिए अधिकारियों ने कुछ न किया। सच तो यह है कि वे चैन की बंसी बजाते रहे।

१५ अगस्त तक इस नगर के प्रत्येक निवासी पर यह बात स्पष्ट हो गई थी कि नगर में साम्प्रदायिक हिंसा की लहर फिर आनेवाली है। कारण यह है कि साम्प्रदायिक हिंसा के लिए बमों और रक्षा व आक्रमण के हथियारों को जमा करने और उनके निर्माण का काम चल रहा था। यदि तभी इस शरारत को रोकने के लिए अहतियाती कार्रवाई की जाती, तो २६ अगस्त को निर्दोष व्यक्तियों—विशेषत: धातकीडीह के हरिजनों का कत्लेआम न होता। धातकीडीह की हरिजन बस्ती, जिसे साप्रदायिक रक्तपात और विनाश लीला झेलनी पड़ी, अधिकतर मिट्टी के बने झोंपड़ों की बस्ती हैं। इसकी आबादी लगभग तीन हजार है। इसके इर्दगिर्द अल्पसंख्यकों की आबादी है, जिसकी संख्या लगभग ३०,००० है।

अधिकतर हरिजन पुरुष समीपवर्ती टिस्को अस्पताल में काम करते हैं और उनकी महिलाएं धनी मुसलमान पड़ोसियों के यहां घरेलू नौकरानियां हैं। अब भी वे इतने शंकित और आतंकित हैं कि वे अपनी बस्तियों पर हुए निर्मम आक्रमण के बारे में कुछ कहनेतक में असमर्थ हैं।

विभिन्न सूत्रों से की गई पूछताछ से पता चला है कि मुसलमान पड़ोसियों ने यह योजना बनाकर आक्रमण किया कि हरिजनों को उस भूमि से खारिज कर दिया जाये, जो टिस्को ने उन्हें दी है, ताकि यह बस्ती उस संहत मुस्लिम क्षेत्र का हिस्सा बन जाये, जिसमें पूरा धातकीडीह व शास्त्रीनगर और क़दमा का कुछ हिस्सा आता है। यह क्षेत्र नगर के पश्चिमी भाग में है। मांगो पुलिम थाने के अन्तर्गत नगर के पूर्वी भाग में इस प्रकार का क्षेत्र पहले ही बन चुका है।

वस्तुत: तनाव तो २५ अगस्त को ही प्रारम्भ हो गया था, जब क़दमा में सिंह भूम जनता पार्टी के अध्यक्ष रामदास सिंह के घर पर बम से आक्रमण किया गया और एक मुस्लिम भीड़ ने अन्य हिन्दू निवासियों को पीटा और उनके घरों को लूटा। इसके बाद शास्त्रीनगर और क़दमा में बम विस्फोटों का सिलसिला चल निकला। हिन्दुओं ने बदला तब लिया, जब क़दमा क्षत्र में दक्षिण भारतीयों के गणेश पूजा पंडाल को बमों से उड़ाने का प्रयत्न किया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबसे दर्दनाक घटना २८ अगस्त को हुई, जब एक हथियारबन्द मुस्लिम भीड़ ने बिना किसी उत्तेजना के घातकीडीह की हरिजन बस्ती में आतंक का साम्राज्य स्थापित कर दिया। लगभग दो घंटे तक भीड़ निर्धन हरिजनों की अन्धाधुन्ध हत्या, शूटिंग, बमविस्फोटों और मकान जलाने में लगी रही। मुश्किल से २०० गज दूर क्षेत्र में तैनात केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस असहाय खड़ी देखती रही, क्योंकि अधिकारियों की ओर से उन्हें गोली चलाने का आदेश न था। कोहेनूरराम नामक एक हरिजन मेडिकल छात्र, जो अपने पिता का इकलौता पुत्र था, मौके पर ही मारा गया। यदि स्थानीय प्रशासन सचेत होता, तो हरिजन बस्ती इतने बड़े पैमाने पर हिंसा और गुंडागर्दी का शिकार न होती।"

ये हैं तथ्य। सरकार की दृष्टि में भी तथ्य यही हैं। इसी लिए दंगों के भड़काने वाले मौलाना अर्शदुल क़ादरी गिरफ़्तार भी किये गये। लेकिन जैसा हमने ऊपर लिखा, कुछ नेताओं का तो यह पेशा ही है कि कहीं भी दंगा हो, वह बयान दे देते है कि यह दंगा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने करवाया है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। २८ अगस्त को दंगा हुआ और २९ अगस्त को दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी (स्वर्ण सिंह) की अध्यक्ष श्रीमती सुभद्रा जोशी ने बयान दिया कि यह दंगा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने करवाया है। स्वर्ण सिंह कांग्रेस और इन्दिरा कांग्रेस आपस में चाहे जितना भी लड़े, लेकिन रा०स्व०संघ से द्वेष के मामले में दोनों एक-से हैं। जरा देखिए कि बिहार की इन्दिरा कांग्रेस के नेता डा० जगन्नाथ मिश्र ने उपरिलिखित घटनाओं को कैसे तोड़-मरोड़कर पेश किया है। वह लिखते हैं कि "हमारे दल को यह देखकर पीड़ा हुई कि जमशेदपुर के हरिजन युवकों के दिमाग़ में संकीर्णता और कट्टरता भरी जा रही है। हाल ही में जमशेदपुर की हरिजन बस्तियों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाएं शुरू की गई हैं और हरिजन युवकों को इसमें भाग लेने को विवश किया जा रहा है। इसकी परिणति सम्प्रदायों के बीच पारस्परिक घृणा के रूप में हुई है।"

डॉ० मिश्र ने कहा कि "धार्मिक नेता मौलाना अर्शदुल क़ादरी की गिरफ़्तारी और सड़कों पर उन्हें घुमाया जाना जनता के एक वर्ग को भड़काने का क्रूर प्रयास था। उन्होंने कहा कि इस बात का भी औचित्य समझ में नहीं आता कि मौलाना क़ादरी की गिरफ़्तारी उपप्रधानमन्त्री यशवन्त राव चव्हाण के कहने पर हुई, क्योंकि ऐसा कोई सबूत नहीं कि उन्होंने लोगों को भड़काया था।"

आपने देखा कि किस प्रकार निर्दोष व्यक्तियों और संगठनों को दोषी और दोषी व्यक्तियों और संगठनों को निर्दोष ठहराया जा रहा है। ऐसी हालत में दंगे कैसे रुक सकते हैं? दंगे तो तभी रुकेंगे, जब दोनों पक्ष आत्मनिरीक्षण करें। दंगे रोकने की ज़िम्मेदारी सरकार पर डालने से यह समस्या हल न होगी, क्योंकि सरकार एक-एक व्यक्ति का हृदय परिवर्त्तन नहीं कर सकती। यह काम तो धार्मिक और स्वयंसेवी संगठन ही कर सकते हैं।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० धर्मवीर

हिमालय की याद

टेलीफोन की घंटी बज उठी। मुझे कोई बुला रहा था। परन्तु मैं न जा सकता था। बहुत दिनोंसे विचारों को ऊहापोह चल रही थी, और चाहकर भी हिमालय की ओर जाना नहीं हो पा रहा था। विचार किया, निश्चय में बदला और संकल्प को मूर्त रूप देने का सुअवसर आ ही गया। १६ जून को दिल्ली-मनाली बस से सीधे कुल्लू पहुंचे और वहां से उसी दिन मनाली। सायं काल सूर्यास्त का समय कहाँ से चले थे कहां पहुंच गये। क्या सब वहाँ नहीं पहुंच सकते ? पहुंचते हैं। बहुत लोग, परन्तु वे भी थोड़े हैं। कुछ जा नहीं सकते; कुछ जाकर रम नहीं सकते। पहुंच कर लगा, चले थे जहां से वहाँ की गर्मी, लू, पसीना, व्याकुलता क्या यहाँ केवल कल्पना हैं। यथार्थ से कल्पना लोक तक जाने में सूखा मैदान छोड़ा। ऊंचे पहाड़ी मार्ग पर वहां से और भी ऊंचे पहाड़ पर चलते रहे।

दिल्ली से रात्रि के दस बजे चण्डीगढ़ पहुंचे। वहाँ से रोपड़ भाखड़ा नहर के साथ साथ कुछ दूर चलकर हिमालय की सीमा में प्रवेश किया। रात्रि के गहन अन्धकार में कुछ दिखना सम्भव नहीं था। कोई बस स्टेशन आता था, बस रुकती थी और मालूम होता यह अमुक स्थान है। बस इतना ही परिचय। पहली बार चढ़ाई पर जाकर बस रुकी स्वर्ग घाट। वहाँ से लगा आगे स्वर्ग का ही मार्ग है। निपट अन्धकार में फिर यात्रा हुई। दोनों ओर घने पेड़, मध्य में पहाड़, उधर त्रिवली में सड़क कभी अन्दर और कभी बाहर आती हुई ऊपर नीचे होती थी। उस पर बस चली आ रही थी। आंख खुली तो देखा तारों भरा आकाश का टुकड़ा धरती की गोद में आ गिरा है। लगा स्वप्न देख रहा हूं। दिखाया सहयात्रियों को लगा स्वप्न आज सत्य हो गया है यह मनोहारी दृश्य प्रकाशमान विद्युत्कन्दीलों का था, जो पर्वत की उपत्यका में हरियाली के बीच बसे विलासपुर को प्रकाशित कर रहे थे।

आते जाते हुए दूर से तारों की भांति जगमगाते विलासपुर का दृश्य बहुत सुन्दर लगता है। केवल कुछ समय के लिए। क्योंकि उस दृश्य के लिए दूसरे स्थान उपयुक्त नहीं। विलासपुर उतरे, रुके कुछ समय के लिए, रात्रि के चार बजे थे। बस आगे बढ़ी, कुछ प्रकाश होने लगा, साथ ही पहाड़ के मनोरम दृश्य नींद को दूर करने लगे। रास्ते में क्षीणकाय दो पर्वतों के मध्य की धारा सीढ़ीनुमा खेतों को तृप्त करती दीखती थी तो कहीं क्षीण धारा मिलकर कल्लोल करती वेगवती नदी के रूप में शिलाओं से संघर्ष करती दिखायी देती थी। स्थान स्थान पर पहाड़ी लोगों की समृद्धि के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

कतारें आजकल फलों से लदी दिखाई देती हैं। इस घाटी में इस काल में सेब, खुबानी बादाम और आलूबुखारों के बगीचे इस प्रकार फैल गये हैं कि वहां की स्थानीय जनता के लिए बहुत बड़ा आय का स्रोत हैं। अन्य सब साधन इनके सम्मुख नगण्य हैं। लाखों रुपये ठेका एक-एक बगीचे का होता है। फलदार वृक्षों की यह परम्परा यहां चढ़ाई से शुरू होकर सैकड़ों मील अन्दर बर्फ तक पहुंच गई है।

प्रात: काल होते होते झरनों के बहाव की कल कल ध्वनि, उन्हें रोक कर उनसे सिंचाई की सुविधा प्राप्त करना। आजकल की योजनाओं के सदर्भ में जब झरनों की धारा आज पर्वतीय जन जीवन में सम्पन्नता, समृद्धि, आत्मविश्वास और जागृति ला रहे हैं ऐसे में हम पहुंच गये सुन्दर नगर जहां बाँध, नहर और विकास के दृश्य सवेरे के समय सुन्दर लग रहे थे। यहांसे छोटी बस्तियों और कस्बों को पार करते करते पहुंच गये मण्डी। यह एक कस्बा है। यहां पर इस क्षेत्र की उपज मण्डी में आती है और उपयोग के योग्य नीचे से आने वाला सामान इस क्षेत्र के लोगों को सुलभ होता है। बीच में नदी और दोनों ओर बस्ती। नीचे पुल से पर्वत व नदी का दृश्य मनभावन लगता है। यहां से हमें बस बदलनी थी अत: आधा घन्टा रुकना पड़ा। क्योंकि आगे पर्वतीय मार्ग पर बसें मुड़ नहीं सकती। छोटी ४५ सीटों वाली बसे चलती हैं। वहां से नदी के किनारे चलते हुए पंडोह पहुचते हैं। दूर से बही जल की धारा बड़े वेग से बांध के कपाटों से होकर नीचे की ओर गिरती दीखती है, जिससे बहुत ऊंचाई तक जल की फुहारें वातावरण में शीतलता और सौन्दर्य के दृश्य उत्पन्न करती हैं। पानी के गिरने की आवाज बहुत दूर से ही अपना ध्यान आकर्षित कर लेती है, जिसकी गूंज पर्वतों में भयंकरता उत्पन्न करती है। यह वह बांध है जिसे भारतीय इन्जीनियरों की प्रतिभा ने यह रूप प्रदान कर नित्य ही महीनों और वर्षों से व्यर्थ बहकर पाकिस्तान जाने वाली जल राशि को बिजली उत्पादन और सिंचाई के लिए प्रदान कर भारतीय जनता के हितो की रक्षा की है।

व्यास नदी पर बने इस बांध से पर्वत श्रेणियों के वक्ष को चीर कर एक नहर द्वारा इसका जल सतलज नदी में डाला गया है और वह जल फिर भाखडा बांध में आता है। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर लगता है। बांध के पास बस का मार्ग दायें से व्यास के वाम किनारे पर चला जाता है और मनाली तक इसी तट से पहुचते हैं। बांध के आगे सड़क बन रही है,कभी सड़क पानी से इतनी ऊंची हो जाती है कि पहली बार जाने वाले लोगों को भय प्रतीत होता है। लगता है बस हमारी बस किसी भी क्षण गहरे खड्ड और बांध की गहरी जल राशि में विलीन हो जायेगी। रास्ता इतना संकरा है कि दो वाहन एक साथ नहीं चल सकते। अत: स्थान स्थान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया जा सके । नीचे नदी का पानी बांध के कारण मीलों तक एक तालाब की भांति स्थिर लगता है । कुल्लू की ओर बढ़ते बढ़ते सड़क पानी के निकट होने लगती है और जल की धारा में भी वेग आने लगता है । इस प्रकार सड़क कभी पास तो कभी दूर होती हुई नदी के उद्गम के हिम शिखरों के सान्निध्य में बढ़ती रहती है । साढ़े दस बजे हम पहुंचे कुल्लू । इसे देवताओ की घाटी कहते हैं । ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के बीच व्यास के किनारे पर चौड़ी पट्टी है । कुल्लू के लिए नौ किलोमीटर पूर्व भुन्तर में हवाई पट्टी है । हवाई जहाज से कुल्लू पहुंचा जा सकता है । ६ किलोमीटर पहले स्थान है शमसी । यहां पर सेब का रस निकालने का उद्योग है । यहां इस क्षेत्र में बोतलों में सेवा का रस मिलता है, जिसके सामने अन्य कृत्रिम पेय ठहर नहीं पाते । कुल्लू पहुंच कर हमारे सामने पहली प्रमुख समस्या थी आवास की । पता किया, आर्य समाज में स्थान मिले तो प्राथमिक रूप से हमारा जाना स्वाभाविक ही था । परन्तु जाकर कुछ प्रसन्नता नहीं हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की एक घटना याद आ गई, जब एक बार स्वामी जी ने सर्दी की रात में एक छात्र को धर्मशाला में स्थान पूंछने के लिए भेजा तो पूछकर आने वाले ने व्यवस्थापक के अनुचित व्यवहार पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि वहां धर्मशाला तो नहीं पर एक साला बैठा है, वह दरवाजा नहीं खोलता ।

लौट कर गुरुद्वारे में गये व्यवहार आर्य समाज से बिल्कुल विपरीत, बिना पूछे कुछ सेवादार ने कमरा दिया और नियमानुसार दो तीन दिन ठहरने के लिए कह दिया, स्नानादि कार्यों के लिए सुविधापूर्ण स्थान है । यात्रा की थकान मिटाकर नित्यकर्म सम्पन्न कर अपने कुछ उन लोगों की खोज में निकल पड़े, जिनके पते चलते समय मित्र बालेश्वर जी ने दिये थे । उनमें एक थे खन्ना जी । एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता और वकील । उस क्षेत्र के जाने माने व्यक्ति हैं । उन्हें खोजने में बहुत समय नहीं लगा । कोर्ट गये, उनसे मिले और अपना परिचय दिया । उन्होंने बड़े संक्षेप में परामर्श दिया । मनाली पहुंचने का कारण अगले दिन वहां ग्रीष्मकालीन बर्फ खेलों की प्रतियोगिता सम्पन्न होने वाली थी, और उसके लिए उपयोगी सूचनाएं भी प्राप्त हुईं जैसे बर्फ पर जाने के लिए आंखों पर रंगीन चश्मा, दस्ताने, पैरों में कपड़े के जूते रहने अनिवार्य हैं । साथ में मजबूत छड़ी हो तो पैदल चलने में सुविधा होती है । ये सब साधन मनाली से किराये पर मिल सकते हैं,जहां उन्हें प्रयोग कर लौटा दिया जा सकता है । हम अतिरिक्त सामान गुरुद्वारा के स्टोर में रखकर खन्ना जी के पत्र के साथ सायं काल की बस से मनाली के लिए चल दिये । कुल्लू से मनाली ४२ किलोमीटर का रास्ता है । घाटी पर्याप्त विस्तृत है । स्थान स्थान पर नव निर्माणके चिह्न देखने को मिलते हैं । विकास हो रहा है । मार्ग में कटराईं एक कस्बा है । यहां पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कई सरकारी दफ्तर व फार्म हैं। यहां से आगे मनाली प्रायः १८ किलोमीटर है। जैसे जैसे हमारी बस आगे बढ़ रही थी, वातावरण शीतल होता जा रहा था। व्यास की धारा भी अपने कलेवर को संकुचित करती प्रतीत हो रही थी। सायं काल यहां सूर्यास्त पर्याप्त विलम्ब से होता है और सूर्योदय भी बहुत शीघ्र। कारण मनाली प्रायः ६॥-७ हजार फुट ऊंचाई पर है और आस पास की पर्वत शृंखला १०-१४ हजार फुट ऊंची। इस कारण प्रकाश की आभा पर्वतों को बहुत समय तक प्रकाशित करती रहती है। हम मनाली पहुंचें, थोड़ा प्रकाश था, वातावरण में ठण्डक थी, उतरते ही दयार के सघन वन स्थित नदी की कल कल ध्वनि। सब कुछ वातावरण को और रमणीक बना रहा था। यहां हमारे लिए निवास की समस्या कठिन थी।

खन्ना जी ने अपने मित्र के नाम पत्र दिया था और सारी व्यवस्था का आश्वासन भी। हम बस से उतरे। कुलियों की भीड़ ने होटलों के नाम पर यात्रियों को खींचना शुरू किया। परन्तु हमने कहा कि हम तो किसी के घर जाना चाहते हैं। कुली से पूछा क्या तुम भोलाराम जी को जानते हो तो उसने तत्काल पूरा किया फर्म का नाम भोलाराम श्याम सुन्दर? हमने कहा हम केवल भोलाराम जी के यहां जाने के इच्छुक हैं। वह सामान लेकर दुकान पर पहुंचा और दुकान के कर्मचारी के साथ हम उनके घर पहुंचे। घर पर भोलाराम जी थे नहीं, उनकी सुपुत्री श्रीमती नेगी मिली। उन्होंने हमें एक कमरे में ठहरा दिया। कुछ समय बाद भोलाराम जी आये। उन्होंने अगले दिन होने वाले खेलों के लिए आवश्यक जानकारी लाने का आश्वासन देकर हमें निश्चित किया। हमने हाथ मुंह धोकर बाजार का चक्कर लगाने का विचार किया। भोलाराम जी ने अपना भवन आदर्श नगर माडल टाउन में नया ही बनवाया है। सबसे सुन्दर। सब आधुनिक सुविधाओं से युक्त। वहां रहकर किसी प्रकार की असुविधा का अनुभव कभी नहीं हुआ। आवास से, परिवार के आत्मीयता पूर्ण स्वभाव से। बाजार का एक चक्कर लगा अगले दिन के लिए कुछ सामान लेकर लौटे। भोजन गृह स्वामी के यहां करके रात्रि में विश्राम किया। हमें प्रातःकाल साढ़े चार बजे की बस से रोहतांग के लिए प्रस्थान करना था। प्रातः ज्योत्स्ना की नींद पहले ही खुल गई। शीघ्रता से आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर बस स्टैण्ड पहुंचे। वहां अभी चालक ही नहीं था। खोज करने पर अपने जैसे और यात्री दीख पड़े जिनके साथ इधर उधर घूमते हुए एक घन्टे में बस पर सवार हो सके। साढ़े पांच बजे बस ने प्रस्थान किया। मनाली की ऊंचाई प्रायः ६॥-७ हजार फुट है और रोहतांग दर्रे की ऊंचाई साढ़े तेरह हजार फुट। मनाली लेह मार्ग संसारके उच्चतम मार्गों में परिगणित किया जाता है। इस मार्गमें मात्र एक ही चोटी रोहतांग से ऊची है, जिसकी ऊंचाई साढ़े चौदह हजार फुट है। रोहतांग दर्रा मनाली से ५२ किलोमीटर दूरी पर है। मनाली से तिब्बत तक सारा ही राजमार्ग सेना के नियन्त्रण में है, जिसका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्माण और रखरखाव भी सेना की जिम्मेदारी है। बस के चलते ही ऊंचाई प्रारम्भ हो जाती है। सड़क व्यास के बायें किनारे की अपेक्षा दायें तट पर चलती है। सर्पाकार मार्ग ऊंची पहाड़ियों में ही दायें बायें घूमते हुए नजर आते हैं।

जून के मास में भी यहां गेहूं की फसल कट चुकी थी और कहीं २ कट रही थी और कहीं अभी कटने में पर्याप्त समय लगना था। आलू बोया जा चुका था। आजकल यहां के क्षेत्र में बहुत आलू होने लगा है, जिससे यहां समृद्धि आ रही है। इसी कारण स्थान की कमी अनुभव की जाकर जमीनों के भाव तेजी से बढ़ रहे हैं। बस से आगे बढ़ते और पीछे का रास्ता उतना ही गहरा होता जाता है। खेती के लिए पहाड़ पर बनी छोटी छोटी सीढ़ीनुमा क्यारियां और सिंचाई करते छोटे छोटे स्रोत अपना निराला सौन्दर्य रखते हैं। बस के साथ व्यास की धारा क्षीण से क्षीणतर होती हुई मात्र एक ऊंचे प्रपात में परिणत हो जाती है। यही है व्यासका उद्गम। यह प्रपात हिमनदों से जुड़ा सतत सहस्रों वर्षों से अपनी धारा द्वारा भारत की भूमि को आप्लावित करता रहता है। यहां पर हमारे मन में एक शंका बनी रही।

व्यास के उद्गम की अपेक्षा अन्य धारायें अधिक जल युक्त व प्रवाह वाली हैं। परन्तु व्यास की क्षीण धारा ही अपने में सबको विलीन करने में समर्थ होकर शेष को अस्तित्वहीन कर गई। व्यास का उद्गम सरकारी विवरण में राहला प्रपात से बतलाया गया है। जब कि स्थानीय व्यक्ति उससे अगले प्रपात को व्यास का उद्गम बता रहे थे। अस्तु। जाते हुए प्रकाश के साथ ही बर्फ की सफेदी से आंखमिचौनी होने लगती है। सड़क टेढ़ी-मेढ़ी होने से कभी तो बर्फ सामने लगती है और कभी छिप जाती है। जैसे जैसे ऊंचाई बढ़ती है बर्फ [illegible] अधिक मिलने लगती है। बर्फ के निकट होने का प्रथम प्रसंग होने से प्रायः यात्री उसके प्रति अधिक उत्सुकता व जिज्ञासा का भाव रखते हैं। जैसे ही बर्फ आती उसे छूने देखने तोड़ने को लालायित रहते। इस मार्ग पर अभी बर्फ हटाने का काम चल रहा था। अतः मिट्टी के ढेर जैसी बर्फ के कटाव से रास्ता निकाला गया है। दोनों ओर बर्फ के पहाड़ों के बीच जाती सड़क से वाहन चलते हैं। हिम के कारण सारी सड़क पर सदा ही पानी बहता रहता है। इन दिनों यह मार्ग ५० किलोमीटर ही यातायात के लिए खुला था अतः आगे वाहन से जाना संभव नहीं था। भेड़ बकरी व खच्चरों पर सामान लाने ले जाने वाले अपने रास्तों से आ जा रहे थे। इनका क्रम चलता रहता है।

५० किलोमीटर चलने में बस को प्रायः ३घन्टे लग गये। अन्त में दूर बर्फ पर सूर्य का स्वच्छ प्रकाश पड़ने लगा, तो पर्वतीय हिम भूमि पर दर्शकों व खिलाडियों की गतिविधियां दृष्टिगत होने लगीं। आज ग्रीष्मकालीन खेलों की अतिन्म प्रतियोगितायें सम्पन्न हो रही थीं। उद्घाटनकर्त्ता थे हिमाचल प्रदेश के मुख्य मन्त्री शान्ताकुमार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनकी गाड़ी पीछे से आती हुई बस से आगे निकल गई। हम धीरे धीरे वहीं पहुच गये बस से उतरते ही हमारे पैर पानी की धरती पर थे। सफेद एकदम सफेद मलि तो केवल प्राणी के पहुंचने की निशानी थी। नहीं तो सफेद चादर इन पर्वतों ने ओ रखी थी। उतरते ही ठन्डी बर्फानी हवा से सामना हुआ। लगा कि अब यहां अ रुकना संभव नहीं होगा। कुछ बच्चे और उनके माता पिता संभवत: जिन्हें का अनुभव या कल्पना नहीं थी उनकी दशा बड़ी दयनीय हो गई। उन्हें यहां अ रुकना संभव नहीं था। नंगे हाथ बर्फ से जमने लगते हैं और हिम के थपेड़े चेहरे व्याकुल कर देते हैं। यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रहती। शरीर १५-२० मि में तापमान के अनुकूल होने लगता हैं और वातावरण सह्य और सुखद लग लगता है। फिर तो नये वातावरण में मनोरञ्जन करने आये स्त्री पुरुषों का आह्ला देखते ही बनता है।

कुछ देर तो होते हुए खेलों को देखा जिन्हें चलचित्रों में प्राय: दिखाय जाता है। बहुत समय तक देखना नहीं रुचा। लगा दूर दूर ऊंची चोटियों की ब हमें बुला रही है। दूर की चोटी भी ऐसे लगती है जैसे पास में ही है। बर्फ पर चलना ऊंचे ऊचे दूर तक जाना बहुत अच्छा लगता है। बहुत से युगल ब की धरती पर लेट कर फोटो खिचा रहे थे। विभिन्न मुद्रायें बना रहे थे। हम घूमे खूब दूर तक पूरा पूरा आनन्द उठाया। पोली बर्फ में अकस्मात् धंस जाने प निकलना तभी संभव है जब कि बहुत गहरे पर पोलापन न हो। एक पंजाबी परिवार ने बर्फ के गोले बनाकर चूसना शुरू किया। औरों को भी इस बात के लिए प्रेरित किया। उन्हें तो इतना ही खेद था उनको इस बात की जानकारी होती तो वे चीनी का शर्बत लाते और जी भर के गोले खाते।

हमारे साथ कुछ बंगाली छात्रों का भी दल था जो काफी उत्साही थे। उन्होंने इतने गाने सुनाये कि लौटते हुए भी रास्ते का सारा समय गाने सुनने में बीत गया। खेल उस बर्फ पर पांच घण्टे तक चलते रहे। उस सर्दी में सैनिकों ने सुविधा के लिए एक कैन्टीन भी लगाई थी, जिसमें वे सस्ते में चाय, बर्फी, बड़े दे रहे थे। मांसाहारी लोगों को उस क्षेत्र में भोजन अधिक सरलता से मिल सकता है— अपेक्षाकृत निरामिष भोजियों के, क्यो कि मांस अण्डे मछली पहाड़ी लोग प्राय: खाते हैं। फिर आज कल के प्रचार और शिक्षा से प्रभावित लोगों का भी बाहुल्य रहता है। परन्तु शाकाहारी के लिए भोजन व भोजन के स्थान बड़े ही सीमित हो जाते हैं। अत: मात्र सेब का रस पीकर ही अपना काम चलाते रहे। बर्फ के ऊपर पांच घन्टों में ऐसे अवसर भी आये जब धीरे धीरे बादल के धुएं ने हमें अपने अन्दर समेट लिया। तब लगता है कि हम चारों ओर से पानी में घिर गये हैं।

रोहतांग के ऊपर अधिक समय तक नहीं रहा जा सकता। दोपहर के बाद बर्फीली तूफानी हवायें चलती हैं और किसी के लिए वहां ठहरना मृत्यु को निमन्त्रण देना है। विशेष कर मैदानी आदमी के लिए। हमें घूमते हुए एक विदेशी पर्यटक मिला जो मनाली से पैदल ही रोहतांग पहुंचा था और आगे ही बढ़ता जा रहा था। हमारे लौटने की सीमा से आगे उसे एकाकी बढ़ते देखकर हमने पूछा कहां तक जाओगे। उसने बताया कि वह केलांग तक जायेगा अर्थात् मनाली से ७१ किलोमीटर। विदेशी पर्यटकों की लगन और साहस बड़ा अनुकरणीय लगता है।

हवा बढ़ने लगी। खेल समाप्त हुए। सभी यात्री बर्फ के साथ रहकर उसके प्रति नयापन खो चुके थे अतः अब लौटना ही श्रेयस्कर था। बस लौटे, मार्ग में एक स्थान पर थोड़ा विश्राम किया। लौटना भी वहां कम रोमाञ्चक नहीं। ऐसा लगता है बस कुछ सेकेण्ड की ही बात है। ड्राइवर से थोड़ी भूल हुई नहीं कि पूरी बस कई हजार फुट नीचे खाई में। क्या कोई कल्पना कर सकता है बचने की, परन्तु मनुष्य के जीवन में ऐसा कौन सा क्षण है जब जीवन और मृत्यु साथ साथ विद्यमान न हों। इसी लिए तो मानव साहस करता है। ऊंचे पर्वतों व सागर की गहराइयों में छानबीन करने का प्रयास करता है। जीवन है तो मृत्यु है। मृत्यु है तो जीवन है। फिर एक ही व्यक्ति तो मरता है। अपने पीछे सारा समाज जीवित रहता है। किसी के भी मरने से समाज के जीवन में तो कोई अन्तर नहीं आता। उन्हीं क्षणों में जब हम मृत्यु के सर्वाधिक निकट होते हैं, हमारा जीवन छिपा होता है। ये क्षण जीवन में सतत प्रेरणा देने वाले संस्मरण बनकर याद रह जाते हैं। सामान्य जिये गये क्षणों का जीवनमें क्या महत्त्व और मूल्य रह जाता है। इसी लिए इन महत्त्वपूर्ण क्षणों को अधिक से अधिक पाकर पूरी तरह जीने का प्रयत्न करना चाहिए। धीरे धीरे ऊंचाइयां जो भय और आश्चर्य के भाव प्रदान कर रही थीं समाप्त हो गईं। बर्फ की अब किस को चिन्ता, वह हो तो न हो तो। सायं काल उसी व्यास के किनारे से लौटते हुए वहीं पहुंच गये जहां से चले थे। यही तो पृथ्वी का रूप है और प्रकृति का नियम। तीन-चार बजे मनाली लौटकर खूब थक गये थे, विश्राम किया और फिर सायं काल निकल गये मनालीका चक्कर लगाने। मनाली कोई बहुत बड़ी जगह नहीं। वहाँ होटलों के अतिरिक्त कोई बस्ती नहीं। स्थानीय जन संख्या लगभग चार हजार है। उन की आय के भी वर्ष में कुछ ही मास होते हैं। खूब कमाई करते हैं। होटल बहुत महंगे हैं। भीड़ के अनुसार दाम भी खूब बढ़ते हैं। पैसे वाले आते हैं, अपनी स्थिति और अवकाश के अनुसार रुकते हैं और लौट जाते है। प्रायः लोग दो तीन दिन में लौट जाते हैं। कुछ दस बारह दिन भी ठहरते हैं— जिनके पास पर्याप्त साधन हैं। हमारी इच्छा तो बहुत दिन रुकने की थी, परन्तु संभव न हो सका। सायं काल घूमने निकले। ...

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाहर की ओर बढ़ने लगे। वहाँ से पता लगा हिडिम्बा का मन्दिर बहुत निकट है। आज तक कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा मंदिरभी होगा। परन्तु भारतीयो की सभवत: विशेषता है कि जिसको भी अपना लिया अपने की भाँति उसे याद भी रखा। आगे बढ़ते हुए मार्ग में एकान्त बगीचे में कुछ विदेशी महिलायें बैठकर डायरी लिख रही थीं। चारों ओर की चोटियों पर निहारती और विचारों को अंकित करती जातीं। विदेशी पर्यटकों की यह विशेषता ह कि वे अपने कथन को प्रामाणिक और चिरस्थायी बनाते चलते हैं। विदेशियों के यात्रा वृत्तान्त प्रामाणिक होने का सहायक उपकरण है कैमरा,जिससे सारा वर्णन चित्र रूप में साकार हो उठता है। दूसरा टेप रिकार्डर शब्द को यथावत् पुन: प्रस्तुत कर सकने से कथन की वास्तविकता में सन्देह की संभावना समाप्त हो जाती है और तीसरी आवश्यकता है दूर बीन। दूर और ऊंचे स्थानों पर जाकर दृश्य को दूर तक देखकर मस्तिष्क में अंकित करना संभव होता है और प्राय: सभी के पास ये साधन किसी न किसी रूप में मिलते हैं।

हम बगीचे से होते हुए व्यास के घने कुञ्ज में प्रविष्ट हो गये। इस आते हुए कोलाहल से अन्दर अधिक व्यक्तियों के होने का अनुमान हो रहा था। वर्षा तो प्रतिदिन यहां थोड़ी बहुत होती ही रहती है। अब भी हो रही थी। बचते हुए मन्दिर के निकट पहुंचे। मन्दिर की जीर्ण-शीर्ण दशा से अनुमान होता है कि मन्दिर पर्याप्त प्राचीन है। यह हिडिम्बा देवी का मन्दिर प्राय: एक सहस्र वर्ष पूर्व का बना हुआ है। इसकी सुन्दरता को बेजोड़ रखने के लिए शिल्पी का दायां हाथ काट दिया गया था,ऐसी किंवदन्ती है। लगता है कि अपना महत्त्व बनाये रखनेके लिए व्यक्ति या समाज क्रूरता की किसी भी सीमा तक जा सकता है। मन्दिर पर कुछ बच्चे खेल रहे थे— पहाड़ी बोली में बोलते हुए। यहां की भाषा दो प्रकार की है--पञ्जाबी और पहाड़ी। एक तरफ भोजन का कार्यक्रम चल रहा था। कुछ विदेशी पंक्ति में बैठे प्रसाद पा रहे थे। यह कार्यक्रम प्राय: ही भक्तों द्वारा दी जाने वाली बलि में सम्पन्न होता रहता है। मन्दिर के अन्दर मूर्ति के स्थान पर एक शिला ही है, जिस पर कुछ सिन्दूर और पूजा द्रव्य लगा था। पीछे दीवार पर भी इसी प्रकार है। पहाड़ के मन्दिर प्राचीन और प्राय: सुरक्षित हैं, क्योंकि विदेशी आक्रमणकारी यातायात व अन्य सम्पर्क सूत्रों की कमी और दुर्गमता से नहीं पहुंच सके थे। मन्दिर निर्माण की शैली वही पैगोडा प्रकार की है। मन्दिर को देखकर छोटे सीधे रास्तों से बगीचों, खेतों में से स्वल्प समय के अन्दर ही लौटकर मनाली के बाजार में पहुंच गये और रात्रि में विश्राम किया।

अगले दिन पर्याप्त विलम्ब से उठ सके। पहाड़ी की चढ़ाई और पिछली भी थकान थी। ठण्डे वातावरण में खूब नींद आयी। उठकर नित्यकर्म सम्पन्न कर कुछ प्रातराश किया और धीरे-धीरे अनायास एक स्थलकी ओर कदम बढ़ गये। स्थान मनाली

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से प्राय: चार किलोमीटर और सड़क मार्ग से दूर स्थित है। उसका नाम है वसिष्ठ। वसिष्ठ की मनाली के दर्शनीय स्थलों में गणना की जाती है। मार्ग में चलते छाया में विश्राम करते हुए थोडे समय में वसिष्ठ पहुंच गये। यहां वसिष्ठ ऋषि का मन्दिर है। उसमें एक गर्म जल स्रोत है जिस पर दो कुण्ड बनाये गये हैं। एक पुरुषोंके लिए, दूसरा स्त्रियों के लिए। मन्दिर में सामन लकड़ी के शहतीर पर एक स्रोत लिखा हुआ था व्यावसाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे। व्यावसाय नमो नमः।

इस स्थान पर गरम स्रोत में गन्धक का अंश बताया जाता है। इसमें स्नान करने से त्वक् रोगों में लाभ होता है तथा पीने में प्रयोग करने से भूख बढ़ती है तथा रक्त शुद्धि होती है। यहां पर दूर से लोग आते हैं स्नान के लिए व तीर्थ यात्रा के लिए। यहां दो घण्टे व्यतीत किये। पास ही एक स्कूल चलता है। चाय की दुकान है, वहां पर मध्यान्ह भोजन किया, पहाडी लोगों की सरलता आज के वैज्ञानिक युग में समाप्त हो रही है। यह विचार था दुकान के संचालक किशोर का। उसने बताया कि इनशहरी यात्रियों की समझ में क्यों नहीं आता? यहां पर बर्फ का उपयोग दुकानों पर नहीं होता तो ये पूछते हैं बर्फ का ठण्डा सेब रस या अन्य पेय है तो यदि कहते हैं बर्फ से ठन्डा नहीं वैसे ही बहुत ठन्डा है तो कहेंगे नहीं यह तो गरम है परन्तु पानी में ठन्डे किये गये पेय को बर्फ का ठन्डा बताकर दिया जाये तो बहुत प्रसन्नतापूर्वक ठन्डा बताकर पीते हैं। जबकि वास्तविकता इतनी ही है कि यहां का पानी बहुत शीतल बर्फ जैसा है। परन्तु बिक्री के लिए फिर भी झूठ बोलना पड़ता है। मध्यान्ह भोजन के लिए डबलरोटी और मक्खन ले गये थे, दूध वहां पर मिल गया। इस क्षेत्र में दूध के जानवर कम होने से दूध सुलभ नहीं है। मिले तो भी बहुत थोड़ा मिलता है। फिर वहां से लौटने का उपक्रम किया, लौटते हुए एक बात पर विशेष ध्यान दिया जो जाते हुए समझ में नही आसकी थी। मार्ग में एक ऐसा स्थान था जो बहुत बड़े कूड़ें के ढेर जैसा था और ऐसा ही समझ कर हम आगे निकल गये थे। परन्तु लौटते समय हमारे साथ ठहरे डा० जोशी ने जब हमारा ध्यान खींचा तो देखा वह कूड़े का ढेर नहीं बर्फ का ढेर था। फरवरी मास में वामक(ग्लेशियर)के टूटकर गिरने से बर्फ का पर्वत खण्ड नीचे आकर गिरा और जून के अन्त तक पूरा पिघल नहीं सका था। सैकड़ों वृक्षों और पर्वत की बड़ी-बड़ी चट्टानों को लेकर जब ग्लेशियर गिरता है तो पर्वत कांप उठता है तथा पर्वत का कोना-कोना धमाके से गूंजता है। सैकड़ों पेड़ अभी भी इस बर्फ में दबे हुए थे और ग्रामीण जन उसमें से ईंधन इकट्ठा कर रहे थे। बहुत देर तक उसे देखते और उसके विगत समय की कल्पना करते रहे। आते जाते स्थानीय लोगों से उस दिन का हाल पूछते रहे। बहुत ही रोमांचकारी दृश्य रहा होगा उस दिन जब प्रकृति ने लोगों से कुछ कहना चाहा था।

वहां से लौटकर कुछ विश्राम किया और सायंकाल नदी के किनारे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किनारे दूर तक घूमने निकल जाने का उद्देश्य तो था परन्तु गलत निर्देश से आज का कार्य प्राकृतिक शोभा का अवलोकन ही रहा। सायंकाल भोजन कर नगर के उस बाजार पर एक चक्कर लगाया और सो गये।

२३ जून को प्रातः विलम्ब से निकलना संभव हुआ, क्योंकि सवेरे बादलों घिरा आकाश था और हल्की बूंदें पड़ रही थीं। मध्यान्ह भोजन तक आवास पर ही बने रहे, सायंकाल निकले और घूमते हुए नेहरू कुण्ड स्थान तक गये। सम्भवतः वही एक मात्र स्थान होगा जो नेहरू के नाम से मन्दिर वाले स्थानों की श्रेणी में आ गया है। यह स्थान मनाली से पांच किलोमीटर दूर रोहतांग मार्ग पर है। सड़क से जाते हुए दायें किनारे पर एक वृहत् शिला के नीचे से एक जल स्रोत निकल रहा है। यहां का जल बहुत निर्मल और शीतल है। बर्फ जैसा। साथ ही स्वाद में अच्छा। पास में एक कमरा और दूसरी ओर एक शिव मन्दिर बना हुआ है, जहां पर एक साधु बाबा निवास करता है जो इस कुण्ड पर लगने वाले मेले पर आये चढ़ावे को लेता है। स्थानीय लोगों से पूछने पर अपेक्षित जानकारी तो नहीं मिल सकी परन्तु इतना ही पता लगा कि नेहरू जब मनाली आते थे तब इस स्रोत का जल उन्हें बहुत पसन्द था। इसी कारण इसका नाम नेहरू कुण्ड रखा गया। हमने अपने साथ पानी पी रहे पहाड़ी से जब पूछा कि इस स्रोतका क्या महत्त्व है ?तो वह केवल इतना ही बता सका। हमारा बादशाह यहां का पानी पीता था। हमने पूछा कौन बादशाह तो उसने समझाकर बतलाया नेहरू बादशाह जो दिल्ली में रहता था। परन्तु हमारी मूल जिज्ञासा का शमन करने वाला हमें कोई नहीं मिल सका कि किन कारणों से जल स्रोत महत्त्वपूर्ण है और कैसे इसकी जानकारी नेहरू जी तक पहुंची, क्योंकि स्रोत पुराना होने के कारण पूर्व महत्त्व भी होना चाहिए। स्रोत के किनारे आधा घण्टा बैठकर फिर एक बार जल पिया और व्यास के कल्लोल की क्रीड़ाओं के प्रवाहित होते दृश्यों से अपने मानस को छायांकित करते हुए धीरे-धीरे लौट आये। इस यात्रा में भारतीयों की अपेक्षा विदेशियों को प्रकृति का आनन्द लेते एकाकी घण्टों पर्वतों नदियों को निहारते देखकर भारतीयों की प्राकृतिक सौन्दर्य चेतना बड़ी तुच्छ और हीन लगती थी। बाहर के पर्यटक तो लगता उस स्थान पर रम जाते हैं जबकि हमारे लोग आते जाते भागते से ही अधिक दिखाई देते हैं। सायंकाल लौटकर भोजन कर विश्राम किया, क्योंकि प्रायः १० किलोमीटर धीरे-धीरे चलने में बहुत श्रम लगने लगा था।

प्रातः उठे तो २४ जून का सवेरा था। ऐसा लग रहा था जैसे हम मनाली के ही निवासी हैं। हमें यहां रहते पर्याप्त समय हो गया है। वृक्ष, पर्वत, नदियां, सड़कें, बाजार सब परिचित-से लगने लगते हैं। यहां से जाने की इस स्थान को। छोड़ने की कल्पना में सुख अनुभव नहीं होता; विशेषकर जब स्मरण आता हो वहां की भीषण गर्मी का। कहां मनाली का शान्त शीतल सरम्य हरा-भरा आकर्षक वातावरण

Dr. Vivek Arya Vedic Library

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और कहां लू के थपेड़े। फिर भी हम यात्रा पर ही गये थे। लौटना तो था ही। नित्य कार्यों से निवृत्त होकर निकल पड़े और चल निकले मनाली गांव की ओर। वास्तव में वहां के निवासियों ने बतलाया कि जिसे आप मनाली समझते हैं वह वास्तविक मनाली नहीं है। पुराना तो है। मनाली गांव। आज का मनाली शहर उस समय दाना बाजार कहलाता था परन्तु यात्रियों के आवागमन ने इस शहर को मनाली बना दिया और मनाली गांव नदी पार पीछे की ओर आज भी यथा-पूर्व स्थिति में खड़ा है। इसी गाँव में हमें पहुंचना था। उस गांव को यहाँ के निवासी मनु महाराज का गांव बतलाते हैं। यहां पर गाँव में जीर्ण-शीर्ण मनु का मन्दिर भी है। जहाँ पर सम्भवतः भूला भटका यात्री पहुंच पाता होगा। अन्यथा गांव के मन्दिर की भांति विशेष अवसरों के अतिरिक्त सूना पड़ा रहता है। हां, दोनों समय पूजा आरती करना वहां के पुजारी के नित्य कर्त्तव्यों में सम्मिलित है। हमे वहाँ तक जाना सरल रहा, क्योंकि कोतवाली के सामने ही उसी गाँव का निवासी मिल गया जिसके साथ हम गांव तक पहुंच गये। यह गाँव किसी भी पहाड़ी गाँव के मुकाबले काफी बड़ा है। यह इसकी प्राचीनता का बड़ा प्रमाण है। गाँव के सभी लोग खेती और बागबानी करते हैं। शिक्षा का प्रवेश आंशिक रूप में ही है समग्र रूप में नहीं। शहर की निकटता और पर्यटकों की विविधता ने यहाँ के निवासियों में नवीनता का प्रवेश कर दिया है। ेतों में काम करती बोझा ढोती महिलाओं का केशविन्यास, आधुनिक प्रसाधन सामग्री का पर्याप्त प्रयोग और स्वच्छ वस्त्र इस बात का अच्छा प्रमाण हैं। स्वच्छ कपड़ों में यहां के जल का भी योगदान है। कोमल होने के कारण इसमें साबुन बहुत अच्छा लगता है और कपड़े बहुत साफ धुलते हैं। गांव में जाकर मन्दिर देखा। वहां पर बैठकर कुछ अनुभव करने का प्रयास किया जिसे हम आज के इतिहासकार कल्पना और कल की बात कहते हैं। उस इतिहास को जो सागर की गहराई से हिमालय की ऊंचाई तक छाया है। आखिर कब तक हम इस आधुनिक झूठ को जीवन की प्रगति का अवलम्ब बनाते रहेंगे। फिर हम नरेन्द्र लु के साथ पानी पीने के घर तक गये। वहां बैठकर जब चर्चा करने लगे तब हमने पूछा तुमने यह घर कब बनाया तो उसने बतलाया ५ वर्ष पूर्व बनाया था। उस समय इसकी लागत ६ सौ रुपये आयी और आज पाँच हजार से अधिक आयेगी। देखकर लगा मैदान की अपेक्षा निर्माण की लागत अब भी यहां बहुत कम है। परन्तु घर बनाने के लिए स्थान नहीं है। उसमें बहुतायत से लगी लकड़ी के विषय में हमारी जिज्ञासा को शान्त करते हुए उसने बताया कि सरकार प्रति परिवार को वर्ष में एक बार एक दयार (चीड़) का वृक्ष ७ रु० के नाम मात्र शुल्क पर देती है परन्तु उतना ही पर्याप्त नहीं होता। फिर आप तो जानते हैं कि सरकारी माल की चोरी चोरी नहीं होती। अब दो चार पेड़ वैसे भी काट लिये जाते हैं तब काम चलता है। मैंने पूछा कि पहाड़ की खाली सरकारी जमीन पर आप खेती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर सकते हैं तो उसने बतलाया कि अंग्रेज के शासन में तो एक अंगुल भूमि भी अतिरिक्त रूप से लेना सम्भव नहीं था परन्तु आजकल उतनी कठोरता नहीं। थोड़ा बहुत इधर-उधर चलता है। फिर पट्टे पर सरकार अतिरिक्त जमीन भी देती है अत: भूमि का अधिकाधिक उपयोग करने का प्रयास रहता है। हमने उसकी घर की बाल-बच्चों की चर्चा में कुछ समय बिताया और लौट चले। वह रास्ते तक हमको छोड़ने आया। जो सम्भव था उसके हाथ पर रखकर हमने अपना और उसका समय सार्थक किया और धीरे धीरे नदी का किनारा पकड़ कर दोपहर तक वापस पहुंच गये।

यहां एक रोचक प्रसंग बना। हमने यात्रा की सुविधा के लिए पैसे नकद लेने के स्थान पर यात्री चेक लिये थे और आज के दिन पैसों की आवश्यकता होने पर बैंक गये। बन्द था। वहां से मनाली गांव चले गये। लौटकर बैंक जायेंगे यह सोचकर लौटकर बैंक फिर भी बन्द देखकर बड़ी हैरानी हुई। हमने सामने खड़े टैक्सी ड्राइवर से पूछा तो उसने बतलाया कि आज रविवार है। हम मनाली जाकर तारीख वार समय सब भूल गये। सम्भवत: वहां जाकर सभी के साथ ऐसा हो जाता हो। अब थोड़े से पैसों को कल तक बड़ा सम्भाल कर व्यय करना था। दोपहर के भोजन में कटौती करनी पड़ी और थोड़ा बहुत खाकर घर की ओर बढ़े। बस स्टैण्ड पर हमने पूछा हमें नगर जाना है बस कब मिलेगी। बसमें बैठे चालक ने बतलाया यही बस जा रही है और पिछले दो तीन दिन से ही चली है। हमने सोचा जाना चाहिए। पैसे गिने किराया पूछा तो जाना आना सम्भव लगा क्योंकि दो व्यक्तियों के चार रु० जाने के और उतने ही आने के। बस,और विचार छोड़ बस में बैठ गये। बस व्यासके दूसरे तट से लौटती हुई नगर की ओर चल पड़ी। इस रास्ते से बसों का लाभ अधिकांश ग्रामीण लोगों को होता है। इधर पर्यटक लोगों का आवागमन बहुत स्वल्प है। फिर यह सीधा रास्ता भी नहीं है। इधर वे ही पर्यटक आते हैं जिन्हें नगर कैसल और रोरिक कला संग्रह देखना हो। हम भी इसी कारण इधर निकले थे। गाँव देखते प्रकृति का अवलोकन करते शान्त मार्ग से यह यात्रा अच्छी लगती है। व्यास के बायें तट की अपेक्षा दाहिने भाग में कृषि योग्य भूमि अधिक है। नदी और पर्वत के मध्य अच्छा मैदान है, जिसमें धान, गेहूं, आलू के खेत व फलों के उद्यान पर्याप्त हैं। हम डेढ़ घण्टे में नगर के लिए उतरे। नगर इस क्षेत्र की पुरानी राजधानी है। यह पर्याप्त ऊंचाई पर स्थित है। वहां लगे विवरण के अनुसार वतमान किला ४०० सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन शासक द्वारा बनवाया गया था तथा इसके पत्थरों को ढोया नहीं गया अपितु नदी पार गढ़ तक मज़दूरों की पंक्ति बना कर पूर्ण पत्थर हाथों हाथ पहुंचाया गया था। १९०५ में आये भूकम्प के कारण यह किला ध्वस्त हो गया और तब के बाद उसके खण्डहरों को ठीक करके वहां एक विश्राम गृह स्थापित किया गया है।

यहीं किले में एक विशेष वस्तु है। एक पत्थर की शिला जिसकी लम्बाई

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौड़ाई मोटाई है ? इस शिला का नाम है ज्योति पट्ट जिसके उच्चारण की भिन्नता से देखने तक हम कोई कुण्ड वा झरना समझते रहे। इसके विवरण में लिखा गया है कि इस शिला में विश्व के सभी देवता हैं। इसकी कथा इस प्रकार है—एक बार विश्व के सभी देवताओं ने मिलकर निश्चय किया कि वे नगर की पवित्र भूमि पर अवतरित होंगे। शिला में वास करेंगे। सभी देवताओं ने मधुमक्खियों का रूप धारण किया और शिला पर बैठ गईं। इनका आकार तो मधुमक्खियों का था परन्तु शक्ति घोड़ों जितनी थी और अपनी इस शक्ति से वे इस शिला को उठाकर यहां लाये और स्थापित किया। तब से इसमें देवताओं का वास माना जाता है और इसकी पूजा की जाती है। पुराने समय में इस क्षेत्र के निर्णय इसकी साक्षी में किये जाते थे। आज भी यहां के निवासियों की धारणा है कि यदि वादी प्रतिवादी में कोई शिला के सम्मुख असत्य भाषण करता है तो देवता लोग उसे यातना देते हैं। वह विभिन्न रोगों से ग्रस्त होकर दुःख पाता है। स्थान छोटा होने पर भी सुन्दर और मनोरम है।

यहां से प्रायः डेढ़ दो किलोमीटर पर है एक स्थान जिसका नाम है रोरिक आर्ट गैलरी। यहां एक रूसी चित्रकार रोरिक का निवास स्थान है। इस चित्रकार को हिमालय इतना प्रिय हो गया था कि उसने इसे अपना घर बना लिया और हिमालय के सुन्दर दृश्यों को अपनी तूलिका से रंगों में प्रकट कर दिया। चित्र यद्यपि अच्छे हैं, परन्तु अनुपम नहीं। फिर जितना कष्ट पाकर उस स्थान तक व्यक्ति जाता है, सहिष्णु न हो तो खीझ होना स्वाभाविक है। हम से पूर्व दर्शक ने 'व्यर्थ में परेशान किया' इस प्रकार की सम्मति अंकित की थी। और भी अच्छे बुरे भाव प्रदर्शनी के प्रति वहां की पञ्जिका में अंकित हैं। हम ने दस मिनट यहां लगाये। रहने के लिए स्थान बहुत अच्छा है। कुञ्ज में पहाड़ी पर मकान बना है। सभी सुविधायें है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस स्थान से रोरिक का प्रकृति प्रेम स्पष्ट हो जाता है। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र यहां निवास करते हैं। उनका कार्य बंगलूर में भी है। जब हम गये तब वह बंगलूर गये हुए थे। उनकी एक मित्र रूस से आकर वहां ठहरी हुई थी, देखकर हम लौटे। किला देखा। जाते हुए मार्ग बहुत कठिन लग रहा था। स्कूलमें पढ़ने वाली वहीं की एक बच्ची अनीता हमको छोटे से रास्ते से ले गई और रास्ते में पके हुए फल भी खिलाती गई, वृक्ष से तोड़कर। जब मैंने पूछा कि यहां कोई डांटेगा नहीं तो उसने बतलाया कि यह मेरी नानी का बगीचा है। मुझे कोई कुछ नहीं कह सकता। इसके कारण चढ़ाई का रास्ता कुछ बातों में कट गया था परन्तु आते हुए तो थोड़ी सी देर में सड़क पर थे। ऊपर से बहुत जल्दी करके बस के लिए लौटे थे परन्तु सड़क पर दो घंटे प्रतीक्षा के उपरान्त बस मिल सकी। बस से मनाली लौटे, थोड़ा भोजन कर विश्राम किया। लौटकर सारे दिन की यात्रा पर चर्चा होती रही। डा० जोशी से जो हमारी तरह दिल्ली से गये थे और मनाली में एक मास रुकने के विचार से उसी घरमें ठहरे हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

... भी हमारी जानकारी में देखने योग्य था देख लिया था। फिर यहां रहकर गृह स्वामी की उदारता का आवश्यकता से अधिक लाभ उठाना भी अनुचित लग रहा था अतः हमने उनसे निवेदन किया कि हम २६ को दोपहर कुल्लू लौट जावेंगे और रात्रि को सो गये। अगले दिन आवश्यक कार्य संपादन करके गृह स्वामी का धन्यवाद करके बस पकड़ी कुल्लू के लिए। दस बजे कुल्लू पहुंचे। यहां लौटते हुए रुकने का कार्यक्रम पहले से निश्चित था। आकर गुरुद्वारे में ठहरे। अगले दिन कुल्लू से भुन्तर की बस ली। भुन्तर में नदी पारकर दूसरी ओर से बस पकड़नी होती है। बस पर बड़ी भीड़ थी, खड़े होकर जाना पड़ा। बस व्यास का किनारा छोड़ पार्वती नदी के किनारे से बढ़ती हुई उत्तर की ऊंचाई को छूती चलती है। रास्ता संकरा, कम यातायात। आगे की सड़क निर्माणाधीन है। अतः बस केवल मणिकर्ण तक जाती है। दो ढाई घण्टे में मणिकर्ण पहुंच गये। संकरे स्थानों पर नदी का वेग,गहराई में गिरने पर ऊंची-ऊंची फुहारें देखता व्यक्ति चित्रलिखित सा हो जाता है। दूर से मणिकर्ण से उठती भाप किसी कारखानें के इंजन जैसी लगती। झूलेवाल पुल पारकर गुरुद्वारे में पहुंचते हैं। यह सुन्दर और बड़ा है। यहां पर यात्रियों के लिए गर्म जल को हौज में डालकर ठण्डा जल मिश्रित किया गया है जिससे पानी स्नान योग्य बन गया है। यात्री स्नान करके गुरु के लंगर में भोजन पाते हैं भोजन में दाल,चावल, कढ़ी, रोटी, चटनी आदि सभी कुछ अच्छा मिलता है। सभी नेता महात्मा सन्तों के चित्र गुरुद्वारे की दीवार पर दीख पड़ते हैं। यहां पर नीचे से निकलते स्रोत को बांध रखा है। उबलता हुआ पानी भूमि से प्रायः एक फुट ऊंचे तक निकलता है। लोग इसमें अपने साथ लाये आलू आदि पकाने का प्रयोग करते हैं। बर्तनों में चावलों का पानी डाल कर रख देने पर चावल भी पक जाते हैं। इस प्रकार शीतल बर्फीली नदी के किनारे पर पर्वतों के अन्दर से उबलता हुआ पानी प्रकृति के अद्‌भुत स्वरूप और उसके वैविध्य को प्रकट करता है। यहां पर थोड़ा आगे बढ़कर रामचन्द्र जी का मन्दिर है। उसका इतिहास भी वहां पत्थर पर अंकित है। इसका जीर्णोद्धार चार पांच सौ साल पहले यहां के जमींदार ने कराया था। मन्दिर के पीछे के भाग में गरम पानी का संगमरमर का कुण्ड बना हुआ है। मन्दिर यात्रियों की दृष्टि से बड़ा उपेक्षित है सभी यात्री गुरुद्वारे तक रुककर लौट जाते हैं। उसकी चकाचौंध ने मन्दिर को नेपथ्य में डाल दिया है। भूला भटका यात्री ही यहां के पुजारी का आश्वासन है। पुरातनता की दृष्टि से मन्दिर यहां का पुराना मुख्य स्थल है। दस बीस घरों की बस्ती है। यहां का स्थान भूसर्वेक्षण विभाग के अध्ययन का क्षेत्र है। कालिदास के शब्दों की सचाई यहां ज्ञात होती है जब विदेशियों द्वारा असख्य राजाओं की लूट यहां से होने के समाचार मिलते हैं। अब जब सरकार ने कुछ क्षेत्रों में बिना आज्ञा आवागमन वर्जित कर दिया, तब अनायास पंक्ति स्मरण होती है—अनन्तरत्न प्रभवस्य यस्य···

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रात्रि को बस से चण्डीगढ़ होकर २६ जून को प्रातः १० बजे दिल्ली पहुंच गये। यात्रा इतनी रोचक रही कि लगने लगा जब भी किसी को समय मिले उसे हिमालय के अन्तर में जाना चाहिए जहां सुख शान्ति का साम्राज्य है और आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत जिससे जीवन में और अधिक नयापन व उत्साह प्राप्त होता है। यदि ऐसा सब अनुभव करते होते तो आज वह हिमालय क्षेत्र शत्रु के हाथ में न गया होता और हमारा गौरव इस प्रकार पद दलित न होता जैसे आज हो रहा है।

अध्यक्ष की घोषणा

वेद की जिल्दें सभी मंगा लें

जिनके वेदभाष्य १९७२ में सुरक्षित किये गये थे, उन सभी को वेदभाष्य दिया जा चुका है। फिर भी यदि किन्हीं को कुछ भाग न मिलें हों तो वे अपनी रसीदें, क्रमांक या कोई भी प्रमाण प्रस्तुत कर करौल बाग कार्यालय से प्राप्त कर लें।

वेदभाष्य लेने के लिए कृपया १ से ४ बजे तक दर्शन दें। १९७८ तक जिनका धन आया है वे सभी अपने शेष भाग शीघ्र से शीघ्र प्राप्त कर लें।

राकेश रानी पंडित
अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग,
नई दिल्ली-११०००५

दूरभाष— ५६६६३९
८०१२११
८०१२२१

नोट—मैं स्वयं करोलबाग कार्यालय में प्रतिदिन प्रातः ६ से ५ बजे तक रहती हूं। अतः किसी भी कठिनाई के लिए मुझ से मिलें या पत्र लिखें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजय प्रार्थना

वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् ।
सासह्याम पृतन्यत: ।। ऋ. १।८।४।।

हे (इन्द्र) इन्द्र ! (वयं) हम (त्वया युजा) तेरे साथ रहकर तथा (अस्तृभि:) अस्त्रों का प्रयोग करने वाले शूरवीरों के साथ रहकर (पृतन्यत:) सेना से हमला करने वाले शत्रु का (सासह्याम) पराभव करेंगे ।

वीर मनुष्य को उचित है कि वह स्वयं परमेश्वर की भक्ति करे और परमात्मा को अपना रक्षक माने । तथा शस्त्रास्त्रों का उत्तम उपयोग करने में प्रवीण शूरवीरों को साथ लेकर शत्रु का पराभव करे । तात्पर्य विजय प्राप्त करने के तीन साधन हैं । (१) परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास, (२) अपने सैनिकों के शस्त्रास्त्रों की उत्तम तैयारी, तथा (३) सैनिकों का उग्र शौर्य ।

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरे भरे ।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिव: सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन्वृष्णयारुज ।।
ऋ. १।१०२।४।।

हे (मघवन्) ऐश्वर्यसम्पन्न प्रभो ! (त्वया युजा) तेरे साथ युक्त होकर (वृतं) घेरे हुए के ऊपर (वयं जयेम) हम विजय प्राप्त करें, (भरे भरे) युद्ध में युद्ध में (अस्माकं अंशं) हमारे भाग का (उदव) रक्षण कर । हे (इन्द्र) प्रभो ! (अस्मभ्यं) हमारे लिये (वरिव: सुगं कृधि) धन सुगमता से प्राप्त होने वाला कर, (शत्रूणां) शत्रुओं के (वृष्ण्या) बल (प्ररुज) नष्ट भ्रष्ट कर ।

परमेश्वर के साथ रहने वाले सदा विजय प्राप्त करते हैं, प्रत्येक युद्ध में वे विजयी होते हैं । धनादि भोग्य पदार्थ भी उनको सुगमता से प्राप्त होते हैं, उनके शत्रु निर्बल होते जाते हैं ।

त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सपन्त: ।
अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्ते राया दावने स्याम ।।
ऋ. २।११।१२।।

हे (इन्द्र) प्रभो ! हम (विप्रा:) ज्ञानी लोग (त्वे अभूम) तेरे अन्दर मन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थिर रख कर रहें और (ऋतया सपन्त:) सीधे मार्ग से व्यवहार करते हुए (धियं वनेम) बुद्धि और कर्म की सिद्धि प्राप्त करें। (अवस्यव:) अपने रक्षण करने वाले हम (प्रशस्ति धीमहि) तेरा वर्णन तेरे गुण मन में धारण करें और (सद्य:) तत्काल (ते राय: दावने) तेरे धन के दान के लिए योग्य (स्याम) हों।

ज्ञानी लोग ईश्वर में ही दत्तचित्त हों, सीधे मार्ग से व्यवहार करके कर्म सिद्धि प्राप्त करें, अपना रक्षण करते हुए, ईश्वर के गुणों का चिन्तन करें और अपने आपको उसकी दया के योग्य बनावें।

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥

ऋ. २।१२।१॥

(य: प्रथम: देव:) जो पहिला देव (जात एव) प्रकट होते ही (मनस्वान्) मनन शक्ति से श्रेष्ठ होकर (क्रतुना) अपने पुरुषार्थ से (देवान्) सब सूर्यादि देवों को (पर्यभूषत्) सुशोभित करता रहा (यस्य शुष्माद्) जिसके बल से (रोदसी) द्युलोक और पृथिवी (अभ्यसेतां) कांपते हैं, हे (जनास:) लोगों! (नृम्णस्य महा) मानसिक शक्ति के महत्त्व से युक्त (स:) वह देव (इन्द्र:) इन्द्र अर्थात् प्रभु ही है।

सबसे पहिला देव जो सब अन्य देवों को तेजस्वी करता है, जिसके बल से सब डरते हैं, जिसकी आत्मिक और मानसिक शक्ति अद्वितीय है वही सब का एक प्रभु है।

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युद्ध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः॥

ऋ. २।१२।९॥ अ. २०।३४।९॥

हे (जनास:) लोगो! (यस्मात् ऋते) जिसको छोड़कर (जनास:) लोग (न विजयन्ते) विजय को नहीं प्राप्त होते, और (युद्ध्यमाना:) लड़ने वाले (अवसे) रक्षण के लिए (यं हवन्ते) जिसकी प्रार्थना करते हैं और (य:) जो (विश्वस्य प्रतिमानं) विश्व का निर्माता (बभूव) है और जो (अच्युतच्युत्) स्वयं न हिलता हुआ दूसरों को हिलाता है, हे (जनास:) लोगो! (स: इन्द्र:) वह इन्द्र अर्थात् सब जगत् का एक राजा है।

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम्।
वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः॥

ऋ. ६।८।६॥

हे (वैश्वानर) अग्ने! हमारे (मघ-वत्सु) धनिकों में (अनामि सुवीर्यं अजरं क्षत्रं) उत्तम वीर्ययुक्त अविनाशी क्षात्र तेज (धारय) धारण कर (तव ऊतिभि:) तेरे संरक्षण से हे (अग्ने) प्रभो! (वयं शतिनं सहस्रिणं वाजं जयेम) हम सब सौ अथवा हजारों सैनिकों के साथ हमला करने वाले शत्रु को भी पराजित करें।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानव संघ के प्र म से लड़ने वालों को इस प्रकार बल प्राप्त होना स्वाभाविक ही है। जो अपने राष्ट्र हित के लिए जागते हैं, उनसे ही राष्ट्र की उन्नति होती है।

वर्चसप्रार्थना

आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इदं हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाऽविशतादु माम् ।। य. ३४।५०।।

(इदं हिरण्यं) यह सुवर्ण आदि धन मेरे लिये (आयुष्यं) दीर्घ आयुष्य देने वाला (वर्चस्यं) तेज बढ़ाने वाला, (राय: पोषं) राजस्व का पोषण करने वाला, (औद्भिदं) उन्नति देने वाला और (वर्चस्वत्) शान्ति देने वाला होकर (जैत्राय) विजय के लिये (मां) मुझे (आविशतात् उ) प्राप्त होवे ही।

अर्थात् उस धन से ऐसे कर्म करने चाहिए, जिनसे दीर्घ आयुष्य, तेज, ऐश्वर्य, उन्नति, अभ्युदय, बल और विजय प्राप्त होता रहे। ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए कि जिनसे आयु आदि न्यून होकर अवनति हो जाय।

जो मनुष्य धनी हैं, उनको योग्य पुरुषार्थ करके दीर्घ आयुष्य, तेजस्विता, पुष्टि, उन्नति, शक्ति और विजय प्राप्त करना चाहिये। यदि धन प्राप्त होने से इन गुणों की न्यूनता हो जाय, तो वह योग्य धन ही नहीं है। इन गुणों की वृद्धि करने वाला ही धन योग्य धन है।

अश्वावन्तं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वाजमिन्द्र ।
भद्रवातं विप्रवीरं स्वर्षामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दा: ।।
ऋ. १०।४७।५।।

हे (इन्द्र) प्रभो ! (अश्वावन्तं) घोड़ों से, (रथिनं) रथों से और (वीरवंतं) वीरों से युक्त, (सहस्रिण शतिनं) सहस्रों प्रकार के (वाजं) बल और अन्न को पास रखने वाला (भद्रवातं) कल्याणकारक समाज को साथ रखने वाला (विप्रवीरं) विशेष ज्ञानी और वीरों से सदा युक्त (स्वा: सां) सब को स्वीकारने योग्य (चित्रं रयिं) विलक्षण बल युक्त धन (अस्मभ्यं दा:) हमें दो।

उक्त प्रकार का धन प्राप्त करना चाहिये।

सनद्वाजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
दस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्यमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दा: ।।
ऋ. १०।४७।४।।

हे (इन्द्र) प्रभो ! (सनद्वाजं) जिससे धन प्राप्त होता है, विप्रवीरं) ज्ञानी वीर जिसके साथ होते हैं, (तरुणं) जो तारण करने वाला होता है, (धनस्पृतं) धन की पूर्ति करने वाला (शूशुवांसं) बढ़ाने वाला, (सुदक्षं) दक्षता से युक्त, (दस्युहनं) शत्रु का नाश करने वाला (पूर्भिदं) शत्रु के किलों-दुर्गों का भेदन करने वाला,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(सत्यं) सच्चे (चित्रं वृषणं) विलक्षण बलवान् (रयिं) धन को (अस्मभ्यं दाः) हमें दें।

सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तमुरु गम्भीरं पृथुबुध्नमिन्द्र ।
श्रुतऋषिमुग्रमभिमातिषाहमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिन्दाः ॥

ऋ. १०।४७।३॥

हे (इन्द्र) प्रभो ! (सुब्रह्माणं) उत्तम ज्ञान से युक्त (देववंतं) दिव्य गुणों से युक्त (बृहन्तं) बड़े शक्तिशाली (उरु गम्भीरं) बड़े गंभीर (पृथुबुध्नं) विस्तृत आश्रय से युक्त (श्रुत ऋषिं) ऋषियों के ज्ञान का विस्तार करने वाला (उग्रं) उग्रता से युक्त शूरता युक्त (अभिमातिसाहं) शत्रु का पराजय करने वाले (चित्रं) विलक्षण (वृषणं रयिं) बलवान् धन को (अस्मभ्यं दाः) हमें दो।

उक्त गुण जिसके साथ रहते हैं, ऐसा ही धन कमाना चाहिए अर्थात् धन के साथ उक्त गुणों की वृद्धि करनी चाहिये। घोड़े, रथ, वीर. शूर, बलिष्ठ पुरुष, ज्ञानी आदि उस धन के साथ रहें। ऐसा धन न हो, जिस के पास कोई वीर और ज्ञानी न हो। धन के साथ स्वसंरक्षण तारक गुण हो और आत्मनाश का मारक गुण न रहे। धन के साथ दक्षता बढ़े और शत्रु के नाश करने का पराक्रम वृद्धिगत हो जाय। तात्पर्य यह है कि धनो लोग निर्बल और निर्वीर्य से होते हैं, वैसे न रहें। परन्तु धनी स्वयं ऐसे वीर पुरुष बनें कि जो अपने धन की स्वयं रक्षा कर सकें और दूसरों को लाभ पहुंचावें।

संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः ।
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप निलयन्ताम् ॥

(उभयं) व्यक्ति विषयक और समाज विषयक दोनों प्रकार का (धनं) धन (अस्मभ्यं) हम सबके के लिये (सं सृष्टं) उत्पन्न और (सं आकृतं) इकट्ठा करके (मन्युः वरुणः) तेजस्वी श्रेष्ठदेव (दत्तां) देवे। हम सब के (शत्रवः) शत्रु (हृदयेषु) अपने अन्तःकरणों में (भियं दधानाः) भय को धारण करते हुए (पराजितासः) पराजित होकर (अप निलयन्ताम्) भाग जावें।

व्यक्ति के सम्बन्ध का एक धन होता है और जाति का समाज का अथवा राष्ट्र का एक धन होता है। वैयक्तिक धन और सामुदायिक धन इस प्रकार के दो धन हैं। व्यक्ति को वैयक्तिक धन और जाति को जातीय धन कमाना अत्यन्त आवश्यक है। इन दोनों धनों को प्राप्त करने का प्रयत्न हर एक को करना चाहिये। इन दोनों धनों को प्राप्त करने के पुरुषार्थ में ऐसा विलक्षण शौर्य दिखाना चाहिये कि जिससे सब शत्रु भयभीत होकर दूर भाग जावें। इसी से पूर्ण विजय प्राप्त होता है।

वर्च आ धेहि मे तन्वां३सह ओजो वयो बलम् ।
इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्यं प्रति गृह्णामि शतशारदाय ॥

अ. १९।३७।२॥

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(मे तन्वां) मेरे शरीर में (वर्चः) तेज, (सहः) शक्ति, (ओजः) पराक्रम (वयः) पौरुष, (बलं) बल, (आधोहि) धारण कर। (इन्द्रियाय कर्मणे वीर्य्याय) इन्द्रिय, कर्म और वीर्य तथा (शत शारदाय) सौ वर्ष की आयु के लिए (त्वा प्रतिगृह्णामि) तेरा स्वीकार करता हूं।

हर एक मनुष्य को अपने शरीर में तेज, शक्ति, स्फूर्ति, पराक्रम, पौरुष, बल आदि धारण करके बढ़ाने चाहिये। इन्द्रिय शक्ति, पुरुषार्थ, वीर्य और दीर्घ आयुष्य की वृद्धि के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इनकी वृद्धि से ही मनुष्य की योग्यता बढ़ जाती है और इनके घटने से मनुष्य की योग्यता घट जाती है। इसलिये जितना शक्य हो, उतना प्रयत्न करके मनुष्य को उक्त शक्तियां अपने अन्दर विकसित करनी चाहिये। वर्चः शब्द तेजस्विता का बोध कराता है। सहः शब्द से शत्रुओं को पराजित करने की शक्ति का भाव ज्ञात होता है। ओजः-शब्द शारीरिक शक्ति के पुरुषार्थ करने का भाव बताता है। वयः-का अर्थ पौरुष = प्रयत्न है। बलंशब्द सब प्रकार से, शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक बलों का बोध कराता है।

मनुष्य की योग्यता (१) इन्द्रिय शक्ति, (२) उत्साहमय वीर्य शक्ति (३) कर्म शक्ति और (४) दीर्घ आयु पर अवलम्बित होती है। इनमें से कोई शक्ति कम हो जाये तो योग्यता कम हो जाती है और अधिक होने से योग्यता बढ़ जाती है। इसलिये हर एक मनुष्य को इनकी वृद्धि करने के पुरुषार्थ में पराकाष्ठा करनी चाहिये।

आइए हँसे

काफी देर तक फोन की घंटी बजते रहने पर झनकू झल्ला कर उस कम में गये तो देखा कि नौकर वहीं खड़ा फोन को घूर रहा है। फोन को सुनने के बाद उन्होंने नौकर से जवाब तलब किया, "फोन क्यों नहीं उठाया तूने ?"

"डर लगता था साहब।"

"तब मुझे कहता ना समझ !"

"आपको ऐसा कहने की हिम्मत हम कैसे करते साहब !"

☼ ☼ ☼

मुकदमा बड़े नाजुक दौर में पहुंच गया था। जज ने कैदी के वकील को राय दी कि आप अपने मुवक्किल को एकान्त में ले जाइये और उसे अच्छी तर समझा दीजिये कि उसका भला किसमें है।

करीब पन्द्रह मिनट बाद वकील को अकेले ही लौटते देख जज ने पूछा, "कैदी कहां है ?"

"फरार हो गया हुजूर ! मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया था कि उसका भला फरार होने में है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० रघुवीर

वेद भाष्य पद्धति

यह सर्वमान्य धारणा है कि वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तक है। इतना ही नहीं, अपितु भारतीय आचार्यों ने तो वेद को परमेश्वर की कृति स्वीकार किया है। शतपथ २ तथा ऐतरेय ब्राह्मण१ में कहा गया है कि प्रजापति ने सर्वप्रथम वेद-त्रयी को उत्पन्न किया। मनुस्मृति में अग्नि, वायु तथा आदित्य पर परमेश्वर के वेद ज्ञान का प्रकाश माना गया है। महाभारत में कहा गया है कि परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में वेदरूपी नित्य वाणी का सृजन किया।३ वेदान्त शास्त्र के सूत्र १. १. ३ की व्याख्या में शंकराचार्य ने ऋग्वेदादि की उत्पत्ति का कारण ब्रह्म स्वीकार किया है।४ इतना ही नहीं, अपितु पतंजलि मुनि ने तो वेदों की वर्णानुपूर्वी तक को भी नित्य स्वीकार किया और भारतीयों ने ही नहीं, अपितु निष्पक्ष पाश्चात्य विचारकों ने भी वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया है।६ रेवरेण्ड मौरिस फिलिप नामक ईसाई पादरी ने 'The Teachings of the Vedas' नामक अपने ग्रन्थ में ऐसे ही विचार प्रकट किये हैं।५

पाश्चात्य-पौरस्त्य एवं प्राचीन—अर्वाचीन मनीषियों ने वेदों को विभिन्न दृष्टियों से देखा है। किन्हीं ने इनको अपौरुषेय माना तो दूसरों ने पौरुषेय ही स्वीकार किया है। कोई वेदों में प्राचीन आर्यों, राजा-महाराजाओं का इतिहास

---

१. स श्रान्तस्तेपानो ब्रह्मैव प्रथममसृजत् त्रयीमेव विद्याम् (शत० १४. ५. ४. १०)

२. प्रजापतिर्वा इमान् वेदानसृजत् (ऐत०)

३. अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयंभुवा
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥ म. भा. शां. प. २३२. २४

४. ऋग्वेदादेः शास्त्रस्यानेकविद्या स्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थविद्योतिनः सर्वज्ञ-कल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म। वेदान्त सूत्र १. १. ३ पर शंकराचार्य का भाष्य

५. वर्णानुपूर्वी खल्वप्याम्नाये नित्या। महाभाष्य ५. २. २६

6. We are justfied, therefore in, concluding that the higher and purer conception of vedic Aryans were the result of a primitive divine revelation.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वीकार करते हैं तो स्वामी दयानन्द जैसे वेद भाष्यकार इस धारणा के साथ सहमत न होते हुये वेदों में केवल नित्य इतिहास मानते हैं। किन्हीं के अनुसार वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं तो अन्यों के अनुसार वेदों का प्रयोजन केवल यज्ञ विधान है। मनुस्मृति में जहाँ एक ओर वेद को 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'(मनु० २।६) कहकर वेद को धर्म का मूल स्वीकार किया गया है तो दूसरी ओर मनु ने ही 'सर्वज्ञानमयो हि सः' (मनु० २।६) कहकर वेद को समस्त ज्ञान का भण्डार कहा है। इसी वचन के अनुसार स्वामी दयानन्द ने भी वेद को सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक स्वीकार किया है। कणाद मुनि ने 'बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे (वैशे ६. १. १) कहकर वेद को बुद्धिमत्ता से पूर्ण कृति स्वीकार करते हुए उसे पदार्थ धर्म का प्रतिपादक माना है, तो दूसरी ओर वेदांग ज्योतिष के कर्ता लघट ने वेद को केवल यज्ञार्थ स्वीकार किया है।२मीमांसा दर्शनकार जैमिनि मुनि तो यज्ञार्थ से अतिरिक्त मंत्रों को अनर्थक कहने में भी नहीं हिचकिचाते। वेद ३ व्याख्या की दिशा प्रदान करने वाले यास्क मुनि वेदों में कर्म सम्पत्ति स्वीकार करते हुए कहते हैं—'पुरुष क्रियाऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे (नि. १।२) याज्ञवल्क्य स्मृति में सभी शास्त्रों का मूल वेद को स्वीकार किया गया है ४। अत्रि स्मृति में वेद से बढ़ कर अन्य कोई शास्त्र स्वीकार नहीं किया गया है।५

इस प्रकार प्रारम्भ से ही वेदों के विषय में मनीषियों के विविध विचार रहे हैं। वेदों के रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए प्राचीन काल से ही यत्न होते रहे हैं। वेदांगों तथा वेद के उपांगों का प्रणयन भी वेदों के रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए ही किया गया। वेदों के व्याख्या ग्रन्थ लिखे गये, किन्तु वेदों की इयत्ता का निर्धारण नहीं हो सका। ऐसा प्रतीत होता है कि अति प्राचीन काल में वेद-भाष्य करने के यत्न भी नहीं किये गये। ऐसा करने में दो कारण प्रमुख थे।१—वेदों के आविर्भाव काल तथा उससे कुछ समय बाद तक भी मौखिक परम्परा के आधार पर ही वेदों का अध्ययन-अध्यापन होता रहा। इसी लिए वेद के लिए 'श्रुति' शब्द प्रसिद्ध हुआ। यास्क के अनुसार उस समय साक्षात्कृतधर्मा ऋषि लोग मौखिक परम्परा के आधार पर दूसरे ऋषियों को

१. तद्वचनाद् आम्नायस्य प्रामाण्यम्—वैशे १. १. ३

२. वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानि पूर्वा विहिताश्च यज्ञाः वेदांग ज्योतिष श्लो. ६

३. आम्नायस्य क्रियार्थत्वाद् आनर्थक्यमतदर्थानाम् पूर्व मीमांसा १. २. १

४. निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात्।

५. नास्ति वेदात्परं शास्त्रम्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदार्थ का ज्ञान करा देते थे।१ इनमें से साक्षात् कृतधर्मा ऋषि प्रथम कोटि के ऋषि थे। उनको वेदार्थ स्वयं प्रकट था। दूसरी कोटि के ऋषि वे थे जिनको स्वयं वेदार्थ स्पष्ट नहीं था। उन्होंने उपदेश द्वारा वेदार्थ प्राप्त किया। ऋषियों की इस द्वितीय कोटि तक वेद भाष्य करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। न ही इस समय तक वेद भाष्य करके वेदार्थ की इयत्ता का निर्धारण किया गया। वेद भाष्य या वेदार्थ करने का उपक्रम तब प्रारम्भ हुआ जब ऋषियों की यह द्वितीय परम्परा भी उच्छिन्न होने लगी तथा मनुष्यों को मौलिक उपदेश द्वारा वेदार्थ ज्ञान में असमर्थता अनुभव होने लगी। ऐसे काल में ही वेदांग आदि का प्रणयन् किया गया।२ २. वेद भाष्य अथवा वेदार्थ न करने का दूसरा कारण यह रहा है कि भारतीय परम्परा में वेद को अनन्त ज्ञान का भण्डार स्वीकार किया गया है। उपनिषद् में तो 'अनन्ता वै वेदा:' कहकर यह बात और भी स्पष्ट कर दी गयी है। अनन्त ज्ञान राशि को सीमित ज्ञान वाला मनुष्य अर्थों में निबद्ध कैसे कर सकता था? इसी लिए समग्र वेदों का भाष्य करके वेदार्थ के निर्धारण का यत्न आर्यों ने नहीं किया। केवल निरुक्त, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि के रूप में वेदार्थ प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराने वाले ग्रन्थ ही लिखे गये। निरुक्त के टीकाकार दुर्गाचार्य कहते हैं कि मन्त्रों में अर्थ की सीमा का निश्चय नहीं किया जा सकता। इनके महान् अर्थ होते हैं तथा उन अर्थों का जानना अत्यन्त कठिन है। अधिदेव, अध्यात्म तथा अधियज्ञ का आश्रय लेकर जितने भी अर्थ उचित प्रतीत हों उन सबको वेद मन्त्रों से निकाल लेना चाहिए। ऐसा करने में कोई अपराध नहीं है।३ वेद के सम्बन्ध में ऐसा किया भी गया है। वेदार्थ करने वालों ने वेद को अपनी अपनी दृष्टि से देखा तथा उसी के अनुसार मन्त्रार्थ किया। यही कारण है कि प्राचीन प्रामाणिक आचार्यों के द्वारा भी वेद मन्त्रों के अलग-अलग अर्थ किये गये हैं। चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश ऋ० ४।५८।३ इस मन्त्र के मीमांसा १।२।४६, निरुक्त १३।७ तथा गोपथ ब्राह्मण पूर्वभाग में २।१६ यज्ञपरक अर्थ किये गये हैं। यास्काचार्य ने यज्ञ को ही महान् देव मानते हुए उसके वेदरूपी

---

१. साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः। नि० १।२०।

२. उपदेशाय ग्लायन्तो ऽवरे वितम ग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदांगानि च नि० १।२०

३. न ह्येतेष्वर्थस्येयत्तावधारणमस्ति। महार्था ह्येते दुष्परिज्ञानाश्च। तस्मादेतेषु यावन्तो ऽर्था उपपद्येरन्नाधिदैवाध्यात्माधियज्ञाश्रमा: सर्व एव ते योज्या: (नि.२।२ पर दुर्ग भाष्य)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४ सींग तीन सवन रूपी ३ पैर, प्रायणीय तथा उदयनीय रूपी २ सिर, छन्द-रूपी ७ हाथ मानते हुए यज्ञ को मन्त्र—ब्राह्म—कल्प इन तीन के द्वारा बाँधा हुआ माना है। महाभाष्यकार पतञ्जलि इस मन्त्र की व्याख्या व्याकरणपरक करके शब्द को महान् देव बतला रहे हैं। उनके अनुसार नाम-आख्यात-उपसर्ग-निपात ही चार सींग हैं। तीनों काल तीन चरण हैं। नित्य तथा कार्य के रूप में शब्द के दो सिर हैं। सात विभक्तियाँ ही सात हाथ हैं। इसी प्रकार—

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिण:
गुहा त्रीणि निहिता नेंगयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति
ऋ० १।१६४।४५

पतञ्जलि मुनि ने इस मन्त्र का भी व्याकरणपरक अर्थ ही किया है, जबकि यास्काचार्य ने निरुक्त में आर्षम्, वैयाकरणा:, याज्ञिका:, नैरुक्ता: इत्येके तथा आत्मप्रवादा: कहकर छह व्याख्याएं दिखलायी हैं। स्पष्ट है कि अपने-अपने अभि-प्राय के अनुसार सभी ने इन मन्त्रों की पृथक् पृथक् व्याख्याएं की हैं।

यास्काचार्य ने इन सम्प्रदायों के अतिरिक्त कुछ सम्प्रदायों का उल्लेख किया है। यास्क द्वारा निर्दिष्ट वेद-व्याख्या के मुख्यत: पाँच सम्प्रदाय निरुक्त में उपलब्ध होते हैं—याज्ञिक, आख्यानविद्, ऐतिहासिक, अध्यात्मवादी तथा नैरुक्त। कहीं कहीं पर 'नैदान' नाम भी यास्क लेते हैं। स्पष्ट है कि यास्क से पहले ही वेद-मन्त्रों की व्याख्याएं इस प्रकार की जाती रही होंगी जिनका कि यास्काचार्य ने उल्लेख किया है। बाद में इस विविध वेदार्थ प्रक्रिया का संक्षेप आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक के रूप में कर दिया गया। कालान्तर में इन तीनों में भी याज्ञिक प्रक्रिया ही प्रधान हो गयी—शेष दोनों पद्धतियाँ गौण बन गईं। यहाँ तक कि मन्त्रों का प्रयोजन केवल यज्ञ ही माना जाने लगा। ऐसे समय में ही जैमिनि मुनि ने कहा था 'आम्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यं तदर्थानाम्' अर्थात् वेद यज्ञ के लिए है। यज्ञ से अतिरिक्त वेद मन्त्र अनर्थक हैं। आध्यात्मिक प्रक्रिया को उपनिषदों ने अपना लिया तथा आधिदैविक—अर्थों को निरुक्त एवं स्वल्प रूप में ब्राह्मण ग्रन्थों में देखा जा सकता है। यज्ञ प्रक्रिया प्रधान होने पर यज्ञ की एक-एक क्रिया के लिए पृथक्-पृथक् मन्त्रों का विनियोग किया जाने लगा। उव्वट, महीधर, सायण आदि भाष्यकारों ने अपने भाष्यों में इसी पद्धति का आश्रय लिया। इन भाष्याकारों के समय वेदार्थ प्रक्रिया का आधिदैविक पक्ष बिल्कुल तिरोहित सा हो गया। यहाँ तक कि निरुक्त में जिन मन्त्रों की आधिदैविक व्याख्या की गयी है उनकी भी इन भाष्यकारों ने खींचतान करके याज्ञिक व्याख्या की। उदाहरणार्थ—'इदं विष्णुर्विचक्रमे०' मन्त्र की व्याख्या निरुक्त में सूर्यपरक की गयी है किन्तु सायणा-चार्य ने इसकी याज्ञिक व्याख्या करके इस मन्त्र से वामनावतार सिद्ध किया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार सायण, महीधर आदि सभी प्राचीन भाष्यकारों ने अपने भाष्यों में प्रायः याज्ञिक प्रक्रिया को ही प्रधानता दी। याज्ञिक विधि के साथ-साथ नरबलि, पशुबलि मांस भक्षण, सुरापान आदि क्रूर तथा अनर्गल बातों को भी वेद से सिद्ध किया गया जो लोक धर्म के सर्वथा विपरीत थीं तथा वेद की पवित्रता को सन्देह की कोटि में उपस्थित कर रही थीं। सायण आदि से पूर्व ब्राह्मण ग्रन्थ तथा गृह्यसूत्र आदि ग्रन्थों में भी याज्ञिक प्रक्रिया ने प्रधानता प्राप्त कर ली थी। इन ग्रन्थों में यज्ञों में पशु बलि आदि क्रूर कर्मों का विधान पाया जाने लगा था। यज्ञ में मन्त्रों का विनियोग करना अपराध नहीं है। बिना मन्त्रों के यज्ञ होगा ही कैसे ? विनियोग किये गये मन्त्रों से लोक विपरीत क्रूर कर्मों का प्रतिपादन करना अपराध है। आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द ने यज्ञों में मन्त्रों का दोषरहित विनियोग किया है जिसको उनके बाद के भाष्यकारों ने भी स्वीकार किया है।

प्राचीन भाष्यकारों ने विविध याज्ञिक कर्मकाण्ड की तरह राजाओं आदि के अनित्य इतिहास को भी वेदों से सिद्ध करने का यत्न किया। ऐतिहासिक तथा आख्यात सम्प्रदायों का उल्लेख निरुक्त में यास्क ने भी किया है किन्तु निरुक्त के अवलोकन से प्रतीत होता है कि यास्काचार्य वेदों में मनुष्य आदिकों का अनित्य इतिहास नहीं मानते। आख्यात शैली वेदों में भी अनेकत्र देखी जाती है। वेदों की इसी आख्यात शैली के कारण ही 'यो जात एवं प्रथमो मनस्वान्' ऋ० २।१२।१ मन्त्र की व्याख्या करते हुए यास्काचार्य कहते हैं—ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यात संयुत्या' (नि० १०।१०) इस प्रकार का भाव यास्क ने पुनः 'एकः सुपर्णः स समुद्रमाविवेश०' ऋ० १०. ११४.४ मन्त्र की व्याख्या के अवसर पर नि० १०।४५ पर भी प्रकट किया है। इसका अभिप्राय यह है कि आख्यात में ऋषि की प्रीति होती है। आख्यानों में कोई वास्तविक कथा वर्णित नहीं होती अपितु कथा को प्रभावी बनाने के लिए वर्णन वैचित्र्य मात्र होता है। कालान्तर में इन आख्यानों को ही वास्तविक घटना माना जाने लगा। वास्तविक घटना का सम्बन्ध इतिहास से जोड़ दिया गया। इस प्रकार आख्यानवाद ने ही इतिहासवाद को जन्म दिया। ब्राह्मण ग्रन्थोंकी अर्थवाद शैली, आख्यानवाद तथा इतिहासवाद के बीच की कड़ी है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वृत्र आदि के जहाँ आधिदैविक अर्थ किये गये है वहाँ इन शब्दों की निरुक्ति करते हुए भूतकालवाची क्रिया का प्रयोग किया है जिससे उस शब्द का सम्बन्ध इतिहास से जुड़ जाता है। यथा – वृत्र की निरुक्ति के प्रसंग में "यदवृणोत् तद् वृत्रस्य वृत्रत्वम्, यदवर्तत तद् वृत्रस्य वृत्रत्वम्, यदवर्धत तद् वृत्रस्य वृत्रत्वम्' ब्राह्मण ग्रन्थ द्वारा दी गई इस निरुक्ति में भूतकालिक क्रिया का प्रयोग होने से प्रतीत होता है कि वृत्र नायक कोई दैत्य रहा होगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसने उक्त क्रियाएं की होंगी। यास्काचार्य इन निरुक्तियों को नि० २।१७ पर 'इति विज्ञायते' कहकर ही उद्वृत करते हैं वह इसे स्वीकार नहीं करते। इसी स्थान पर यास्काचार्य ऋ० १.३२.१० का एक मन्त्र उपस्थित करते हैं—

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं विचरन्त्यापो दीर्घं तम आ शयदिन्द्र शत्रुः॥

इस मन्त्र की व्याख्या यास्काचार्य वर्षापरक करते हैं। केवल इतना ही नहीं, अपितु यहां पर नाको वृत्रो मेघ इति नैरुक्ताः' कहकर यास्काचार्य दिखलाना चाहते हैं कि पूरा नैरुक्त सम्प्रदाय ही ऐसे स्थलों पर इतिहास को स्वीकार नहीं करता। इसीलिए उन्होंने लिखा है—तत्रोपमार्थेन युद्धवर्णा भवन्ति। यहां पर यास्काचार्य ने वृत्र के लिए 'त्वाष्ट्रोऽसुर इति ऐतिहासिकाः' कहकर ऐतिहासिक पक्ष का उल्लेख मात्र किया है। इसके प्रति अपनी रुचि प्रदर्शित नहीं की है।

ऐतिहासिक सम्प्रदाय का उल्लेख यास्क ने निरुक्त में अनेक स्थानों पर किया है। ऐसे स्थानों पर उनकी तीन प्रकार की शैली दृष्टिगोचर होती है—(१) कहीं-कहीं पर 'इत्यैतिहासिकाः' कहकर ऐतिहासिक सम्प्रदाय का उल्लेख किया जाता है। ऐसे स्थलों पर यास्क इसके विरोध में 'इति नैरुक्ताः' कहकर इतिहास के विरोध में नैरुक्त मत भी आवश्यक रूप से उपस्थित करते हैं तथा मन्त्रों की आधिदैविक व्याख्या करते हैं। स्पष्ट है कि ऐसे स्थलों पर वे इतिहास को स्वीकार नहीं करते। उपर्युक्त उदाहरण इसी प्रकार का है। इसके अतिरिक्त नि० १२।१० आदि १-२ स्थलों पर अन्यत्र भी ऐसा किया गया है। (२) कहीं-कहीं पर यास्काचार्य 'तत्रेतिहासमाचक्षते' कहकर कोई कथा उपस्थित करके तदनन्तर कोई वेदमन्त्र उपस्थित करते हैं। नि० २।६, २।२४, ६।२३, १०।२५, १२।१० इन ५ स्थलों पर ऐसा किया गया है। ऐसे स्थलों पर पृथक् रूप में नैरुक्त पक्ष उपस्थित नहीं किया जाता है। यहां पर यह अवधेय है कि ऐसे स्थलों पर यास्काचार्य मन्त्र में वर्णित इतिहासपरक शब्दों का आवश्यक रूप से निर्वचन करते हैं। उक्त सभी स्थलों पर उन्होंने देवापि—शन्तनु—प्रिय मेघ—सुदास—मुद्गल—विश्वामित्र—त्रित आदि ऐतिहासिक प्रतीत होने वाले शब्दों का निर्वचन किया है। यास्क जातिवाचक शब्दों का ही निर्वचन करते हैं न कि शाकपूणि आदि कालवाचक शब्दों का। उपर्युक्त सभी शब्द व्यक्तिवाचक हैं। यास्क ने इनका भी निर्वचन किया है। इससे प्रतीत होता है कि इन नामों को ऐतिहासिक, व्यक्तिवाचक न मानकर जातिवाचक यौगिक मानते हैं। जिसका जिस प्रकार का निर्वचन किया गया है, उन-उन गुणों से युक्त सामान्यतः पुरुष के वे नाम हो सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि ऐसे स्थलों पर भी यास्काचार्य इतिहास को स्वीकार नहीं करते। इसीलिए वररुचि ने कहा है—औपचारिकोऽयं मन्त्रेष्वाख्यातसमयः नित्यत्वविरोधात्। परमार्थेन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तु नित्यपक्ष एव इति नैरुक्तानां सिद्धान्तः (नि० समु० ४।१४) यही भाव निरुक्त और स्कन्द महेश्वरकृत टीका २।१२ में भी प्रकट किये गये हैं। वस्तुतः ऐसे स्थलों प इतिहास शब्द वास्तविक इतिहास का वाचक होता ही नहीं है। महाभारत में 'तत्रोदाहरन्ति हेमेतिहासं पुरातनम्' कहकर पशुपक्षियों की काल्पनिक कथा वर्णित की गयी है। इसी प्रकार ऐसे स्थलों पर यास्क निर्दिष्ट इतिहास पद भी काल्पनिक इतिहास का वाचक है, वास्तविक इतिहास का नहीं। ऐसा ही विचार आचार्य दुर्ग ने भी प्रकट किया है—

'तत्रैतस्मिन्नर्थे इतिहासमाचक्षते आत्मविद इतिवृत्तं परकृत्यार्थवाद रूपेण। यः कश्चिदाध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिको वार्थ आख्यायते दिष्ट्युदितावभासनार्थं स इतिहास इत्युच्यते। स पुनरयमितिहासः सर्वप्रकारो नित्यमविवक्षितस्वार्थः तदर्थप्रतिपत्तॄणामुपदेशपरत्वात्। नि० १०।२५ पर दुर्ग भाष्य। (३) कुछ स्थलों पर यास्क 'इत्यैतिहासिकाः' 'तत्रेतिहासमाचक्षते' आदि शब्दों का प्रयोग न कर अति संक्षेप में कोई कथा उद्धृत करके किसी वेदमन्त्र को उपस्थित करते हैं। ऐसे स्थलों पर यास्क का ध्यान मन्त्र के निर्वचन की ओर रहता है, इतिहास की ओर नहीं। नि० १।५, २।८, ४।६, ६।६ में ऐसा किया गया है। इन स्थलों पर उद्धृत वेद मन्त्रों का अर्थ यास्क ने इतिहासपरक नहीं किया है। एक स्थल से तो ऐसे सभी स्थलों में इतिहास का सर्वथा निराकरण हो जाता है। नि० २।८ पर यास्क ने लिखा है—शाकपूणि ने मन्त्रों के सभी देवताओं को जानने का संकल्प किया। उसके सामने देवता स्त्री तथा पुरुष के रूप में उभय लिंग प्रकट हो गये। शाकपूणि ने पूछा मैं तुमको जानना चाहता हूं। देवता ने उसे 'अयं स शिक्ते०' ऋ० १।१६४।२९ इस ऋचा का उपदेश दिया। इस प्रसंग से स्पष्ट है कि ऐसे स्थलों पर इतिहास सम्बन्धी कोई बात नहीं होती अपितु यह आख्यानात्मक वर्णन है। मन्त्रों के देवता किसी के सामने प्रकट नहीं हो सकते। इसी प्रकार का एक प्रसंग नि.२।७ में भी है। यहां पर यास्क ने 'स मां तपन्ति० ऋ० १।१०५।८ यह मन्त्र उपस्थित करके लिखा है कि 'त्रित' को कूप के अन्दर यह सूक्त प्रतिभासित हुआ। इसके पश्चात यास्क 'त्रित' की 'तीर्णतमो मेधया' कहकर निरुक्ति भी करते हैं। इससे प्रतीत होता है कि किसी ऐतिहासिक 'त्रित' का यहां वर्णन नहीं है। जो भी अत्यन्त मेधावी होगा, वही त्रित कहलायेगा। यहाँ पर एक बात विचारणीय है कि ऐसे स्थलों पर मन्त्र उपस्थित करके जिस व्यक्ति के नाम से कोई कथा उपस्थित की जाती है, उस व्यक्ति का वह नाम मन्त्र में उल्लिखित नहीं रहता। यथा उक्त उदाहरण में ही 'त्रित' नाम मन्त्र में पठित नहीं है। इसी प्रकार अन्य स्थलों पर भी है। प्रश्न है कि मन्त्र में वह पद न रहने पर भी यास्क वहां इतिहास को कैसे उपस्थित करते हैं?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यास्काचार्य का झुकाव इतिहास पक्ष की ओर नहीं है, यह बात इससे भी पुष्ट होती है कि यास्क के उत्तरवर्ती भाष्यकारों ने जिन मन्त्रों में च्यवन ऋषि, सरमा-पणि, यमयमी, विष्णु आदि के इतिहास को विस्तार से सिद्ध किया है वहां यास्क उन मन्त्रों में इतिहास का किञ्चित् मात्र भी संकेत न देकर 'च्यवन' आदि शब्दों के यौगिक अर्थ करते है—यथा च्यवन ऋषिर्भवति स्तोमानाम्—नि० ४।१९ सरमा सरणात् --नि ११।२४, विष्णु विंशतेर्वा, व्यश्नोतेर्वा—नि० १२।१८ सायण आदि भाष्यकारों ने इन स्थलों पर अपने भाष्यों में च्यवन आदि के इतिहास को अपनी कल्पना से सिद्ध किया है। निरुक्त में उसका कोई संकेत नहीं है। इन प्राचीन भाष्यों का अनुकरण करते हुए आधुनिक पाश्चात्य भाष्यकारों ने भी सायण आदि की भांति इतिहास आदि की कल्पना को अपने वेद भाष्यों में स्वीकार कर लिया। वेदों को मनुष्यकृत, अनित्य, समय पर संगृहीत मानकर तो यह कार्य उनके लिए और भी सुगम हो गया। उनके भाष्यों में ऐसी कोई नवीनता नहीं है जिसके आधार पर वेद-मन्त्रों अथवा पाश्चात्यों द्वारा किये गये वेद भाष्यों का गौरव ज्ञात हो सके। मैक्स-मूलर का भाष्य तो प्रकारान्तर से सायण भाष्य का ही अनुवाद मात्र है। यही दशा अन्य भाष्यकारों की भी है।

आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द ने अपने भाष्य को इन सभी मान्यताओं से अछूता रखकर सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के छठे मण्डल तक का भाष्य किया है। अनेक मन्त्रों में स्वामीजी ने विज्ञान का प्रतिपादन किया है। स्वामीजी प्रायः वाचक-लुप्तोपमा अलकार का आश्रय लेकर अनेक मन्त्रों का राजा, सेनापति, पुरोहित, विद्वान्, सभापतिपरक अर्थ करते हैं। इससे उनका भाष्य लोक विरुद्ध बातों को छोड़कर लोकोपयोगी सिद्ध होता है। अपने भाष्य में स्वामीजी ने निरुक्त एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का भी आश्रय लिया, जिनके आधार पर उन्होंने मन्त्रों में पठित विश्वामित्र, वसिष्ठ, गौतम आदि शब्दों का यौगिक अर्थ करते हुए अपने भाष्य को इतिहास से भी सर्वथा दूर रखा है।

स्वामीजी ने अपने भाष्य में—

आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक इन तीनों विधाओं को ग्रहण किया है, ऐसा भी देखने में आया है कि निरुक्त में किसी मन्त्र की व्याख्या एक पक्ष को लेकर की गयी है तो स्वामी जी ने अपने भाष्य में दूसरे पक्ष का आश्रय लिया है। यथा—'य ईं चकार न सो अस्य वेद' (ऋ० १।१६४।३२) निरुक्त में 'वर्षकर्मेति नैरुक्ताः' कहकर इसकी वर्षापरक व्याख्या की गयी किन्तु स्वामी जी ने इसकी व्याख्या जीवपरक की है। उपसर्गों तथा धातुओं के विषय में भी कहीं-कहीं निरुक्त तथा स्वामी जी के भाष्य में अन्तर है। यथा—'अयं स शिङ्क्ते०' (ऋ०१।१६४।२९) इस मन्त्र में 'प्रति' उपसर्ग का सम्बन्ध स्वामी जी ने 'मिमाति' क्रिया से करके प्रति निमिमाति का अर्थ जाती है किया है जबकि यास्काचार्य ने प्रति का सम्बन्ध 'ओहत' क्रिया से किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। स्वामी जी ने 'ओहत' के साथ 'नि' उपसर्ग को जोड़कर 'निरन्तर वितर्क से प्राप्त होती है' यह अर्थ किया है। यास्काचार्य ने 'नि' का सम्बन्ध 'चकार' से करके 'निचकार' का 'नीचैः करोति' अर्थ किया है। दोनों ने ही मन्त्र का अर्थ वर्षापरक किया है। (२) न नूनमास्ति० ऋ०१।१७०।१ इस मन्त्र में यास्क ने 'नूनम्' का विचिकित्सा अर्थ किया है जबकि स्वामीजी ने इसका अर्थ 'निश्चित' किया है। 'नूनं सा ते प्रतिवरं० ऋ० ७।११।२१ की व्याख्या मे भी स्वामी जी 'नूनम्' का 'निश्चित' अर्थ ही करते हैं जबकि यास्क इस मन्त्र में इसे पदपूरणार्थक मानते हैं। यास्काचार्य नूनमिति विचिकित्सार्थीय भाषायामुमयमन्वध्याय' विचिकित्सार्थीयश्च पदपूरणश्च कहकर 'नूनम्' के उक्त दो अर्थ स्वीकार करते हैं जबकि स्वामी जी इसे निश्चयार्थक मानते हैं।

इस प्रकार शब्दों-उपसर्गों-धातुओं में कहीं-कहीं थोड़ा बहुत अर्थ भेद करते हुए भी स्वामी जी निरुक्तकार की मूल भावना के विपरीत नहीं गये हैं। उन्होंने वेद को ईश्वरीय कृति तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक मानकर अपना भाष्य किया तथा उन सभी अश्लील, क्रूर तथा घृणित बातों से अपने भाष्य को दूर रखा है जिनका प्रतिपादन सायण,महीधर आदि के भाष्यों में किया गया था। सायण से पूर्व भी माधव भट्ट,स्कन्द स्वामी, नारायण, उद्गीथ,वेंकट माधव, महाभास्कर आदि भाष्यकर थे किन्तु किसीने भी सब वेदों पर भाष्य नहीं किया। सायणाचार्य ने सर्व प्रथम चारों वेदों पर भाष्य करके वेदार्थ की इयत्ता निर्धारण करने का अति साहसिक कार्य किया। सायण तथा उव्वट दाक्षिणात्य थे। इनके भाष्यों के आधार पर ही महीधर ने यजुर्वेद का भाष्य किया जिसमें अश्लीलता की पराकाष्ठा है। अपने भाष्य के विषय में महीधर स्वयं कहता है—'भाष्यं विलोक्यो-व्वटमाधवीयम्'अर्थात् माधव तथा उव्वट के आधार पर ही मैंने अपना भाष्य बनाया है। अपनी मान्यताओं को वेदमन्त्रों से सिद्ध करना ही भाष्यकारों का प्रयोजन था। यहाँ तक कि मनुष्य बलि, पशुबलि, इतिहास आदि की क्रूर तथा असम्भव कल्पनाओं को भी खींचातानी करके अपने भाष्यों में समाविष्ट कर लिया। वैष्णव होने के कारण शरीर को दग्ध करने वाली छाप का वर्णन भी सायणाचार्य ने वेद से सिद्ध किया। इसी प्रकार राजाओं आदि के इतिहास को भी वेदों से निकाला जाने लगा। ऋग्वेद के यमयमी सूक्त से सगे भाई बहिन के विवाह आदि की कल्पना की गयी। यह सब कुछ तब हुआ जबकि भाष्यकारों ने वेदमन्त्रों को अपनी मान्यताओं के अनुरूप ढालने का यत्न किया। भाष्यकारों की न्यूनता के कारण वेद मन्त्रों ने भी भाष्यों के आधार पर सुरापान, मांस भक्षण, नरबलि, पशुबलि आदि मान्यताओं को धारण कर लिया। इस विषय में निरुक्त के टीकाकार दुर्गाचार्य का कथन ध्यान देने योग्य है कि भाष्य-कार के वैशिष्ट्य के आधार पर ही वेद मन्त्र उच्च तथा अधम अर्थों को उसी प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धारण कर लेते हैं यथा अश्वारोह की विशिष्टता के कारण अश्वारोही को अश्व साधु या असाधु गति से ले जाता है।१

सायण तथा महीधरादि से पूर्व ब्राह्मण ग्रन्थों में भी कुछ मन्त्रों के अनर्गल अर्थ देखने को मिलते हैं किन्तु दूसरे स्थानों पर उन्हीं ब्राह्मण ग्रन्थों में उन वेद मन्त्रों के शुद्ध व्यवहारोचित अर्थ भी उपलब्ध होते हैं। यथा 'गणानां त्वा गणपतिं हवामहे०' इस मन्त्र का महीधर ने अत्यन्त अश्लील अर्थ किया है जिसमें यजमान पत्नी को मृत घोड़े के साथ शयन करने को कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में भी वैसा ही अर्थ उपलब्ध है किन्तु दूसरे स्थान पर शतपथ ब्राह्मण में ही इस मन्त्र का अत्यन्त शुद्ध अर्थ भी उपलब्ध होता है। इन भाष्यों को देखने से इस धारणा को बल मिलता है कि मांस यज्ञ, नरबलि, मद्यपान गुप्तेन्द्रिय पूजन आदि आसुरी प्रवृत्तियों का ब्राह्मणादि ग्रन्थों में प्रक्षेप कर दिया तथा उन धारणाओं की पुष्टि की गयी वेद मन्त्रों का प्रमाण देकर। यदि ऐसा न माना जाए तो प्रश्न होता है कि क्या वेद इसी प्रकार के कुकृत्यों का प्रतिपादन करता है। यदि इसका उत्तर हम 'हां' में देते हैं तो हमारे पास महात्मा बुद्ध के समान वेदों का बहिष्कार करने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं बच पाता है। असुरों को छोड़कर कोई भी सभ्य समाज इस प्रकार के कुकृत्यों का समाज में प्रचार सहन नहीं करेगा। 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' आदि वचनों की शरण लेकर भी हम उस पाप से नहीं बच सकते जो उन क्रूर कर्मों के आधार पर प्राप्त होगा। इस विषय में हमें बृहस्पति स्मृति का यह वचन स्मरण रखना चाहिए—

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीने विचारे तु धर्म लोपः प्रजायते ॥

अर्थात् केवल शास्त्र का आश्रय लेकर किसी बात का निर्णय नहीं करना चाहिए। यदि शास्त्र द्वारा युक्तिहीन विचारों का प्रतिपादन किया जाने लगा तो धर्म का लोप हो जायेगा। यदि वेद भाष्यों द्वारा नर बलि, पशु हत्या तथा अश्लील कार्यों का प्रतिपादन किया जाने लगा तो क्या लोक धर्म स्थित रह सकता है? इसलिए वेदों का भाष्य करते समय निम्न चार परीक्षाओं को ध्यान में रखना चाहिये—(१) युक्तियुक्तता। कणाद मुनि ने वैशेषिक दर्शन में कहा-बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे (वैशे. ६.१.१.) अर्थात् वेद में बुद्धिपूर्वक बातें कही गयी हैं। ऐसी कोई भी बात जो बुद्धि तथा सृष्टिक्रम के विपरीत हो, वेदों से प्रतिपादित नहीं की जा सकती। (२) निरुक्त—वेद में युक्तियुक्तता की पुष्टि के लिए निरुक्त का आश्रय अपरिहार्य है। निरुक्तकार ने वेद भाष्यों की सभी विधाओं पर प्रकाश

१. यथाश्वारोह वैशिष्ट्यादश्वः साधुरसाधुश्च वहति एवमेते वक्तृवैशिष्ट्यात् साधून्साधुतरांश्चार्थान् स्रवन्ति। (निरुक्त २।२ पर दुर्गभाष्य)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डाल दिया है। नैरुक्त सम्प्रदाय नामों को धातुज स्वीकार करता है, यौगिक नहीं। इसी लिए पतञ्जलि मुनि कहते हैं- 'नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्'। इस सिद्धान्त के अनुसार वेदों में आये हुए ऋषियों तथा राजाओं के नामों को ऐतिहासिक न मान कर उनका युक्ति संगत धातुज अर्थ ग्रहण करना चाहिये। यथा अथर्व २०।१२७।७-९ मन्त्रों में आए हुये 'परीक्षित' शब्द से महाभारत कालीन परीक्षित राजा का ग्रहण न करके 'संवत्सरो वै परीक्षितः संवत्सरो हीदं सर्वं' परिक्षीयतीति। अथो खल्वाहुः अग्निर्वै परिक्षित। अग्निर्हीदं सर्वं परिक्षीयतीति। गोपथ २.६.१२ के अनुसार संवत्सर तथा अग्नि का ग्रहण करना चाहिये।

इसी प्रकार मन्त्रों में आये हुए वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि नामों से भी ऐतिहासिक व्यक्तियों का ग्रहण न करके इन शब्दों के वास्तविक अर्थ का अन्वेषण करना चाहिये। यथा मनु० ३४।५५ में कहा है 'सप्त ऋषयः प्रतिहताः शरीरे०' अर्थात् शरीर में ही सप्त ऋषियों का निवास है। यजु० १३।५४ पर वसिष्ठ के अर्थ को स्पष्ट करते हुए श० ब्रा० ८।१।१।६ कहता है—'प्राणो वै वशिष्ठ ऋषिः' अर्थात् प्राण ही वशिष्ठ ऋषि है। इसी प्रकार अन्य ऋषियों के विषय में शत० में लिखा है। चक्षुर्वै जमदग्नि ऋषिर्यदनेन जगत् पश्यत्यथो मनुते। श्रोत्रं वै विश्वामित्र ऋषिर्यदनेन शृणोत्यथो यदस्मै सर्वतो मित्रं भवति, मनो वै भरद्वाज ऋषिरन्नं वाजो, यो वै मनो बिभर्ति, सोऽन्नं वाजं भरति शत० ८।१।२।३,६,९। इस सिद्धान्त को ध्यान में न रखने के कारण ही आजकल स्वामी गंगेश्वरानन्द जी जैसे विद्वान् पुरुष भी वेदों में से 'अदृश्य कृष्णमह अहरर्जुनश्च (यजुर्वेद) आदि मन्त्रों के आधार पर कृष्ण, अर्जुन, भीम, राम, हनुमान् आदि की कथाओं का प्रतिपादन कर रहे हैं। (३) व्याकरण—वेदार्थ के लिए निरुक्त के समान व्याकरण भी अपरिहार्य है। इसीलिए पतञ्जलि मुनि ने कहा है 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्' व्याकरण के आधार पर लोप, आगम व वर्ण विकार आदि को यथावत् समझ कर ही विशुद्ध वेदार्थ सम्भव है। अनेक स्थानों पर शब्दों में विभक्ति परिवर्तन भी करना पड़ता है। यह सब कुछ व्याकरण के पूर्व ज्ञान बिना सम्भव नहीं है। स्वामी विद्यानन्द विदेह जैसे कुछ व्यक्तियों ने व्याकरण को आधार न बनाते हुए भी वेदार्थ किये हैं। ऐसे व्यक्तियों के विषय में ही पतञ्जलि ने कहा है कि प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् वेद पढ़ने से पूर्व व्याकरण का अध्ययन किया जाता था किन्तु आजकल तो 'वेदमधीत्य त्वरिता वक्तारो भवन्ति' बिना व्याकरण पढ़े ही वेद के वक्ता बन जाते हैं। यह स्थिति आज की है। (४) तर्क—वेद के शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं। इसी प्रकार वेद मन्त्र भी विविध अर्थ का प्रतिपादन करते हैं। किस स्थल पर किस वेद मन्त्र अथवा शब्द का क्या अर्थ किया जाये, ऐसे विवादास्पद स्थलों में किसी पूर्वाग्रह को मन में न रखकर तर्क के आधार पर अर्थ करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तर्क को साक्षात् ऋषि कहा गया है। एक ऋषि की भांति ही तर्क भी वेदार्थ करने में सहायक है। (५) गौणी वृत्ति—वेदों में अनेक मन्त्रों में आलंकारिक वर्णन पाये जाते हैं। ऐसे स्थलों पर शब्दों के मुख्यार्थ का ग्रहण न करके गौणी वृत्ति का आश्रय लेकर अन्य अर्थ करना चाहिए। जैसा कि न्याय मंजरी में जयन्त भट्ट ने कहा है--न हि मुख्ययैव वृत्त्या लोके शब्दाः प्रवर्त्तन्ते, गौण्याऽपि वृत्त्या व्यवहार-दर्शनात्। एवं वेदेऽपि तेषां प्रयोगो भविष्यति। वेदों में यमयमी संवाद, सरमा-पणिसंवाद, पुरुरवा उर्वशी संवाद, विश्वामित्र-नदी संवाद आदि अनेक स्थल इस प्रकार के है जहां गौणी वृत्ति का आश्रय लिये बिना सत्य वेदार्थ करना सम्भव नहीं है। उदाहरणार्थ अश्विनौ तथा सुकन्या के सम्वाद को ब्राह्मण ग्रन्थों में इस प्रकार स्पष्ट किया गया है कि सुकन्या की प्रार्थना पर अश्विनौ ने उसके पति को जवान बना दिया। क्या ये अश्विनौ व्यक्ति विशेष थे या अन्य कुछ? शतपथ ब्राह्मण ४।१।५।१६ में इसे इस प्रकार स्पष्ट किया गया है। 'इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षमश्विनौ'। स्वामी दयानन्द ने इन्द्र अहिल्या आदि के इस प्रकार के आख्यानों के युक्ति संगत अर्थ किये हैं। के अर्थ करने में पूर्वाग्रह को दूर रखना होगा। (६) भूयोविद्य-महाभारत में कहा है--

इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति ॥ महा० आ० प० १.३.३७

ब्राह्मण, आरण्यक, पुराण आदि ग्रन्थों में इस प्रकार के गौण आख्यान अनेक हैं जिनका वास्तविक अर्थ न लेकर दूसरा ही अर्थ लेना पड़ता है। वेदभाष्यकर्त्ता को बहुश्रुत होना चाहिए। याज्ञिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, वैज्ञानिक व्याख्याओं के लिए भाष्यकर्ता का यज्ञ, विज्ञान, आयुर्वेद आदि क्षेत्रों में प्रवेश भी अनिवार्य है। जिसका जितना विस्तृत ज्ञान होगा उसका वेद भाष्य उतना ही प्रशंसनीय होगा। इसीलिए यास्क मुनि ने कहा है 'पारोवर्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति'। अल्पश्रुत को महाभारत के अनुसार वेद भाष्य करने का अधिकार नहीं है। (७) मेधा, तपस्या - बहुश्रुतता के साथ-साथ वेद भाष्य कर्ता के लिए अनिवार्य वस्तु हैं मेधा तथा तपस्या। कोई भी व्यक्ति तपस्या तथा ऋषित्व के बिना केवल ज्ञान के आधार पर वेद का वास्तविक अर्थ नहीं कर सकता। निरुक्त में तो स्पष्ट रूप में कहा गया है 'न ह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा' (नि० १३।१२) अर्थात् जो तपस्वी तथा ऋषि नहीं है, वह वेदार्थ करने का अधिकारी नहीं है। तपस्या तथा ऋषित्व के साथ-साथ मेधावी

१. मनुष्या वा ऋषिपूत्क्रामत्सु देवानब्रुवन् को न ऋषिर्भविष्यतीति। तेभ्य एतं तर्कमृषिं प्रायच्छन्मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूढम्। नि० १३।१२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होना भी वेदार्थ करने के लिए अनिवार्य है। सांख्य दर्शन ५।४० में कहा गया है—लोके व्युत्पन्नस्य वेदार्थं प्रतीतिः' । तैत्तिरीय संहिता ३।४।६।५ में तो स्पष्ट रूप में कहा गया है-छन्दांसि खलु वा एतं नोपनमन्ति यं मेधा नोपनमति' अर्थात् जो मेधावी नहीं है, वह वेदार्थ नहीं जान सकता। वेदार्थ करने के लिए ऋषित्व को अनिवार्य मानते हुए आधुनिक भाष्यकार श्री अरविन्द लिखते हैं—'वेद के वचन उनके सत्य अर्थों में केवल उसी के द्वारा जाने जा सकते है जो स्वयं ऋषि या रहस्य-वेत्ता योगी हों। अन्यों के प्रति मन्त्र अपने गुह्य ज्ञान को नहीं खोलते। दुर्गाचार्य ने निरुक्त १।१६ पर भाष्य करते हुए कहा है 'गम्भीर पदार्थो हि वेदः।' वेद का अर्थ अत्यन्त गम्भीर है। ऐसे गम्भीर अर्थ करने का सभी को अधिकार नहीं है।

वचन वीथि

किसी गणराज्य में जितना अज्ञान और बुराइयां होंगी उतने ही अनुपात में सरकार निरंकुश होगी। —स्प्रेग

प्रकाश ईश्वर की छाया है। —प्लेटो

साहित्य छड़ी के रूप में महान्, किन्तु बैसाखी के रूप में दयनीय है। —वाल्टर स्काट

परमात्मा पुरुषों के लिए और धर्म स्त्रियों के लिए। —जोसेफ कोनराड

दयालुता ऐसी भाषा है जिसे गूंगे भी बोल सकते हैं तथा बहरे भी सुन और समझ सकते हैं। —बोवी

ज्ञान का बीज तो एकान्त में बोया जा सकता है, किन्तु उसकी फसल सार्वजनिक रूप में ही काटी जानी चाहिए। —जॉनसन

पति : फिर नयी साड़ी ले आयीं तुम ! तुम्हारे खयाल से मैं क्या जाली नोट छापने का धन्धा किया करता हूं ?

पत्नी : देखो जी, मर्दों के काम-धाम के बारे में पूछताछ करने की आदत नहीं है मेरी।

एक जज को बचपन में इस बात से बड़ी चिढ़ थी कि एक-एक गलती पर मास्टर लोग कई-कई बार क्यों लिखवाते हैं

एक बार बिना रोशनी के साइकिल चलाने के अपराध में एक मास्टर पकड़े गये। जज ने दण्ड सुनाया कि पांच सौ बार आप यह लिखिये कि भविष्य में बिना बत्ती के साइकिल कभी नही चलाऊंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—पुरुषोत्तम नागेश ओक
अनु० जगमोहन राव भट्ट

पोप हिन्दू पुरोहित था ?

ईसा-पूर्व युग में वैदिक सभ्यता विश्व में फैली हुई थी क्योंकि सुदक्ष, उत्साही भारतीय जनता का नीति वाक्य, ऋग्वेद में उल्लिखित "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" (सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाओ) था। क्षत्रियों की संज्ञा से सम्बोधित होने वाले भारतीय योद्धाओं की सेनाओं का विश्व के सभी ओर-छोरों में प्रभुत्व हुआ तथा भारतीय शिक्षकों एवं प्रशासकों ने एक ऐसे मानव-समुदाय में ज्ञान का प्रचार किया जो उस समय आदिम स्तर पर था।

उस हिन्दू सभ्यता को प्रथम बार ईसाई मत ने, और बाद में भयंकर यातनाओं और आतंक द्वारा इस्लाम प्रसारित करने वाले अरबों ने मशाल और तलवार के बल पर कमजोर किया था। इन सब बाधाओं के होते हुए भी हिंदू सभ्यता के विश्वव्यापी प्रसार की कहानी का ताना-बाना पुनः संग्रह कर पाना सम्भव है।

ईसा-पूर्व युग में, इटली का एक बहुत बड़ा भाग 'एटरुरिया' के नाम से विख्यात था और सातवीं से दूसरी शताब्दी ईसा-पूर्व तक वहाँ जन्मी, संवर्धित हुई संतति का नाम 'एटरस्कन' था। एटरस्कनों के संबंध में कुछ जानकारी 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' और स्पष्टतः अन्य विश्वकोषों में भी है।

अधिकतर विद्वानों का मत है कि एटरस्कन लोग पूर्व-दिशा से आये थे और वे इटली में अकस्मात् ही इस प्रकार दृष्टिगोचर होने लगे थे मानो किसी अन्य स्थान से न आये हों!

यह धारणा निराधार है कि एटरस्कन अकस्मात् ही किसी अन्य देश से अस्थायी रूप में आ गये थे और फिर ईसा से दो शताब्दी पूर्व के आसपास अन्यत्र चले गये— इटली को सदैव के लिए छोड़ आये। एटरस्कन सभ्यता स्वयं इटली से ही उद्भूत हुई थी और इसका पृथक् अस्तित्व तब समाप्त हो गया, जब इटली की जनता ने (जो उस समय एटरस्कनों के नाम से जानी जाती थी) विवशतावश ईसाई धर्म अंगीकार कर लिया

मैंने कुछ साक्ष्य-संकलन किया है जो सिद्ध करता है कि ईसा-पूर्वयुगीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतालवी जनसमुदाय, चाहे वह एटरूस्कन-युग का हो अथवा उससे पूर्व-युग का, हिन्दू था।

इटली में वैदिक जीवन-पद्धति और संस्कृत का प्राचुर्य इसी तथ्य से लक्षित किया जा सकता है कि लगभग २,००० वर्ष तक ईसाई-धर्म की उद्घोषणा करने के बाद भी इटलीवासी ईसाई-नामों के अन्तर्गत हिन्दू रीति-रिवाज निभा रहे हैं।

'ऑल सोल्स डे' समारोह का उदाहरण लें। स्वयं यह शब्दावली संस्कृत, हिंदू संस्कार 'सर्व-पितृ-अमावस्या' का अंग्रेजी रूपान्तर है। संस्कृत में 'सर्व' का अर्थ अंग्रेजी का 'आल' है। 'पितृ' पूर्वजों की आत्माओं का द्योतक है और 'अमावस्या' (नव-चंद्र) दिवस है।

'क्रिस्तमास' शब्द कृष्ण-मास अर्थात् महाभारत-युग के समय हिंदू अवतार कृष्ण-मास है। संस्कृत में 'मास' शब्द का अर्थ 'महीना' है क्योंकि महाभारत युद्ध में, जो दिसम्बर में हुआ था, श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'भगवद्गीता' का उपदेश दिया था, इसीलिए सारा विश्व दिसम्बर मास को कृष्ण-मास के रूप में मानता है।

ईसाई लोगों का यह विश्वास असत्य था कि 'क्रिसमस' (क्रिस्तमास) तो दिसम्बर मास का अंतिम सप्ताह था। 'मास' प्रत्यय इस बात का द्योतक है कि 'क्रिस्तमास' शब्द मूलतः संस्कृत शब्द है जो पूरे मास को ही बताने वाला है।

इस बात को एक अन्य पर्याय, अर्थात् 'एक्स-मास' से तुलना करके प्रमाणित किया का सकता है। ईसाई लोगों का यह विश्वास गलत है कि 'एक्स-मास' शब्दावली दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह की द्योतक है। 'एक्स-मास' शब्दावली दिसम्बर मास की द्योतक है क्योंकि 'एक्स' प्रतीक रोमन-संख्यावाची दस का सूचक है। अतः 'एक्स-मास' शब्दावली भी पूरे मास की द्योतक है। 'दिसम्बर' शब्द भी संस्कृत 'दश-अम्बर' (आकाश-मंडल स्थित १२ राशि-चक्र का) दशवां मास है। इससे अर्थ लगाया जा सकता है कि प्राचीन हिंदू परम्परा ने आकाश-मंडल, राशिचक्र के १२ भागों को १२ मासों के नाम प्रदान किये थे।

ये तथ्य सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर मासों के द्योतक संस्कृत के चार शब्दों सप्त-अम्बर, अष्ट-अम्बर, नव-अम्बर, और दश-अम्बर से पूर्णतः पुष्ट होता है। भाव यह है कि अपने संस्कृत अर्थद्योतन के अनुसार ये मास वर्ष के सातवें आठवें, नवें और दसवें मास हैं। ग्रेगरीपंचांग में यह असंगत अवस्थिति किस कारण उपस्थित हो गयी ? अर्थात् सातवें, आठवें, नवें, और दसवें मास को नवें, दसवें और ग्यारहवें तथा बारहवें मास का स्थान देने का कारण क्या था ? इस स्थान-परिवर्तन का स्पष्टीकरण इस तथ्य से हो जाता है कि प्राचीन. स्मरणातीत युग से चली आयी हिंदू पद्धति के अनुसार मार्च मास में नव-वर्ष का प्रारम्भ मानते आये ईसाइयों ने 'अकस्मात्' ही जनवरी—१ को नव-वर्ष दिवस मनाना शुरू कर दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्पष्ट है कि 'दिसम्बर', 'एकर-मास' और 'क्रिस्तमास आदि शब्द दसवें मास के द्योतक हैं। 'क्रिस्तमास' शब्द का तो अन्य महत्व भी है—अर्थात् यह 'कृष्ण-मास' भी है, अर्थात् भगवान कृष्ण की स्मृति का मास है जब उन्होंने अपना महोपदेश अर्जुन को दिया था। भारत में इस ज्ञानोपदेश की वर्षगांठ 'गीता-जयंती' के रूप में मनाते हैं, और वह दिसम्बर मास में ही होती हैं। ईसा (क्रिस्त) का आरूढ़ावस्था में उपदेश उससे भिन्नावस्था नहीं है जो कृष्ण ने रथारूढ़ावस्था में अर्जुन को दिया था। अत: कृष्णोपदेश वास्तव में आरूढ़ावस्था में उपदेश ही है।

जिस क्रास-पदक को ईसाई धारण करते हैं, वह वास्तव में हिंदू स्वस्तिक चिन्ह है, यद्यपि अन्य अनेक मामलों के समान ही इसमें भी थोड़ी-बहुत हेराफेरी कर दी गयी है—उसके अंकुश काट दिये गये हैं और क्रास की आड़ी पट्टी लम्बी कर दी गयी है।

क्रिस्तमास (क्रिसमस) का सम्बन्ध कृष्ण से समझ लेने के बाद अब यह हृदयंगम करना कठिन नहीं है कि 'माइकेलमास' मूलत: माइकेल के नाम पर 'मास' का था। 'माइकेलमास' शब्द में 'मास' प्रत्यय स्पष्ट रूप में बताता है कि इस पूर्ण शब्द से पूरे मास की अभिव्यंजना होती थी, न कि मात्र सितम्बर २९ की। 'माइकेलमास दिवस' नामक ईसाई शब्द में स्वयं भाव-विरोध है जिसमें एक मास को 'दिवस' बना दिया गया है।

नवम्बर—१ को मनाया जाने वाला 'आल सेंटस् डे' हिंदू दीपावली दिवस (पर्व) है जो नरक चतुर्दशी कहलाता है। इस दिन भगवान् विष्णु ने नरकासुर को मारकर पाताल भेज दिया था और पृथ्वी सभी संतों के लिए सुरक्षित हो गयी थी। इसीलिए, हिंदू-प्रथा के अनुसार ईसाई परम्परा में भी इस दिवस को पुण्य पर्व, प्रीतिभोज आदि के रूप में मनाया जाता है।

'फादर' का द्योतक 'पोप' पद भी संरक्षण की अर्थ-द्योतक, संस्कृत की 'पा' धातु से व्युत्पन्न है। अपने बच्चों को संरक्षण प्रदान करने वाले पिता के समान ही 'पोप' ईसाई धर्मसंघ, समुदाय का आध्यात्मिक पिता (संरक्षक) है।

'पोप' उपाधि जिस संस्कृत धातु से व्युत्पन्न है—उससे स्पष्ट है कि पोप एक हिन्दू पुरोहित था। उसका रोम में वाटिकान स्थिति पीठ, हिन्दू धर्म-पीठ था। 'वाटिका' शब्द कुंज, निकुंज, लतामंडप आदि का द्योतक (शब्द) संस्कृत का है, यथा 'आश्रमवाटिका', 'उद्यान-वाटिका' आदि में। हिन्दू संत-महात्माओं और पुरोहितों के एकांत आश्रम-स्थान-वाटिकाएं कहलाते थे क्योंकि वे लोग सदैव शांतिपू साधक थे अत: वन्य स्थलों में रहते थे। 'न' अंतिम अक्षर भी संस्कृत का है, यथार्ण 'केशवन' या 'राघवन' या 'वाटिकान' या 'आश्रम' में।

इस बात का एक अन्य प्रमाण कि पोप एक हिन्दू पुरोहित था और उसकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाटिकान धार्मिक हिंदू पीठ थी, भगवान् शिव के प्रतीक उस शिवलिंग में उपलब्ध होता है जो वाटिकान-स्थित एटरूस्कन संग्रहालय में सुरक्षित है। यह शिवलिंग उन वस्तुओं में से एक है जिसे हिन्दू पोप (पुरोहित) पूजता था।

हमारे पास उस पवित्र हिंदू शिवलिंग का चित्र है जो वाटिकान के एटरूस्कन संग्रहालय में दर्शनार्थ रखा हुआ है। उसे देखकर मन में पूरा विश्वास जम जाता है कि यह तो परम्परागत हिंदू शिवलिंग प्रतीक है। 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' से भी ज्ञात है कि एटरूस्कन लोग उत्कीर्ण कुरसी पर आरूढ़ क्षणप्रभ प्रस्तर की पूजा किया करते थे। स्पष्टतः, शिवलिंग का यह सही विवरण है।

एनसाइक्लोपीडिया के आठवें खंड के पृष्ठ ७६० पर निम्नलिखित जानकारी है—**लिबो के अनुसार किसी भी अन्य राष्ट्र की अपेक्षा एटरूस्कन लोग धार्मिक रीतिरिवाजों में अधिक लिप्त थे। स्थानों, वृक्षों और पुस्तकों में संभवतः सभी की वैयक्तिक आत्माएं थीं, और उत्कृष्ट कुरसियों पर स्थित अनेक पावन क्षणप्रभ बालुकाश्म प्रस्तर पाये गये हैं।**

उपर्युक्त अवतरण में चार ऐसी विशिष्टताएं हैं जिनसे सिद्ध है कि एटरूस्कनों की आस्था हिंदुत्व पर थी। वे हैं—मृतकों का अग्निदाह-संस्कार; उनकी धर्मपरायणता, स्थानों-वृक्षों-प्रस्तरों की पूजा करने का उनका आचरण और शिवलिंग का अर्चन-वंदन।

इसी खंड के पृष्ठ ७८४ पर टिप्पणी है कि एटरूस्कन लोगों द्वारा देवताद्योतक 'ईश' शब्द एकवचन में और 'ईशर' शब्द देवताओं के अर्थसूचक बहुवचन शब्द के रूप में प्रयुक्त होता था। ये संस्कृत के शब्द हैं।

एन्साइक्लोपीडिया में जिन अन्य शब्दों का उल्लेख किया गया है उनमें भेंट, बलिदान का अर्थसूचक 'अल्पन' संस्कृत का 'अर्पण' है; माता का अर्थबोधक 'अति' संस्कृत के 'माता' अथवा देवों और दैत्यों की जन्मदात्री 'अदिति' और 'दिति' नामक दो देवियों के सूचक शब्दों से व्युत्पन्न है। पत्नी के लिए 'पिया' संस्कृत का 'प्रिया' शब्द है।

पोप वर्ष भर जिन कैथोलिक रीति-रिवाजों को पूरा करता है वे प्राचीन हिंदू धार्मिक पर्व ही हैं। सभी दिशाओं की शुद्धि-हेतु सभी दिशाओं में जल छिड़कने की प्रथा-जैसी संपूर्ण अंगीकृत प्रक्रिया प्राचीन हिंदू पद्धति है।

इसी प्रकार का एक धार्मिक कर्म पोप द्वारा शिशु का चरण प्रक्षालन है। हर समय पैरों को मोजों और जूतों से ढके रहने की पश्चिमी परम्परा में ऐसी धार्मिक प्रथा अविचारणीय थी, जब कि हिंदू-प्रथाओं में अनेक धार्मिक अवसरों पर एक-दूसरे के पैर धोने का विधान है।

गिरजाघरों में, पादरी के पवित्र परिधान जिस कमरे में रखे जाते हैं, उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेश-भूषा के द्योतक संस्कृत शब्द 'वस्त्र' के कारण 'वस्त्रि' कहते हैं। वस्त्र शब्द संस्कृत का है जिसका अर्थ वस्त्रागार है।

पवित्र, गंभीर, पावन गीतों, रागों अथवा पद्यों का अर्थद्योतक अंग्रेजी 'साम' (पी. एस. ए. एल. एम.) संस्कृत का 'साम' शब्द है, यथा साम-वेद में।

सामवेद की स्मृति बाइबिल में साम, सामोडि, सामिस्ट आदि शब्दों के रूप में सदा के लिए समा गयी है।

'ड्रइड्स' नाम से पुकारा जाने वाला यूरोपीय समुदाय प्राचीन हिंदू द्रविड़ों की एक धार्मिक शाखा है। शब्दकोश उनको प्राचीन गौल, ब्रिटेन और आयरलैंड में एक अति प्राचीन धर्म-सम्प्रदाय के रूप में घोषित करता है। आयरिश और वैल्स वीर-गाथाओं तथा परवर्ती ईसाई-कथाओं में 'ड्रइड्स' लोग ऐंद्रजालिकों के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं, न कि हिन्दू पुरोहितों और दार्शनिकों के रूप में। यह इस बात का स्पष्ट संकेतक है कि यूरोप के 'ड्रइड्स' वैसे ही हैं जैसे भारत के द्रविड़। वे तो जातीय समूह नहीं हैं। वे तो पुरोहितों और दार्शनिकों के समूह हैं जिनसे आशा की जाती थी कि वे मंत्रों और पूजा-अर्चना के बल से चमत्कार कर सकते थे। प्रसंगवश, यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आर्यों और द्रविड़ों को परस्पर प्रतिद्विन्द्वयों के रूप में प्रस्तुत करना भी गलत है। वे तो प्राचीन हिंदू समुदाय जो हिन्दुओं की धार्मिक पूजा-पद्धति, ज्ञान-विज्ञान और वैदिक व्यवहार में परम दक्ष थे। वे तब यूरोप गये थे जब भारतीय क्षत्रियों का विश्व पर आधिपत्य था।

यहूदियों का जनक और पितरों में प्रथम अब्राहम, हिंदू ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। अब्राहम हिंदू ब्रह्मा का अपभ्रंश उच्चारण-मात्र है। पितृता का द्योतक स्वयं 'पैट्रिआर्क' शब्द 'पितृ' से व्युत्पन्न है। इतालवी और लातीनी भाषाएं संस्कृत से भरी-पड़ी है क्योंकि प्राचीन इतालवी सस्कृत बोलते थे। उसके उदाहरण संस्कृत के श्रीमान, श्रीमती से व्युत्पन्न सिनोर, सिनोरीता हैं।

प्राचीन इतालवी न केवल वेदों का गायन और शिवलिंग की पूजा करते थे, किंतु अपने अलंकृत कलशों, तथा अलंकृत फलकों पर रामायण के प्रसंगों को चित्रित किया करते थे। वे रामायण को गीत रूप में गाते फिरते थे। मेरे पास उन एटरूस्कन चित्रों की प्रतिकृतियां हैं जिनमें रामायण-गाथा के वे प्रसंग चित्रित हैं।

अभी तक यहा विश्वास किया जाता था कि रामायण का प्रभाव भारत से बाहर इंडोनेशिया और इंडोचीन प्रदेशों में ही पड़ा था, किंतु एटरूस्कन चित्रों की उपलब्धि इस बात की द्योतक है कि जब अति प्राचीन काल में भारतीय क्षत्रियों ने विश्व पर शासन किया था तब विश्व के उन भागों में भी रामायण का गायन हुआ और उसके प्रसंगों को चित्रित किया गया था।

आगे अन्वेषण से पूरी संभावना है कि पर्याप्त विलुप्त जानकारी प्रत्यक्ष हो सके।

Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी

संवत्सर की प्रतिमा गायत्रि

वेद माता गायत्री संवत्सर की प्रतिमा है। उसमें संवत्सर का प्रतिमान अर्थात स्वरूप दर्शन होता है। अथर्व वेद में संवत्सर की प्रतिमा को कहा है और उसकी उपासना का प्रयोजन आयुष्मती प्रजा, धनैश्वर्य एवं पुष्टि बताया है। मन्त्र निम्न प्रकार है—

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा राग्र्युपास्महे।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ॥

(अथर्व० ३।१०।३)

इस मन्त्र में जिस रात्रि की उपासना करने और उसके फल की कामना का संकेत है, वह गायत्री ही है। सुखों को देने वाली तथा दुःखों को दूर करने वाली भूर्भुवः स्वः रूपी त्रिविध ऐश्वर्य प्रदान करने वाली गायत्री ही है। यही त्रिविध ऐश्वर्य-आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक रूप से भी त्रिविध है तथा इन्हीं त्रिविध प्रकार के दुःखों को हरने वाली भी गायत्री ही है। त्रिविध ऐश्वर्यों की दाता होने से रात्रि शब्द गायत्री के लिए है। रा-अर्थात् देने वाली, त्रि-अर्थात् त्रिविध ऐश्वर्य। गायत्री का सवितुः पद समस्त ऐश्वर्य के उत्पत्तिकर्ता एवं ऐश्वर्यप्रदाता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। अतः वेदमाता गायत्री ही उपास्य रात्रि-वाचक है।

गायत्री मन्त्र के द्वारा उपास्य सविता देव का भर्ग वरण किया जाता है, अतः गायत्री साधन रूप से होने पर भी प्रारम्भ में उपास्य कही गई है। इसी उपासनीय गायत्री मन्त्र को महामन्त्र, गुरुमन्त्र तथा वेदमाता आदि नाम से कहा गया है। इस मन्त्र के अतिरिक्त जो गायत्री छन्दोमय मन्त्र हैं वे तथा अन्य सभी मन्त्र इस उपास्य गायत्री मन्त्र में अंगभूत रूप में सम्बन्धित हैं। अतः गायत्री छन्दोबद्ध अन्य मन्त्रों को वह महत्त्व प्राप्त नहीं होता। इसलिए गुरुमन्त्र नाम से उपदिष्ट गायत्री मन्त्र का ही प्रधान रूप से महत्त्व है तथा उसी को वेदमाता भी माना गया।

उक्त गायत्री मन्त्र के महत्त्व को प्रकट करने वाला अथर्ववेद का उपरोक्त मन्त्र है। अतः कतिपय विद्वान्, तपस्वी, वेदमर्मज्ञ, सन्तों ने अथर्ववेद के उपरोक्त मन्त्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को ही गायत्रीमय होने से घोषित किया कि चारों वेदों में गुरुमन्त्र गायत्री है, जो कि अथर्ववेद में शब्द साम्य से नहीं अपितु परोक्ष स्वरूप साम्य होने से यही वह गायत्री है।

अथर्ववेद के उपरोक्त मन्त्र में गायत्री को संवत्सर की प्रतिमा कहा गया है। अर्थात् संवत्सर के स्वरूप का इस गायत्री मन्त्र में दर्शन होता है, जो निम्न प्रकार है—

(१) अहोरात्र में ६० घटी होती हैं। भूर्भुवः स्वः में ४ अक्षर हैं और तत्सवितुः से धीमहि तक जहां प्रथम विराम है वहां तक १५ अक्षर हैं। दोनों संख्याओं को गुणा करने पर ४×१५=६० संख्या प्राप्त होती है, जो अहोरात्र की ६० घटिकाओं की संख्या का प्रतिमान है।

(२) अहोरात्र की ६० घटिकाओं में प्रति घटी में २४ मिनट होते हैं। गायत्री छन्द २४ अक्षर का माना जाता है। अतः प्रति घटिका के विभाग का प्रतिमान गायत्री में प्रकट होता है।

(३) एक अहोरात्र में २४ घन्टे होते हैं। गायत्री छन्द में २४ अक्षर माने जाने से अहोरात्र के घण्टों के रूप में गायत्री में प्रतिमान विद्यमान है।

(४) अहोरात्र के पश्चात् संवत्सर में सप्ताह का क्रम है। गायत्री के प्रथम चरण या पाद में तत्सवितुर्वरेण्यं—सात ही अक्षर हैं। ये सात अक्षरों की संख्या सप्ताह के ७ दिनों का प्रतिमान है।

(५) सप्ताह के पश्चात् पक्ष का क्रम है। पक्ष में १५ तिथियां होती हैं। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि—इस प्रथम पंक्ति में १५ ही अक्षर हैं, जो पक्ष की तिथियों का प्रतिमान प्रकट करते हैं।

(६) पक्ष दो होते हैं। पक्ष की तिथियों के प्रतिमान रूप जो गायत्री की प्रथम पंक्ति है वह गायत्री के २ चरणों से बनी है। अतः २ पक्ष की संख्या की बोधिका है।

(७) २ पक्षों की तिथियों से ३० दिन का मास होता है। गायत्री की प्रथम पंक्ति के १५ अक्षरों की संख्या का उसी में निहित २ चरण या पाद संख्या से गुणा करने पर १५×२ से ३० संख्या का स्वरूप दोनों पक्ष से निर्मित एक मास की तिथियों का बोधक है।

(८) पक्ष के पश्चात् मास का क्रम है। १५-१५ दिनों के एक-एक पक्ष से २४ पक्ष वर्ष में होते हैं। ८ पक्षों का युग्म रूप ही एक मास है। गायत्री के २४ अक्षरों के युग्मों से १२ मासों की संख्या का प्रतिमान गायत्री में विद्यमान है।

(९) दो-दो मासों के युग्मों से ६ ऋतुओं का संवत्सर में अस्तित्व है। अतः १२ युग्मों के भी २-२ युग्मों से ६-६ चतुरक्षर समूह बन जाते हैं, जो कि ६ ऋतु संख्या के बोधक हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१०) ऋतुओं के पश्चात् संवत्सर के २ विभाग उत्तरायण एवं दक्षिणायन हैं। गायत्री त्रिपदा होने पर भी अवसान रूप से दो विभागों में विभक्त है। अतः सम्पूर्ण गायत्री का रूप में विभाजन दो आयनों को प्रकट करता है।

(११) संवत्सर में नक्षत्रों का बहुत महत्त्व है। नक्षत्रों के कारण ही १२ राशियाँ बनती हैं। १२ राशियाँ ही १२ मास के रूप में हैं। प्रधान रूप से नक्षत्र २७ माने जाते हैं। गायत्री में तत्सएितु: से प्रचोदयात् तक २३ अक्षर हैं। उसमें महाव्याहृति भूर्भुवः स्वः के चार अक्षरों का योग करने पर २३+४=२७ नक्षत्र संख्या प्रकट हो जाती है। यही नक्षत्रों का प्रतिमान गायत्री में विद्यमान है।

(१२) सावन संवत्सर के वर्ष में ३६० अहोरात्र होते हैं। गायत्री छन्द की २४ अक्षर संख्या में गुरुमन्त्र गायत्री की प्रथम पंक्ति की अक्षर संख्या १५ का गुणा करने से २४×१५=३६० अहोरात्र संख्या ज्ञात हो जाती है।

(१३) संवत्सर (वर्ष) में ५२ सप्ताह होते हैं। तत्सवितुर्वरेण्यं० इस सम्पूर्ण गायत्री में २३ अक्षर हैं। इस गायत्री के प्रारम्भ में ३ महाव्याहृतियाँ हैं। दोनों संख्याओ का योग करने से २३+३=२६ संख्या बनती हैं। गायत्री मन्त्र प्रथम पंक्ति २ चरणों की होने से २६ को २ से गुणा करने पर २६×२=५२ अंक वर्ष के सप्ताह का अंक प्राप्त हो जाता है।

(१४) सम्पूर्ण संवत्सर का गायत्री में प्रतिमान बीज रूप से विद्यमान है, अतः गायत्री द्वारा संवत्सर का आच्छादन हो रहा है। संवत्सर का निर्माण अहोरात्र, शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष, षड्ऋतु, द्वादश मासो से होता है। यदि इस सबके अक्षरों की गणना की जाये तो २४ संख्या निम्न प्रकार प्रकट होती हैं :—

अहोरात्र—४ अक्षर शुक्ल पक्ष—४ अक्षर, कृष्ण पक्ष ४ अक्षर, षड्तु ३ अक्षर, द्वादशमास ५ अक्षर, संवत्सर ४ अक्षर, इस प्रकार सब मिलाकर २४ संख्या हो जाती है। अतः गायत्री संवत्सर का प्रतिमान है।

इस प्रकार गायत्री का समस्त संवत्सर या काल चक्र में आच्छादन या विलय होने के कारण यह गायत्री रात्रि रूपा है। यजुर्वेद अ. २३ मं. ५४ रात्रि को पिशंगिला कहा है। अर्थात् रात्रि वह है जो सबके रूप को अपने में विलय करती, समाविष्ट करती एवं उन्हें प्रकट भी करती है। अतः गायत्री ही रात्रि हैं, जो कि संवत्सर की प्रतिमा अर्थात् प्रतिमान है। सर्व ऐश्वर्यों की उत्पत्ति कृत् होने से गायत्री की उपासना की प्रेरणा अथर्ववेद का उपरोक्त मन्त्र दे रहा है।

इसी प्रकार से वेदो का, सृष्टि का, अग्निहोत्र का तथा मानव देह का भी प्रतिमान गायत्री में विद्यमान है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अर्जुन सिंह भदौरिया

यह युग भोग का है

गाँधी जी का युग योग का युग था और आज जो युग चल रहा है यह भोग का है। आज भी कुछ ऐसे लोग देश के अन्दर हैं; डॉ० लोहिया थे आचार्य नरेन्द्र देव थे और जे० पी० हैं और उनमें बचे-खुचे कुछ हम सरीखे लोग हैं, जो इस देश के अन्दर योग की राजनीति चलाना चाहते हैं, लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य यह है कि यहां जिन्दा रहते हुए मानसिंह और मीर जाफर की पूजा होती है और मरने के बाद राणाप्रताप, शिवाजी, डॉ० लोहिया और बहादुर शाह जफर की मूर्तियों पर माल्यार्पण होता है। इसलिये लोग योग की तरफ न जाकर भोग की तरफ जा रहे हैं। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि चौधरी चरण सिंह जी ने शुरू से ही भोग की राजनीति का इस्तेमाल किया है। यह पहला मौका नहीं है, दल बदलने का उनका यह ग्यारहवां मौका है। इसकी शुरुआत उन्होंने १९६७ से की थी और लोग गांधी जी के नाम पर या लोहिया जी के नाम पर आज उनका समर्थन कर रहे हैं। खास करके हम उनको याद दिलाना चाहते हैं कि लोहिया जी जब मर रहे थे तब उनकी चिकित्सा के लिए मोरारजी देसाई दो बार बम्बई से एक स्पेशलिस्ट डॉ० शाह को हवाई जहाज में अपने साथ लाये। लेकिन चौधरी चरण सिंह जिनकी बदौलत मुख्यमन्त्री बने थे, मरते वक्त भी उन्हें देखने को नहीं आये। शेख अब्दुल्ला आये, इन्दिरा गान्धी आयीं, चौधरी चरण सिंह ने कभी भी यह तकलीफ गवारा नहीं की कि उनके मरते समय, उनकी बीमारी के समय भी उनको कभी देखने के लिये आते। यह व्यक्ति डॉ० लोहिया को बनिया कहता रहा और वे लोग जो डॉ० लोहिया के कभी हनुमान् रहे, ऐसे व्यक्ति का समर्थन करते हैं। वे डॉ० लोहिया का ही नहीं, समाजवादी मूल्यों का भी अपमान कर रहे हैं। आज दिल्ली के अन्दर जो सत्ता है, वह इमर्जेंसी की सत्ता है।

चौधरी चरण सिंह, जिन्होंने तिहाड़ जेल में ओम् मेहता की सहायता से माफी मांगी, जिन्होंने उत्तर प्रदेश में जा करके इस बात की कोशिश की कि वे वहां पर मुख्य मन्त्री बना दिये जायें, लेकिन कमलापति त्रिपाठी के हस्तक्षेप की वजह से वे उस समय मुख्य मन्त्री नहीं बनाये जा सके, आज प्रधानमन्त्री हैं। यह देश का दुर्भाग्य है। देश की जो मर्यादायें हैं। राजनीति के जो नैतिक मूल्य हैं, उन सबका अपमान है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पपीते का महत्व

अगर कोई आपसे कहे कि पपीता विदेशी फल है तो आप विश्वास नहीं करेंगे ! सोलहवीं सदी में यह फल पुर्तगालियों द्वारा भारत में लाया । यह वास्तव में दक्षिण अमरीका का है । मेक्सिको से यह क्रमश: पश्चिमी द्वीप या अन्य देशों में पहुंचता गया । सन् १६५६ में यह भारत से चीन भी जा ा ।

पपीते का पेड़ बड़ी तेजी से बढ़ता है । एक साल में ही यह फल देने लगता कभी-कभी तो इसमें इतने अधिक फल लग जाते हैं कि पेड़ों के टूटने का खतरा न्न हो जाता है । ऐसी स्थिति में थोड़े-से कच्चे फलों को तोड़ देना ही श्रेयस्कर ा है । तना मुलायम और भीतर से खोखला होने के कारण यह अधिक भार नहीं कर सकता ।

भारतवर्ष में पपीते की मुख्यत: तीन जातियां पायी जाती हैं । प्रथम, ीय पपीता जो प्राय: पहाड़ी प्रदेशों में ४,५०० से ७,००० फुट तक की ऊंचाई होता है । यह लंका और दक्षिण भारत के नीलगिरि पर्वत पर चलने वाले हवा ज झक्कड़ों को भी सहन कर लेता है । दूसरी जाति के पेड़ पांचा-छह फुट ऊंचे हैं और इनमें एक-दो इंच लम्बे फल लगते हैं । तीसरी जाति के पपीते को त में केरिका पपाया कहते हैं । यह सामान्य रूप से पायी जाने वाली जाति है । पेड़ दस फुट उंचे होते हैं । ये पौधे प्राय: लम्बे या गोल फल धारण करते हैं ।

हमारे यहां पपीते की खेती सबसे अधिक बिहार में होती है । वहां ४,००० र भूमि में पपीता बोया जाता है । इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं-असम, गुजरात, राष्ट्र । इनके अलावा मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, केरल आदि राज्यों में भी ी पैदावार होती है ।

पपीते का रासायनिक विश्लेषण इस प्रकार है—

आर्द्रता—	८९.६	प्रतिशत
कार्बोहाइड्रेट—	९.५	प्रतिशत
प्रोटीन—	०.५	प्रतिशत
ईथर एक्सट्रेक्ट—	०.१	प्रतिशत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खनिज लवण—	०.४	प्रतिशत
कैलशियम—	०.०२	प्रतिशत
फासफोरस—	०.०१	प्रतिशत
लोहा—	०.०४	प्रतिशत

इनके अलावा मैलिक, टारटारिक और साइट्रिक एसिड तथा उनके लवण होते हैं।

पपेन पपीते का बेशकीमती उपहार है। फलों से निकलने वाले दूध में लगभग बीस प्रतिशत पपेन निकलता है। कच्चे फलों में चीरा लगाकर दूध एकत्र कर लेते हैं। फिर इसे सुखाकर एक प्रतिशत फार्मेल्डीहाइड के घोल में रख लेते हैं। इससे यह सुरक्षित रहता है।

पपेन एक सशक्त प्रोटीन-पाचक पदार्थ है। मांस पकाते समय चुटकी भर पपेन डालने से मांस शीघ्र पक जाता है। इसके अलावा पपेन पानी में मिलाकर कुल्ला करने से बढ़े हुए टांसिल शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

पपेन का उपयोग ऊनी, सूती और वर्स्टेड को सिकुड़ने से बचाने में किया जाता है। इससे चमड़े का टैनिंग करते हैं। इसका प्रयोग टुथपेस्ट बनाने और चमड़ी पर के दाग़ मिटाने की दवाइयों के निर्माण में भी किया जाता है।

पका हुआ पपीता अत्यन्त स्वादिष्ट, मीठा और सुगन्धित होता है। इससे पाचन-क्रिया अच्छी रहती है। बवासीर और कब्ज-जैसे पुराने रोगों में पपीते का प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद सिद्ध हुआ है। पेट के विकारों, जैसे मंदाग्नि, भूख न लगना और अजीर्ण में पपीता बेहद गुणकारी है।

यह डिप्थीरिया और अलसर-जैसे रोगों में भी लाभप्रद है। चर्म-रोगों की चिकित्सा भी इसके द्वारा की जाती है। तिल्ली और खूनी बवासीर में पपीते के रस का सेवन अत्यन्त लाभकारी है।

इसके अतिरिक्त पपीते का उपयोग सुमधुर पेय बनाने तथा फ्लेक्स के निर्माण में भी किया जाता है। फलों से तरह-तरह के अचार और सब्जियां बनती हैं।

पपीते की पत्तियों की पुल्टिस बनाकर लगाने से वातिक शूल दूर होता है तथा फाइलेरिया की सूजन उतरती है। इसकी छाल रस्सी बटने के काम आती है।

आइये, हँसें

शिक्षक ने बंटू से पूछा, "तुम्हारे हाथ में कितनी अंगुलियां हैं?"

"जी दस," जवाब मिला।

"अगर उनमें से चार कम हो जायें तो क्या होगा?"

"तो स्कूल से छुट्टी मिल जायेगी," बंटू ने तुरन्त उत्तर दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० रामस्वरूप शास्त्री 'रसिकेश'

संसार स्वप्न है वा सत्य ?

यह देख-सुनकर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है कि इस देश के लाखों लोग आज भी इस प्रत्यक्ष संसार को सचमुच स्वप्न मानते हैं तथा अपने इस विचार का बड़े धड़ल्ले से प्रचार करते हैं। ऐसे लोगों का कथन है —

इन अल्प-दृष्टि मूढ़ों ने क्या धोखा खाया यह मत पूछो ।
ये स्वप्न-जगत् को सत्य समझ, बस लीन उसी में हो बैठे ।।

('निर्मल दिव्यामृत')

जब ऐसे पद्य पढ़े-लिखे लोगों के मुख व लेखनी से निकलते हैं, तब सचमुच मनुष्य विचारने पर विवश हो जाता है कि आखिर सच्चाई क्या है ? क्या विश्व वस्तुत: विद्यमान है वा हम स्वप्न ही देख रहे हैं ? उदाहरणार्थ हम अपने घर में बैठे ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं और आप कहीं पर बैठे इन्हें पढ़ रहे हैं। क्या आप, हम, पृथ्वी, कलम, कागज़ आदि सब स्वप्न ही हैं ? क्या हमारा लिखना व आपका पढ़ना भी स्वप्न ही है ? हमें तो ऐसा लगता है कि आप भी सत्य हैं, हम भी सत्य हैं, और ये पृथ्वी, कलम, कागज़ आदि सभी सत्य हैं। हां, यह बात दूसरी है कि इनमें से कोई भी वस्तु नित्य या शाश्वत नहीं है। निस्सन्देह कुछ काल बाद हम नहीं रहेंगे और ये कागज़-कलम आदि भी फट-फूट जाएंगे। सो इस समस्या को सुलझाने के लिए उचित है कि संसार, स्वप्न व सत्य का स्वरूप संक्षेपत: समझ लिया जाये।

संसार से हमारा तात्पर्य पृथ्वी, पर्वत, सरिता, सागर, मनुष्य, पशु आदि सभी जड़, चेतन पदार्थों से है। जागरण और सुषुप्ति (प्रगाढ़ निद्रा) के मध्य की अवस्था स्वप्न है। उस में बाह्य इन्द्रियां तो कार्य नहीं करतीं, किन्तु अन्त:करण, जागता-सा रहता है तथा स्मृति और कल्पना की शक्तियां दृष्ट व अदृष्ट अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती रहती हैं। हमें सुषुप्ति अवस्था में तो स्वप्न सर्वथा भूल जाते हैं, किन्तु जागरित अवस्था में आने पर कुछ-कुछ स्मरण रहते हैं। तब हम कह उठते हैं कि लो, आज पुन: कश्मीर की सैर कर आये अथवा अदृष्ट-पूर्व, पृथ्वी मण्डल का चक्कर सेंत-मेंत ही लगा आये। 'सत्य' का अर्थ हम 'नित्य' नहीं लेते, बल्कि 'विद्यमान' लेते हैं। उदाहरणार्थ, हम ने सन् ४७ में स्वतन्त्रता प्राप्त की थी । यह घटना सत्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही स्वप्न कहा है, जागरित अवस्था को नहीं। इसी कारण उन्होंने निम्न प्रकार के मन्त्रों की रचना की—

(क) यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥
(यजुर्वेद ३४।१)

'मेरा जो मन जागते हुए तथा सोते हुए भी दूर-दूर तक जाता है, वह परम प्रकाश-रूपी मन शुभ संकल्पों से युक्त हो।'

(ख) पाप से मुक्ति के लिए एक प्रार्थना पर दृष्टि डालिये—

यदि जाग्रद् यदि स्वपन् एन एनस्योऽकरम् ।
भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुंचताम् ॥
(अथर्ववेद ६।११५।२)

'यदि मैंने जागते हुए वा सोते हुए कोई पाप किया हो तो भूत व भविष्यत् मुझे उससे वैसे ही मुक्त करें जैसे किसी पशु को खूंटे से छुड़ाया जाता है।'

यदि संसार स्वप्न ही होता, तो जागते समय के पाप से मुक्त होने की प्रार्थना ही न होती। स्वप्न में भी पाप-मुक्त रहने की इच्छा उदात्त भावों की ही द्योतक है।

(६) यदि संसार स्वप्न है, तो क्या रात में दीखने वाले स्वप्न, स्वप्न में स्वप्न, न हुए? क्या किसी ने आज तक स्वप्न में भी स्वप्न देखा है?

(१०) वेदान्त हमें सिखाता है कि घर, सन्तान, सम्पत्ति आदि सब स्वप्न हैं। परन्तु वेदों व उपनिषदों में विवाह करने की, सन्तानोत्पादन की व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति की प्रबल प्रेरणाएं विद्यमान हैं। उदाहरणार्थ—

(क) दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृधि। (ऋग्वेद १०।८५।४५)

(हे इन्द्र) इस स्त्री के दस पुत्र हों तथा पति (घर में) ग्यारहवां पुरुष हो।

शिक्षा की समाप्ति पर आचार्य ब्रह्मचारी को यह उपदेश दिया करता था—

आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः ।
भूत्यै न प्रमदितव्यम्, स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥
(तैत्तिरीय उपनिषद् १।११।१)

'आचार्य के प्रिय लिए धन लाकर सन्तान का सिलसिला चालू रखो। ऐश्वर्य-प्राप्ति तथा पढ़ने-पढ़ाने के कार्य में प्रमाद न करना चाहिए।

ऐसी स्थिति में वेदों व उपनिषदों की शिक्षा को सत्य समझें या आधुनिक वेदान्तियों की?

(११) वेदान्तियों की शिक्षा है—

घृणा नहीं अधर्म से, न प्रेम धर्म से रहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

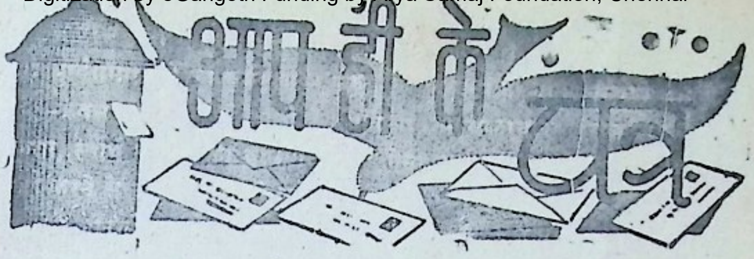

नष्ट हो रहे धर्म को बचाइए !

बहन राकेश रानी जी,

सप्रेम नमस्ते ।

धन्य है वह भारत माता, जिसने आप जैसी विदुषी को जन्म दिया । आपके रोम-रोम में वेद के सन्देश का प्रचार करने की प्रबल आकांक्षा है । आपने जनता को सन्मार्ग दिखाने के लिए अपना जीवन अर्पित कर रखा है ।

आज भारत की राजधानी में क्या हो रहा है ? सत्य का गला घोंटा जा रहा है । नेता अस्थायी पद प्राप्त करने के लिए भी घृणित से घृणित पाप करने को तैयार हैं । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और (भूतपूर्व) भारतीय जनसंघ पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं । रेडियो पर हर भाषा में बाइबल का प्रचार हो रहा है । स्कूलों और कालेजों में ईसाइयत का प्रचार हो रहा है । वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति का क्या बनेगा ? श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक पेश किया । उसका कितना विरोध हुआ । अब तो लोकसभा भंग हो जाने के कारण वह समाप्त ही हो गया है । अमीचन्द और जयचन्द इस पुण्यभूमि का सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं । देश में मुसलमानों का प्रभाव बढ़ रहा है । आप तो स्वयं बुद्धिमती हैं । दिल्ली में बैठकर सब कुछ अपनी आंखों से देख रही हैं । अनेक स्थानों पर हिन्दुओं की पिटाई हुई, लेकिन इसके बावजूद हिन्दू संगठनों को ही बदनाम किया गया । परिवार नियोजन भी मुख्यतः हमारा ही हो रहा है । रेडियो पर भक्ति गीतों में वैदिक धर्म का सन्देश नहीं दिया जाता—दिया भी जाता है, तो कम और विकृत रूप में । हम लोगों की अपने धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि नहीं । पिछले दिनों वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया । प्रश्न है कि हममें से कितनों के घरों में वेद की पुस्तकें हैं । हमारा ध्यान तो खाने-पीने और भोगविलास की ओर है । हम लोग "महर्षि दयानन्द की जय" बुलाते हैं, लेकिन व्यावहारिक जीवन में "शून्याय स्वाहा" को चरितार्थ करते हैं । मुझे विश्वास है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आप धर्म प्रचार के लिए जो कुछ कर रही हैं, वह व्यर्थ नहीं जायेगा । हमारा धर्म नष्ट हो रहा है । यथा राजा तथा प्रजा । जब किसी देश के शासक ही राक्षस हों, तो वहां की जनता क्या धार्मिक होगी । असत्य मतों का प्रचार हो रहा है । आज हम धनलोलुप हो रहे हैं । पैसे वालों का सम्मान है—चाहे उन्होंने बेईमानी से ही पैसा कमाया हो । लोग पाप करते नहीं डरते । सिनेमा हमारा चरित्र नष्ट कर रहा है । धर्मनिरपेक्षता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के नाम पर धार्मिकता को समाप्त किया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पं० गुरुदत्त और लाला लाजपतराय की परम्परा पुन: स्थापित करके ही हम अपने देश, धर्म और जाति को बचा सकते हैं।

नागपुर

आपकी बहन
चन्द्रकान्ता

एक बुजुर्ग की शुभकामनाएं : सहयोग

बहन राकेश रानी,

सस्नेह भेजी हुई राखी मिली।

मुझे राखी भेजने वाली कोई बहन नहीं है, इसलिए राखी देखकर आश्चर्य हुआ। पत्र पढ़ा। उसमें सहयोग तो मांगा गया है, परन्तु किस प्रकार का आन्दोलन यह नहीं मालूम हुआ। फिर भाई वेदभिक्षु: जी की अपील पढ़ी। तब भी कुछ खुलासा हाथ नहीं लगा। मैं तो अब ऐसी अवस्था में पहुंच चुका हूं कि शरीर काम नहीं देता। आंखों में मोतियाबिन्दु है, मगर अभी दिखाई देता है। मेरी उम्र ७५ वर्ष की है। जीवन संघर्षों में ही बीता है। प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह जी के साथ आगरा कालेज में पढ़ता था। मेरे आर्य समाजी साथी श्री धर्मेन्द्रनाथ जी, जो मेरठ के आर्यसमाज के प्रधान रह चुके हैं और कांग्रेस के श्री जैनेन्द्र कुमार जी दिल्ली वाले (कहानी लेखक) हैं। अपनी युवावस्था में स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि आन्दोलन में शामिल हुआ। सबसे पहली शुद्धि गांव रायला (जि० आगरा) में मेरे पिता जी के पुरुषार्थ से सम्पन्न हुई। फिर नागपुर आकर कांग्रेस में कार्य करता रहा। अब सब छोड़कर बच्चों के भरोसे पल रहा हूं। सब सुशिक्षित और अच्छी जगहों पर हैं।

दिवंगत श्री सत्यदेव विद्यालंकार (जो दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक रह चुके थे) मेरे साथी थे। नागपुर की आर्यसमाज मेरे बड़े भाई ने स्वामी ब्रह्मानन्द जी के साथ मिलकर स्थापित की थी और वही उसके प्रथम प्रधान थे। इतने परिचय के बाद अब मैं भाई वेदभिक्षु: जी की योजना के संबंध में अपने विचार रखता हूं। भाईजी के विचार तो बिलकुल ठीक हैं, परन्तु कुछ तथ्यों पर विचार करना होगा। देश का बंटवारा होने से अपने देश का कोई भाग विदेशियों के हाथ में नहीं गया। वह तो केवल भाइयों ने पैतृक संपत्ति का बंटवारा इसलिए करा लिया कि उनको अपने भाइयों पर विश्वास नहीं रहा। वे उन्हें स्वार्थी, पक्षपाती और अन्यायी समझते थे। परन्तु भाग्यवश बंटवारे से वे और गड्ढे में गिर गये और जो स्वप्न देखते थे, साकार न कर सके। दिन-दिन पतन की ओर ही जा रहे हैं। अब हम जो अच्छाई का दावा करते थे, उनकी ओर दृष्टि डालिये। हमारा हाल भी उन्हीं जैसा है। सन् १९३० तक आर्यसमाज को बने ५० वर्ष के करीब हो चुके थे। जिस तरक्की की तरफ हम बढ़ना चाहते थे, वह रुक-सी गई थी और चूंकि आदमी की प्रवृत्ति ज्यादा विकास की तरफ होती है, कांग्रेस का काम रोचक लगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और आत्मा को समाधान देने वाला भी। फलस्वरूप सब कर्म योगी आर्यसमाजी कांग्रेस में शामिल हो गये और स्वतंत्रता ले ही ली। इसके बाद सत्ता और धन के लालच ने कांग्रेस तथा आर्यसमाजियों को धर्म-पथ से भ्रष्ट कर दिया यानी दोनों संस्थायें धूल में मिल गईं—केवल नाम मात्र ही बाकी हैं। बात-बात में भ्रष्टाचार, अराजकता, अनुशासन-हीनता, स्वार्थ इत्यादि का बोलबाला है। ऐसी हालत में दूसरे भाइयों को दूसरा बंटवारा करने से रोकना और बिछुड़े हुओं को फिर से मिला लेना एक असम्भव प्रयास है। जैसे औरंगजेब के मरने के बाद कुछ शक्तिशाली जमींदारों अथवा फौजी नेताओं ने बादशाह बनाने का काम ले लिया था (King makers बन बैठे थे) और उससे धन प्राप्त किया था, वैसे ही अब दलबदल से सरकार गिराने का काम शुरू हो गया है। न जाने कौन-सी शक्ति हमें इस हालत में हड़प जाये। मालूम नहीं, हममें कौन-सी अच्छाई रह गई है, जिससे हम अपने बन्धुओं को समझायें। धन और सत्ता के आगे देश, साम्राज्य, स्वतंत्रता सब गायब हो गये हैं। दूसरों के सामने सिर ऊंचा करते नहीं बनता। किस मुंह से उन्हें अपने में बने रहने या मिल जाने के लिए कहें; यह सोचकर दुःख होता है। आपने २५,००० घरों में वेद पहुंचा कर बहुत बड़ा काम किया है। इसके लिए आपको बधाई है, पर यह नहीं मालूम कि आपने २५,००० आलमारियों को सजा दिया है या आप कुछ ज्ञानयोगी अथवा कर्मयोगी भी तैयार कर पाये हैं। यदि फिर से धर्म का उत्थान हो सके तो क्या कहना है। शायद किसी समय कोई दिव्य शक्ति हममें पैदा हो और सब को अपने वश में कर सके। तभी अपना उद्धार हो सकेगा। फिर भी अपना जीवन तो कर्म करने का और सही दिशा में बढ़ने का है। जो भी परम पिता को मंजूर होगा, हो जायेगा। सदा प्रयत्नशील रहिए। इसमें हमारी सहानुभूति और शुभकामनाएं आपके साथ हैं। आशा है यह राखी प्रतिस बार नहीं, कई बार और मुझे प्राप्त होगी। मैंने ५१) मनीआर्डर से भेज दिये हैं। इस तुच्छ सहयोग को स्वीकृत करें।

तुम्हारा भाई
विक्रम सिंह

वर्धा रोड,
विवेकानन्द नगर,
नागपुर-१५

अपने नगर में

भारत रक्षा समिति

स्थापित करें।

भारत के धर्म और संस्कृति की रक्षा का व्रत लें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आवश्यक परिपत्र—१

॥ ओ३म् ॥

दूरभाष : ५६६६३९

अखिल भारतीय

भारत रक्षा समिति

प्रधान कार्यालय : १५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-११०००५

मान्यवर ! सादर नमस्ते ।

देश पर छाए संकट से आप अनभिज्ञ नहीं हैं ।

सांप्रदायिकता, धर्मान्धता, पाकिस्तान निर्मात्री मनोवृत्ति—स्वार्थपूर्ण राजनीति और निराशा सिर उठा रहे हैं । विदेशी पादरी भारत को ईसालैंड बनाने का षड्यन्त्र पूर्ण करने में लगे हैं ।

क्या आप मूक दर्शक बन कर यह सब कुछ देखते रहेंगे ?

क्या आपका मातृभूमि और धर्म की रक्षा के लिए कुछ कर्तव्य नहीं हैं ।

यदि आपका उत्तर हां में हो, तो अपने क्षेत्र में तुरन्त नगर के सभी समान उद्देश्य वाले व्यक्तियों को साथ लेकर भारत रक्षा समिति बनाएं—

भारत रक्षा समिति

१. सभी सम्भव उपायों से उन सभी राजनैतिक हथकंडों का प्रबल विरोध करेगी, जिनसे देश की अखण्डता, एकता और स्वतन्त्रता पर चोट पहुंचती है ।
२. सेकुलरवाद के भ्रामक नारे का प्रबल विरोध कर वेद और मनु द्वारा निर्दिष्ट आधार पर धर्म राज्य की स्थापना का प्रचार करेगी ।
३. मतान्धता और सांप्रदायिकता के सिर उठाते विषधर का फुंकारता फन कुचलने के लिए प्रबल आन्दोलन करेगी ।
४. बलात् धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए सभी सम्भव उपाय प्रयोग में लाएगी ।
५. जन्मगत जातिवाद के आधार पर सौदेबाजी की राजनीति व सन्तुष्टीकरण की नीति को समाप्त करने का वातावरण बनाएगी ।
६. राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिए वातावरण तैयार करेगी ।
७. विदेशी सभ्यता, संस्कृति और वेशभूषा के बढ़ते प्रवाह को रोकेगी ।
८. विदेशी पादरियों के देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों को समाप्त करने के लिए आवाज उठाएगी ।
९. भारत के मंत्रिमंडल को चाणक्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा व निर्देश देगी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१०. भारत की प्रभुसत्ता, एकता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए सतत प्रयत्न करेगी।

कार्यक्रम स्वयं बनाइए और काम में लगिए, किन्तु इन उद्देश्यों में परिवर्तन न करें। आप तुरन्त निम्न कार्य करें—

१. अपने यहां भारत रक्षा समिति स्थापित करें।

२. अभारतीय तत्त्वों के विरुद्ध संघर्ष का संकल्प करें।

३. पिछड़े वर्गों में जाकर उनकी सुधि लें। उन्हें टाफी, मिठाई, पुस्तकें समय-समय पर भेंट दें।

४. शिक्षा, नैतिकता, धर्म का प्रचार करें।

५. धर्म निरपेक्षता नहीं, धर्म राज्य। समाजवाद नहीं मानववाद, सत्ता व पूंजी का केन्द्रीयकरण नहीं विकेन्द्रीयकरण, अधिकार नहीं कर्त्तव्य, स्वार्थ नहीं त्याग का वातावरण बनाएं।

६. सत्तालोलुप राजनीतिज्ञों का प्रत्येक दृष्टि से विरोध करें।

७. विदेशी पादरियों व सांप्रदायिक तत्वों के विरुद्ध आवाज उठाएं।

८. ऐसी अग्नि प्रज्वलित करें कि राष्ट्र का सारा कूड़ा करकट भस्म हो जाए।

९. भारत को संसार का सबसे महान्, सबसे शक्तिशाली, सर्वाधिक वैभव संपन्न राष्ट्र बनाने का व्रत लेकर पूरे बल से संघर्ष कीजिए—हमारा साथ दीजिए। हम विजय देंगे।

केरल, नागालैंड, अरुणाचल, मिजोरम आदि क्षेत्रों में कार्यकर्त्ता भेजने, केन्द्र खोलने व साहित्य की तैयारी के लिए अपार धन राशि की आवश्यकता होगी। इस दिशा में भी गम्भीरतापूर्वक विचार करें।

लोकसभा के निर्वाचनों में उन्हीं प्रत्याशियों को समर्थन दें, जो उक्त १० सिद्धान्तों को स्वीकार करें।

यह धर्मयुद्ध है—हमें प्रत्येक मूल्य पर विजयी होना है। तैयारी कीजिए और रणभेरी बजा कर कार्य आरम्भ कर दीजिए।

सेवा के लिए सदा प्रस्तुत
वेदभिक्षु:
संयोजक
अ० भा० भारत रक्षा समिति, वेद मंदिर
नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

भारत की कलुषित राजनीति

—सत्यपाल शास्त्री

आज की भारतीय राजनीति में दो दूषित तत्त्व उभरकर सामने आये हैं—चरित्र-हीनता और चरित्रहनन। हमारे देश में ऐसे राजनैतिक नेताओं की बाढ़-सी आ गई है, जो पैसे के लिए कुछ भी कर सकते हैं। पैसे और कुर्सी का चोलीदामन का साथ है। भ्रष्टाचारी राजनैतिक नेता पैसे से कुर्सी हथियाते हैं और कुर्सी के बल पर पैसा हथियाते हैं। एक ओर यह चरित्रहीनता है, तो दूसरी ओर चरित्रहनन की बीमारी (कहना चाहिए महामारी) बढ़ती जा रही है। कुछ लोगों ने तो आरोप-प्रत्यारोप घड़ने के कारखाने ही खोल दिये हैं। चरित्रहनन की बीमारी भी चरित्रहीनता की बीमारी से कम खतरनाक नहीं। स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू कहा करते थे कि अन्धाधुन्ध निराधार और उत्तदायित्वहीन आरोप लगाने का एक दुष्परिणाम यह भी होता है कि आम लोग सोचने लगते हैं कि "जब सभी भ्रष्टाचारी हैं, तो हम कब तक ईमानदार बने बैठे रहें? हम भी क्यों न हाथ रंगें?" आज हालत यह हो रही है कि चोर चोरी करने के बाद भागता जाता है और साथ ही साथ चिल्लाता जाता है—"चोर-चोर, पकड़ो-पकड़ो।" पता ही नहीं चलता कि कौन सच्चा है, कौन झूठा है। कौन अच्छा है, कौन बुरा है।

जब शासन स्थिर नहीं होता और शासक दल का बहुमत निर्णायक और प्रचंड नहीं होता, तब विधायकों और संसद् सदस्यों की बन आती है। तब वे नीलाम पर चढ़ जाते हैं—जो ऊंची बोली दे, वह ले जाये। निर्णायक और प्रचंड बहुमत होने पर भी यदि शासक तानाशाही रवैया अपना ले, तो जनता विद्रोह के लिए विवश हो जाती है। अब तक अस्थिर सरकारों की महामारी राज्यों तक सीमित थी, लेकिन पिछले तीन महीने से केन्द्र भी इससे पीड़ित है। हम इस लेख में राजनैतिक घटनाओं पर निष्पक्ष दृष्टि डाल रहे हैं और कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनसे इस भयानक स्थिति का मुकाबला किया जा सकता है।

मार्च सन् १९७७ में जनता ने बड़ी आशाओं और उमगों के साथ जनता पार्टी को शासन सौंपा था, लेकिन ज्योंही अन्तिम चुनाव परिणाम की घोषणा हुई और पता चल गया कि सत्ता के सूत्र जनता पार्टी के ही हाथ में आयेंगे, पार्टी के बूढ़े नेताओं ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया। यह लड़ाई सिद्धान्तों की नहीं, पैसे और कुर्सी की थी। जिस बुरी तरह ये नेता आपस में लड़े, उसे देखकर अनायास मुंह से ये शब्द निकल पड़ते—"बड़े नाम, छोटे काम।" सत्ता प्राप्ति के प्रथम दिन ही जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ हुआ, उसे देखकर संस्कृत के शब्दों में कहा जा सकता है—"प्रथमग्रासे मक्षिकापातः। यह लड़ाई २४ मार्च को राजघाट पर शपथ लेने से पूर्व ही आरम्भ हो गई थी। इस की कहानी पी० एन० बालसुब्रह्मण्यम् (जिसका नाम हमारे पाठकों ने अवश्य सुना होगा) के शब्दों में सुनिए—"उस समय डेबरीवाल बन्धु श्री जगजीवनराम के समर्थन के लिए प्रत्येक संसद्सदस्य को दो लाख रुपये दे रहे थे। मुझे इसका पता चला। उस समय मेरे साथ श्री कल्याणम् थे, जो श्री जयप्रकाश नारायण की गिरफ्तारी तक (दो महीने के लिए) उनके सचिव थे। कल्याणम् पहले महात्मा गांधी, लार्ड माउंटबैटन और जवाहरलाल नेहरू के सचिव रह चुके थे। श्री मोरारजी देसाई उन्हें अपना सचिव बनाकर दिल्ली ले आये थे।

"मैंने और कल्याणम् ने कुछ ऐसे संसद्सदस्यों को जमा किया, जो डेबरीवाल बन्धुओं से रुपया पा चुके थे। हमने आधी रात के समय जाकर श्री जयप्रकाश नारायण और आचार्य कृपलानी को जगाया और सन्तोषजनक तौर पर सिद्ध कर दिया कि किस तरह पूंजीपति रुपये के बल पर जगजीवनराम को भारत का प्रधान मंत्री बना कर महान् क्रान्ति को विफल करना चाहते हैं। फलस्वरूप रात के दो बजे श्री जयप्रकाश नारायण और आचार्य कृपलानी इस परिणाम पर पहुंचे कि जनता संसदीय दल के नेता का चुनाव मतदान से नहीं, अपितु आमराय (कंसेंसस) से हो। मतदान से चुनाव होता, तो जगजीवन राम भारी बहुमत से जीतते। चूंकि आमराय की बात रही, इसलिए क्रांति के जनक श्री जयप्रकाश नारायण और आचार्य कृपलानी संसद्सदस्यों को थोड़ा-सा धोखे में डाल सके।

"मोरारजी भाई तैयार हुए, तो हम लोग सुबह चार बजे ही उनके पास पहुंच गये, उन्हें माला पहनाई, आरती आदि की। राजघाट जाते समय मोरारजी ने पहला काम यह किया कि अस्पताल में चरणसिंह से भेंट की और उनसे एक पत्र हासिल किया कि यदि जगजीवन राम प्रधानमंत्री चुने गये तो वह न मन्त्रिमंडल में शामिल होंगे और न जनता पार्टी में रहेंगे। दोपहर ग्यारह बजे घोषित कर दिया गया कि मोरारजी भारत के प्रधानमंत्री होंगे। मैंने मोरारजी को सुझाव दिया कि वह सांविधानिक प्रक्रिया के चक्कर में पड़कर सायंकाल चार बजे तक के लिए शपथ ग्रहण समारोह की प्रतीक्षा न करें, अपितु वर्तमान स्थिति को संकटकालीन स्थिति समझकर तुरन्त शपथ ग्रहण कर लें। किसी और के राष्ट्रपति भवन पहुंचने से पूर्व ही हम वहां पहुंच गये और मोरारजी को प्रधानमंत्री के पद की शपथ दिलवादी, ताकि मोरारजी का प्रधानमंत्री का पद निर्विवाद रूप से स्थापित हो जाये। इस संकट में मेरे इन सब कामों ने, जिन्हें मैंने अत्यधिक सूझबूझ से किया था, मुझे देसाई परिवार के अत्यन्त निकट पहुंचा दिया।"

आपने देखा कि किस तरह पैसे के बल पर संसद्सदस्यों का ईमान खरीदने की कोशिश की गई। आगे चलकर इसी बालसुब्रह्मण्यम् के आर्थिक अपराधों में कान्ति देसाई के सहयोगी होने का आरोप लगाकर मोरारजीभाई को अपदस्थ करने का अभियान प्रारम्भ हुआ, जो अन्ततः सफल हुआ।

मई १९७७ में जब आठ राज्य विधान सभाओं के चुनाव हुए, तब जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने उत्तर प्रदेश विधान सभा के उम्मीदवारों की सूची में से कुछ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाम काट दिये। इस पर चौधरी चरणसिंह इतने नाराज हुए कि उन्होंने अपने भारतीय लोक दल का चुनाव चिह्न (हलधर) जनता पार्टी को अलाट करने के लिए जो पत्र चुनाव कमीशन को लिखा था, वह वापस मंगवा लिया और शोर मचने पर वह पत्र वापस भेज दिया। इस हेराफेरी पर चौधरी चरणसिंह से त्यागपत्र की मांग की गई, लेकिन हमारे अधिकतर नेता त्यागपत्र देने की केवल धमकियां दे सकते हैं, त्यागपत्र नहीं दे सकते। (याद रहे कि इस बार भी चौधरी चरणसिंह ने जनता पार्टी से त्याग-पत्रों का सिलसिला शुरू होने के पूरे एक सप्ताह बाद १६ जुलाई को त्यागपत्र दिया, जबकि मोरारजीभाई १५ जुलाई को ही त्यागपत्र दे चुके थे।)

विधान सभाओं के चुनाव समाप्त होने पर जनता पार्टी के जनसंघ और भारतीय लोक दल घटकों ने मुख्यमंत्री के पद आपस में बांट लिये। लेकिन मन में मैल था। एक-दूसरे पर विश्वास न था। फलस्वरूप उठापटक शुरू हो गई। चौधरी चरणसिंह के विश्वस्त साथी राजनारायण ने चन्द्रशेखर को हटाने की मांग की। मामला तूल पकड़ गया और अन्ततः ३० जून १९७८ को चौधरी चरणसिंह और राज-नारायण मन्त्रिमंडल से निकाल दिये गये। प्रयत्न होने लगे कि दोनों को पुनः मन्त्रि-मंडल में लिया जाये। इस बीच चौधरी चरणसिंह ने निकृष्टतम मनोवृत्ति का परिचय दिया। कभी कोई अड़ंगा, कभी कोई अड़ंगा। अहंकार इतना कि चौधरी साहब ने फरमाया कि "देसाई मेरे कलम से प्रधानमंत्री बने हैं।" मन्त्रिपद के बिना चौधरी साहब की वही हालत हो गई, जो पानी से बाहर फेंके जाने पर मछली की होती है। चौधरी साहब ने एक बार उत्तर प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी से कहा भी था कि 'मन्त्रिपद के बिना मैं एक दिन भी नहीं रह सकता।' यद्यपि जनसंघी घटक के नेता चौधरी साहब की पिछली करतूतों से अच्छी तरह परिचित थे, तथापि पार्टी की एकता के लिए उन्होंने मोरारजीभाई पर इस बात के लिए दबाव डालना जारी रखा कि चौधरी साहब को दुबारा मन्त्रिमंडल में ले लिया जाये। सत्ता के लोभी चौधरी चरण सिंह नित नई शर्तें रखते—मुझे उपप्रधान मन्त्री बनाओ—यह अधिकार दो, वह अधिकार दो। झूठे दावे करने, जोड़-तोड़ करने और षड्यन्त्र रचने के मामले में भारत के बहुत कम राजनैतिक नेता चौधरी साहब का मुकाबला कर सकते हैं। अन्ततः २४ जनवरी १९७९ को चौधरी साहब पुनः मन्त्रिमंडल में ले लिये गये—उसी मन्त्रिमंडल में, जिससे वह यह कह कर निकले थे कि "लोगों का यह विचार बनता जा रहा है कि यह मन्त्रिमंडल नपुंसकों का टोला है।" आम लोगों ने समझा कि अब शान्ति हो जायेगी, लेकिन सांप और बिच्छू काट खाने का अपना स्वभाव कैसे छोड़ सकते हैं। अगले ही दिन चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री रामनरेश यादव को कहकर चार मन्त्रियों को निकलवा दिया। चौधरी चरणसिंह की उम्र इस समय ७७ वर्ष के लगभग है। आगे की तो भगवान् जाने, लेकिन इस व्यक्ति का अब तक का रिकार्ड यह है कि यह षड्यन्त्रों की बात सोचे बिना रह ही नहीं सकता। चौधरी साहब सत्ता में बने रहने के लिए और ऊंचे से ऊंचा पद पाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इनके समर्थकों में कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीगी, मुस्लिम मजलिस वाले, अकाली, अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम, सोशलिस्ट, कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी आदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शामिल हैं। अब आप स्वयं सोच-समझ लीजिए कि इस व्यक्ति का सिद्धान्त क्या है। सिद्धान्त एक ही है—जैसे भी हो, कुर्सी हो, हथियाओ। व्यक्तिगत स्वार्थों को चौधरी साहब सिद्धान्तवादिता का जामा पहनते हैं। सत्ता हथियाने के लिए चौधरी साहब ने देहाती और शहरी जनता में फूट के बीज बोये। उनके लिए सिद्धान्तवादिता अवसरवादिता का ही दूसरा नाम है। समझ में नहीं आता कि चौधरी साहब का दिमाग क्या ऊलजलूल बातें सोचता रहता है। आजकल वह मध्यवर्णी जातियों (यादव, कूर्मि, अहीर, जाट इत्यादि) के प्रतिनिधि बने बैठे हैं। मधुलिमये सदृश उनके साथी, जो अपने आपको सोशलिस्ट कहते हैं, यह कहकर जनता को बरगला रहे हैं कि उच्च जातियों के हाथ से छिनकर शासन मध्यवर्णी जातियों के पास तो आ ही गया है; यदि यह क्रम जारी रहा, तो हरिजनों के पास भी आ सकता है। हमारे पाठक स्वयं देखें कि दूसरों पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाने वाले स्वयं किस बुरी तरह जात-पात के कीचड़ में सने हुए हैं।

चौधरी साहब ने जो बजट पेश किया, उसके फलस्वरूप मध्यम वर्ग की कमर ही टूट गई है। मूल्य इतनी तेजी से बढ़ रहे हैं कि पारिवारिक बजट असन्तुलित हो गये हैं। चौधरी साहब ने फरवरी १९७९ में यह बजट पेश किया था। अपने तथाकथित ग्रामीण आधार को पक्का करने के लिए चौधरी साहब ने भारत की अर्थव्यवस्था से खिलवाड़ किया—ठीक उसी तरह जिस तरह लियाकतअली खां ने १९४७ में किया था, जब वह वित्त विभाग के इनचार्ज थे। अर्थव्यवस्था सदृश टैकनिकल मामले में भी चौधरी साहब अपनी गन्दी राजनीति को न भुला सके। फरवरी १९७९ से लेकर अब तक थोक मूल्यों में सत्रह दशमलव एक प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है। परचून मूल्य तो इससे भी अधिक बढ़े हैं। देश में २१ लाख टन अनाज का स्टाक है, लेकिन बढ़िया चावल साढ़े सात रुपये किलो मिल रहा है। (सम्भव है कि सूखे के कारण आगामी कुछ महीनों में इसका मूल्य १० रु० किलो तक पहुंच जाये।) चीनी के मूल्य में ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सब्जियों और वनस्पति घी के मूल्य में भी वृद्धि हुई है। मिट्टी का तेल मिलना कठिन हो रहा है और ईंधन के मूल्य में २५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बच्चों को स्कूली काम के लिए कापियां नहीं मिल रहीं। स्कूलों के लिए ८० लाख कापियों की आवश्यकता है, जबकि केवल सात लाख सुलभ हैं। मिट्टी के तेल और गैस की कमी व मंहगाई को देखते हुए कोयले का इस्तेमाल भी सम्भव नहीं, क्योंकि बिजली की की कमी के कारण कोयला खानों में पूरा काम नहीं हो रहा।

शासन चलाने के लिए योग्यता, अनुभव, दक्षता आदि अनेक गुणों की आवश्यता होती है। यह भी आवश्यक है कि जनता के हृदय में शासन के लिए आदर की भावना हो। बेईमानी और धोखेबाजी पर आधारित सरकार यह सम्मान अर्जित नहीं कर सकती।

इन दिनों हमारे मन्त्री जनता के दुःख-दर्द की ओर ध्यान देने की बजाय अपनी शक्ति तथाकथित साम्प्रदायिकता के विरुद्ध चीखने-चिल्लाने ही में नष्ट कर रहे हैं। जिसे देखो, वही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरुद्ध लट्ठ लिये फिरता है। वर्गवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। शायद ही कोई दल हो, जो अल्पसंख्यक, हरिजन आदि वर्ग-विशेष के लिए विशेष सुविधाओं की बात न करता हो। कितने आश्चर्य की बात है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीस वर्ष तक मन्त्री रहने के बाद भी बाबू जगजीवन राम हरिजन हैं। वह स्वयं कहते हैं कि "जगजीवन राम सारी उम्र चमार ही रहेगा।" चौहद वर्ष तक गुरुकुल में पढ़कर निकले स्नातक भी हरिजनों को मिलने वाली विशेष सुविधाओं की मांग करते हैं। वर्षों गुरुकुल में रहने के बाद भी क्या उनकी 'अस्पृश्यता' नहीं गई ? कहा जा रहा है कि राष्ट्रपति ने एक हरिजन को प्रधानमन्त्री बनने से रोका। यह ठीक है कि राष्ट्रपति को बाबू जगजीवन राम को मन्त्रिमंडल गठित करने का अवसर देना चाहिए था, लेकिन राष्ट्रपति ने जैसा अन्याय किया है, वैसा अन्याय किसी के भी साथ नहीं होना चाहिए—न हरिजन के साथ और न सवर्ण के साथ। यदि ऐसा अन्याय मोरारजीभाई के साथ होता (और मोरारजीभाई का तो कहना है कि उन के साथ हुआ) तो भी वह उतना ही निन्दनीय होता।

चौधरी चरणसिंह ने अपनी दुरभिसन्धियों से जो अस्थिरता पैदा की है, उसके दुष्परिणाम निकले हैं। मीनू मसानी का मत है कि इस कलुषित राजनीति के फलस्वरूप जो कुछ हुआ है, (यदि स्थिति यही रही तो) वह भविष्य में सामने आने वाले दुष्परिणामों के समक्ष फीका पड़ जायेगा। लेकिन आशा यही है कि ऐसा नहीं होगा। भारत की जनता समझदार है। वह चौधरी चरणसिंह और उनके साथियों के पापों को क्षमा नहीं करेगी। लक्षण ऐसे हैं कि आगामी चुनाव में चौधरी चरणसिंह और श्री चव्हाण के दलों का सफ़ाया हो जायेगा।

पिछले दिनों जो कुछ हुआ, उसमें सत्ता प्राप्ति को अन्तिम लक्ष्य मान लिया गया। निष्ठाओं का कोई मूल्य न रहा। मोरारजी देसाई को झुकाने के लिए चौधरी चरणसिंह ने ओछे हथकंडे अपनाये। अपने समर्थकों की विशाल रैली आयोजित की। क्या यह दलविरोधी कार्य न था ? जनसंघ को लेकर दोहरी सदस्यता का प्रश्न उठाया, लेकिन स्वयं किसान सम्मेलन की गतिविधियों में खुलकर भाग लेते रहे। तब उन्हें दोहरी सदस्यता की बात याद न आई। राजघाट पर "संगठित रहकर काम करने" की जो शपथ ली गई थी, उसे तोड़ा गया।

यह समझना कठिन हो रहा है कि चौधरी चरणसिंह और श्रीमती इन्दिरा गान्धी में से कौन अधिक झूठा है। दोनों के झूठ का कोई अन्त नहीं। श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने जनता पार्टी में फूट डालने के लिए चौधरी चरणसिंह को आश्वस्त किया कि इन्दिरा कांग्रेस का समर्थन चौधरी साहब को मिलेगा। इन्दिरा जी कहती रहीं कि हमने बिना किसी शर्त के चौधरी साहब का समर्थन किया है, लेकिन जब चौधरी साहब की सरकार ने "किस्सा कुर्सी का" केस वापस लेने से इन्कार कर दिया, तब यह समर्थन वापस ले लिया गया। इन्दिरा जी के दायें हाथ सी० एम० स्टीफ़न ने कहा कि हमने तो जनता पार्टी में फूट डालबे के लिए यह चाल चली थी।

मोरारजी देसाई अथवा उनके किसी समर्थक ने उच्च गान्धीवादी असूलों को भुलाकर वह गुप्त सरकारी पत्रव्यवहार प्रकाशित कर दिया, जिसमें चरणसिंह ने हेमवतीनन्दन बहुगुणा पर आरोप लगाया था कि वह के० जी० बी० के एजेंट हैं, उन्होंने उत्तर प्रदेश में आग लगा रखी है और वह मोदी से पैसा पाते हैं और जवाब में बहुगुणा ने लिखा था कि "चौधरी साहब के उच्चपदासीन रहते सुरक्षा अनुभव नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की जा सकती। इतना सब हो जाने के बावजूद चरणसिंह ने बहुगुणा को अपनी सरकार में वित्तमन्त्री बनाया और बहुगुणा ने यह पद स्वीकृत भी कर लिया।

चरणसिंह की काली करतूतों का कच्चा चिट्ठा तैयार किया जाये, तो टॉड राजस्थान जितनी मोटी पुस्तक तैयार हो सकती है। केवल एक उदाहरण और लीजिए। ३१ मई १९७९ को उन्होंने कहा कि "दल के नेता पद अथवा प्रधानमन्त्रि-पद के लिए मैं मोरारजी देसाई का प्रतिद्वन्द्वी नहीं और देसाई जब तक चाहें, तब तक प्रधान मन्त्री बने रहेंगे।" जब वह यह बात कह रहे थे, तब भी वह इन्दिराजी के सहयोग से मोरारजीभाई की राजनैतिक गर्दन काटने का षड्यन्त्र रच रहे थे—उन्हीं इन्दिराजी के सहयोग से, जिन पर न्यूरेम्बर्ग ढंग का मुक़दमा चलाने की बात उन्होंने कही थी। २० जुलाई १९७९ को इन्हीं चरणसिंह ने कहा कि "जनता सरकार की असफलताओं और कमियों का एकमात्र कारण यह है कि मोरारजी देसाई में देश के भविष्य के सम्बन्ध में दूरदृष्टि का अभाव है और उनमें सत्ता से चिपके रहने की अमर्यादित आकांक्षा है।"

अब ज़रा जॉज फ़र्नाडीस पर दृष्टि डालिए। वह भी अपने आप को सोशलिस्ट कहते हैं। मोरारजी मन्त्रिमंडल को तोड़ने में सहायक होने से केवल दो दिन पूर्व उन्होंने लोक सभा में मन्त्रिमंडल का समर्थन किया। फिर त्यागपत्र देने के बाद वह धमकियां देने लगे कि रेल कर्मचारी अनिश्चित काल के लिए हड़ताल कर देंगे। (याद रहे कि फ़र्नाडीस पर आरोप लग चुका है कि उन्होंने भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड और सीमन्स के सौदे में पैसा लिया।)

समर्थन के लिए सौदेबाज़ी हुई और बताया जाता है कि एक संसद् सदस्य का मूल्य छह लाख रुपये तक भी पड़ा। "इंडियन एक्सप्रेस" के प्रबन्ध सम्पादक अरुण शोरी ने लिखा कि "महीने भर में ही उन्होंने (चरणसिंह ने) और उनके साथियों ने भारतीय राजनीति को पतन के गहनतम गर्त में गिरा दिया—अनगढ़ अवसरवाद, झूठे नारे, छत्रपति चव्हाण के गिरोह का लालच और राष्ट्रीय हितों की पूर्ण उपेक्षा। आखिर इन नेताओं ने ऐसा कौन-सा काम छोड़ा है कि हम उन से घृणा न करें।" उन्होंने यह भी लिखा कि "घटिया दर्जे की हाई स्कूली अर्थनीति चालू करने के लिए गान्धी जी के नाम की दुहाई दी गई और अवसरवादी ढंग से जय-प्रकाश नारायण को इस्तेमाल किया गया।"

कुछ सुझाव

इस आपाधापी को रोकने के लिए हमारे पास कुछ सुझाव हैं, जिनसे स्थिति में सुधार की आशा है। हमारा पहला सुझाव यह है कि जिन नेताओं को सत्ता सुख भोगते २५-३० वर्ष हो गये हैं और भोगों ने जिन के शरीर को रोगी और जर्जर बना दिया है, उन्हें आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए अवकाश ग्रहण कर लेना चाहिए। जगजीवन राम और चरणसिंह सदृश नेता, जो छड़ी का सहारा लिये बिना चल भी नहीं सकते और जिनके चरित्र पर भी एक नहीं, अनेक दाग हैं, जितनी जल्दी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
राजनैतिक क्षेत्र से हट जायें, उतना ही अच्छा है। (याद रहे कि जगजीवन राम की उम्र ७१ वर्ष है और वह ३० वर्ष तक मन्त्री रह चुके हैं। उन्हें संसदीय जीवन बिताते तो ४३ वर्ष हो चुके हैं। चौधरी चरणसिह ७७ वर्ष के हैं और २५ वर्ष तक मन्त्री रह चुके है। उन्हें भी संसदीय जीवन बिताते ४३ वर्ष हो चुके हैं) इन नेताओं के आपसी रागद्वेष इतने बद्धमूल हो चुके हैं कि उनके लिए इस जाल से मुक्त होना कठिन है। इन्होंने देश का जो "कल्याण" करना था, कर लिया, अब युवकों को अवसर मिलना चाहिए।

हमारा दूसरा सुझाव यह है कि हरिजनों के लिए सीटों का सुरक्षण समाप्त किया जाये। पहलेपहल यह व्यवस्था केवल दस वर्ष के लिए की गई थी, लेकिन अब इसे लागू हुए ३० वर्ष बीत चुके हैं। इतने समय में तो एक पूरी पीढ़ी समाप्त हो जाती है।

तीसरा सुझाव यह है कि दल बदलने वालों के लिए सीट से त्यागपत्र देना अनिवार्य कर दिया जाये। मान लिया कि दल बदलने वालों में ऐसे भी होंगे, जो अपनी आत्मा की आवाज़ पर दल बदलते हैं, लेकिन मतदाताओं ने तो उन्हें दल-विशेष के उम्मीदवार के रूप में चुना था। इसलिए दल बदलने पर दुबारा मतदाताओं की राय ली जानी चाहिए।

चौथा सुझाव यह है कि जैसे चुनाव में धर्म की दुहाई देना अवैध है, वैसे ही साम्प्रदायिकता के आरोप-प्रत्यारोप लगाने पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिए। जब चुनाव में वोट मांगते समय धर्म की चर्चा ही नहीं की जा सकती, तब साम्प्रदायिकता के प्रश्न को (जो प्रश्न नहीं, अप्रश्न है—Issue नहीं, Non-issue है) उछालना अप्रासंगिक है। साम्प्रदायिक दंगों के लिए असामाजिक तत्त्व उत्तरदायी हैं। इन तत्त्वों का कोई दीन-ईमान नहीं होता। इन्दिरा गान्धी, चौधरी चरणसिंह, मधु लिमये, जॉर्ज फ़र्नांडीस, राजनारायण, बहुगुणा सदृश लोगों का क्या दीन-ईमान है, यह तो जनता देख ही रही है। इन लोगों का साम्प्रदायिकता विरोध स्वयं साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर चुका है।

आशा करनी चाहिए कि भारतीय राजनीति चुनाव की अग्निपरीक्षा में से कुन्दन बन कर निकलेगी और नये सिरे से मध्यावधि चुनाव की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। □

पंडिता राकेश रानी धर्म राज्य की स्थापना और समाजवाद के स्थान पर त्यागवाद—सांप्रदायिक तत्त्वों के तुष्टीकरण की नीति के विरुद्ध नई दिल्ली से लोकसभा के लिए चुनाव लड़ रही हैं।

आप क्या सहयोग देंगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत और प्रजातंत्र

आज से २६ वर्ष पूर्व, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की संविधान सामने भारत को सार्वभौम, सर्वप्रभुतासंपन्न जनतंत्र राज्य घोषित किया, जनतंत्र अर्थात् जनता का राज्य, जनता के लिए राज्य, जनता के प्रतिनिधियों द्वारा किया गया राज्य जनतंत्र जाना जाता है। परन्तु जिस जनतंत्र को संविधान ने मान्यता दी वह आज कहां है ? राज्य जनता के प्रतिनिधि कर रहे हैं परन्तु जनता के लिए कहां है ? आखिर जनतंत्र की जड़ों में कौन-सा घुन लग गया ? राजनीति एक खेल बन गया, राज्य सत्ता की दौड़ का शिकार हो गया और राजनीति शब्द में राज शब्द ही शेष रहा और नीति का नामोनिशान भी नहीं रहा। राजनीतिज्ञ राज्य प्राप्ति में लग गये और नीति से उनका दूर का भी संबंध नहीं रहा। सत्ता के भूखे ये भेड़िये जनता की सुरक्षा से खेल सकते हैं, देश के सम्मान को बेच सकते हैं, सांप्रदायिक दंगे करा सकते हैं परन्तु सत्ता का मोह नहीं छोड़ सकते। सत्ता से चिपके रहने के लिए ये दलबदल सकते हैं, सिद्धान्त, आदर्श और टोपी बदल सकते हैं। सत्ता के लगाव से ये कभी भाषा के, कभी जातिवाद के, कभी उत्तर दक्षिण के और कभी पिछड़े वर्ग तथा दलित वर्ग के नाम से देशवासियों को लड़ा सकते हैं। ये वे लोग हैं जो पार्टी के चन्दों के नाम पर अथाह धन बटोरते हैं और व्यापारियों को आवश्यक वस्तुओं के मूल्य बढ़ाने को विवश करते हैं, मंहगाई बढ़ाते हैं, काला बाजारी बढ़ाते हैं, वस्तुओं का 'कृत्रिम अभाव पैदा कराते हैं और रोटी कपड़ा मांगने वाले भूखे नंगे लोगों पर गोलियां चलवाते हैं। सत्याग्रही, हड़ताली लोगों की भीड़ में अपने गुंडों द्वारा देश की सम्पत्ति में आग लगवाते हैं, कालेजों और स्कूलों को बन्द करवाते हैं और कारखानों में तालाबन्दी करवाते हैं। मजदूरों एवं कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति जताकर नेतापद की वाहवाही लूटते हैं और हड़तालें करवाकर देश को प्रतिदिन करोड़ों रुपयों की हानि पहुंचाते हैं और साथ ही हजारों अस्थायी कर्मचारियों तथा उनके परिवारों के मुंह की रोटी छीन लेते हैं। ये महामहिम अनाथ, अपंग, अकालपीड़ित, बाढ़पीड़ित, दंगाग्रस्त लोगों की सहायतार्थ दिये जाने वाले कोष से अपने विदेशी अथवा—तथा भारतीय बैंकों में बैंक बैलेंस बढ़ा सकते है। कितना कहें और क्या कहें। अपने स्वार्थ के लिये इमर्जेंसी लादने वाले लोग सर्वश्रेष्ठ नेता माने जाते हैं। अल्पमत के प्रधानमंत्री कार्यवाहक सरकार चलाने तथा स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने के उत्तरदायी घोषित किये जाते हैं।

कोई भी शासक अपनी एवं अपने परिवार की सम्पत्ति की घोषणा नहीं करता परन्तु हर बार जनता इनके षड्यंत्रों की शिकार होकर इनको ही अपना प्रतिनिधि चुनती है। कोई इनसे यह नहीं पूछता कि महोदय एक-एक सदस्य के चुनाव में खर्च किये गये लाखों रुपयों की संपत्ति क्या आपकी पैतृकसंपत्ति थी या आपने खून पसीने की गाढ़ी कमाई से अर्जित की थी ? यह विशाल धनराशि आपने किस उदात्त भावना से या किसके हित में व्यय की है ? दानी महाशय आप इतने ही उदार हैं तो राष्ट्रीय कोष में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
इस सम्पत्ति को जमा कीजिये और सरकार उपयुक्त व्यक्तियों तक सहायता पहुंचा देगी। समाज सेवी संस्थाओं को दीजिये। आप क्यों इतना परिश्रम करते हैं? परन्तु यह राजनीति नहीं! नहीं! राजसत्ता तो व्यापार है जहां लाखों के करोड़ों बनाये जाते हैं। इस व्यापार के सहायक हैं मंत्रिपद, आयोगों के अध्यक्ष या सदस्यों के पद तथा सहकारी कर्मचारी। पुलिस के कामों में ये हस्तक्षेप करते हैं। इनकी पार्टी के कार्यकर्ता, इनके संबंधियों तथा इनके गुंडों पर गम्भीर अपराध के आरोप में भी पुलिस हाथ नहीं डाल सकती। इनकी कृपा दृष्टि के बिना लाइसेंस नहीं मिलते। इनकी भेंट पूजा के बिना परमिट नहीं मिलते। इनको दक्षिणा दिये बिना फाइलें आगे नहीं बढ़तीं। जनता के प्रतिनिधि यह सब कुछ कर रहे हैं परन्तु किसी में इतना साहस नहीं जो इनका विरोध कर सके, इनकी मनमानियों को रोक सके और पूछे कि सत्ता की यह दौड़ कहां जाकर रुकेगी और देश का क्या होगा? जनता को मध्यावधि चुनाव में घसीटकर राष्ट्रीय कोष के करोड़ों रुपयों का दुरुपयोग क्यों किया जा रहा है? दलबदलू लोग किस मुंह से जनता का विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं? भारतीय संसद् में अपने प्रतिनिधि भेजने वाली जनता उनको वापस नहीं बुला सकती? दलबदल पर राष्ट्रीय स्तर पर रोक क्यों नहीं लगाई जाती? प्रतिनिधि अपनी आय के स्रोत और सम्पत्ति की घोषणा क्यों नहीं करते? कौन देगा इन प्रश्नों के उत्तर?

बहुमत और जनतंत्र

भारतीय संसद् या विधानमण्डलों में जाने वाले प्रतिनिधि बहुमत के आधार पर शासन करते हैं परन्तु बहुमत किनका है जो गरीबी के स्तर से भी नीचे जी रहे हैं। जो पांच या दस रुपयों के लिए इन प्रतिनिधियों के हाथ अपने वोट के अधिकार को गिरवी रख देते हैं। बहुमत उनका है जो पेट की आवाज के सामने जनतंत्र की आवाज को अनसुनी कर देते हैं। बत्तीस वर्ष की आजादी भी जिनको रोटी, कपड़ा, आवास, शिक्षा और चिकित्सा की सुविधा नहीं दिला सकी—उनका ही बहुमत है। यह वर्ग तब तक नहीं जायेगा जब तक इनको दिशा देने वाले विचारक और समाजसेवी आगे नहीं आयेंगे। इनको इनकी शक्ति से परिचित नहीं करायेंगे। किन्तु वे विचारक कहां से आयेंगे? अधिकतर विचारकों ने अपने आपको सत्ता से जोड़ लिया है। उन विचारकों की भी कमी नहीं जो बंदियों और चारणों के रूप में शासकों की स्तुति करने में ही लीन हैं। शेष स्वतंत्र विचारक भारतीय जनतंत्र को पश्चिमी जनतंत्रीय दृष्टिकोण का जामा पहनाने में अग्रणी हैं। भारत की भूमि पर विदेशी गंधहीन पुष्पों से वे सुगंधि बटोरने की आशायें संजोये बैठे है। विदेशी विचारकों के अनुसार राजनीति, युद्ध और प्रेम में कुछ भी नाजायज नहीं होता किन्तु भारत में राज शब्द के साथ नीति शब्द जुड़ा है, जिसका अर्थ है निश्चित आदर्श, सिद्धान्त, विचार और जीवन पद्धति। संक्षेप में हम कह सकते है कि नीति के ही दूसरे नाम चरित्र, सदाचार एवं धर्म हैं। चरित्र, सदाचार एवं धर्म को तो जैसे आज अछूतों का-सा व्यवहार मिल रहा है। चरित्र और धर्म से आज यह राजनीति कोसों दूर है। विशेष रूप से धर्म शब्द तो इन्हें अपशब्द लगता है। इसीलिए सेक्युलर शब्द का अर्थ इन्होंने 'धर्मनिरपेक्ष' किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन्हें धर्म की अपेक्षा नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, ये धर्म की उपेक्षा करते हैं।

यथा राजा तथा प्रजा

धर्महीन शासकों का अनुकरण यदि जनता भी करे तो न्याय, व्यवस्था और शान्ति तथा समृद्धि की कामना करना मृगतृष्णा नहीं तो क्या है। शासकों की तरह अपने पद, सामर्थ्य, सुविधा एवं साधनों का दुरुपयोग अन्य लोग भी कर रहे हैं तो इसमें उनका क्या दोष ? पश्चिमी दर्शन के अनुसार भौतिक चकाचौंध में फंसा यह सुविधाजीवी भी फाइवस्टार होटल में जीवन एवं धर्म को जाम के साथ पी जाता है। राजा के तथा प्रजा के तप, त्याग और कर्तव्यपरायणता को पिछड़े लोगों की भूल मान कर उसकी चर्चा करने में अपना अपमान समझता है। बड़ों का आदर, पितृ सेवा सामाजिक दायित्व एवं राष्ट्र प्रेम को वह ढकोसला मानता है। दीन दुखी एवं दरिद्र जनता जनार्दन को वह अपनी सुख सुविधा का साधन मानता है। गरीब भूखा ही रह जाता है। बहुमत भूख से ऐंठती अंतड़ियों को दबाता है और इसे अपना दुर्भाग्य मानकर अपने द्वारा बनाये गये इन महाप्रभुओं की चरण सेवा में स्वयं को समर्पित कर देता हैं। यह वर्ग स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व दुखी था और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उसका दुख और बढ़ गया। शासक प्रसन्न है और उसका निर्माता उदास। कारण केवल एक ही है दूसरा नहीं—धर्म का अभाव।

धर्म का अर्थ

अनेक वस्तुओं की तरह सुविधाप्राप्त वर्ग ने धर्म की व्याख्या को अपनी स्वार्थसिद्धि के अनुरूप ढालने में सफलता प्राप्त कर ली। इस वर्ग ने धर्म का अर्थ वह बताया जिसे सम्प्रदाय, मत-मतान्तर कहा जाना चाहिये था। किन्तु शासक ने भिन्न-भिन्न पूजा पद्धतियों को धर्म नाम दिया। वह भूल गया कि पिता अपने पुत्र का पालन करता है तो उसे पितृधर्म कहा जाता है। पिता की आज्ञा मानकर पुत्र अपने धर्म का पालन करता है। सैनिक देश की रक्षा हेतु प्राणों का बलिदान करके अपने धर्म का ही पालन करता है। पतिव्रत धर्म, राजधर्म आदि शब्दों में किस पूजा पद्धति का वर्णन किया गया है ? इसका अर्थ है कि धर्म पूजा पद्धति नहीं अपितु कर्तव्य का ही दूसरा नाम है। अपना कर्तव्य एवं धर्म ही चरित्र और आचरण है। किन्तु कर्तव्य तो उत्तरदायित्व देता है। कर्तव्य संयम सिखाता है, कर्तव्य तो निष्ठा एवं लगन से परिश्रम करना सिखाता है, तो भला इस पचड़े में कौन पड़े ? शासक को कर्तव्य का कर्कश उपदेश नहीं, अधिकारों का मधुर स्वर चाहिये। चार्वाक दर्शन जो कहता था 'जब तक जियो उधार लेकर भी पियो' वह उधार लेकर आखिर घी पीने को मान्यता देता था परन्तु ये तो उस से भी आगे बढ़कर उधार लेकर शराब पीने लगे। पूजा पद्धति को यहाँ किसी ने धर्म नहीं बताया।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥मनु॥

धीरज रखना, सहनशीलता, संयम, चोरी न करना, पवित्रता, इंद्रियों पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काबू, विवेक बुद्धि, ज्ञान, सत्य, क्रोध न करना ये धर्म के दस लक्षण हैं। किस पूजा-पद्धति का वर्णन है इस धर्म में, इन लक्षणों के बिना जब अच्छे मनुष्य की भी कल्पना नहीं की जा सकती तो भला अच्छे शासक का धर्महीन होना तो भारत में सहन नहीं किया जा सकता। भारत देश जहां सदा धर्माचरण और चरित्र को धन से अधिक महत्त्व दिया जाता था वहां का शासक पश्चिमी सभ्यता से भी गया बीता क्यों हो गया ?

तुलना

पश्चिमी सभ्यता के लोग काम के प्रति समर्पित होते हैं और हमारे शासकों को उद्‌घाटन एवं समापन समारोहों से अवकाश नहीं मिलता। वे समय पालन को धर्म मानते हैं और हमारे नेता यदि समय पर कहीं उपस्थित हों तो नेता कैसे ? वहाँ प्रोफ्यूमो कांड से अशांति छा जाती है। परन्तु हमारे कानों पर सुरेश सुषमा कांड से जूँ तक नहीं रेंगती। निक्सन साहब वाटर गेट कांड के कारण राजनीति से संन्यास ले गये पर यहाँ किस्सा कुर्सी का और मारुति कांड के बाद भी शेर बने हुए नेता छाती ठोक रहे हैं। संभवतः तुलना करने पर स्वयं को कमजोर अनुभव किया और राज्य को धर्मनिरपेक्ष मान लिया।

चेतावनी

सही अर्थों में कहा जाय तो सभ्य लोगों का शासन तो धर्मनिरपेक्ष हो ही नहीं सकता। धर्मनिरपेक्ष शासन तो असभ्य एवं बर्बर जातियों का ही हो सकता है। इसलिए शासन के साथ जुड़ा धर्मनिरपेक्ष शब्द हटाया जाय और अधार्मिक अर्थात् चरित्रहीन शासकों को उठाकर फेंक दिया जाये।

राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में सभी धर्मप्रेमी विचारकों, बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों तथा साधु-संतों का धर्म है कि भोली, दरिद्र जनशक्ति को कर्तव्य के प्रति जागरूक करें और राष्ट्र को चरित्रहीनता की स्थिति से उबार कर धर्मसापेक्ष राज्य की स्थापना का अपना कर्तव्य पूर्ण करें।

आवश्यक सूचना

दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र को जनवरी १९८० तक के लिए स्वीकृत कर लिया गया है। तब तक महात्मा वेदभिक्षुः जी कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहेंगे।

दीपमाला के दिन

घर में दीप जलाएं, पर यह न भूलें कि देश पर विदेशी पादरियों ने आक्रमण कर रखा है। राष्ट्र को बचाने के लिए कृतसंकल्प होकर विदेशी पादरियों के षड्यन्त्र विफल करने का व्रत लें।

अपने-अपने स्थान पर भारत रक्षा समिति स्थापित करें और घोषणा करें कि हम सत्य धर्म की पताका झुकने नहीं देंगे।

संयोजक

अ० भा० भारत रक्षा समिति दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi